Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री विद्याभवन आयुर्वेद ग्रन्थमाला ५६

२०५

वानस्पतिक अनुसन्धान दर्शिका

१९६६–१९६८

डा० कृष्णचन्द्र चुनेकर

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काय-चिकित्सा

डा० गंगासहाय पाण्डेय

इस ग्रन्थ में पाश्चात्त्य तथा आयुर्वेदीय निदान एवं चिकित्सा के आधार पर सैद्धान्तिक स्पष्टीकरण तथा उनका क्रियात्मक स्वरूप (Practical view) विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है। नवीन अद्यतन ओषधियों की उपयोगिता तथा निषेध एवं प्राचीन वैद्यक की प्रमुख विशेषता—पंचकर्म चिकित्सा का शास्त्रसम्मत एवं व्यावहारिक स्वरूप—आदि सभी विषयों का पूर्ण समावेश है। व्याधियों की चिकित्सा करते समय पग-पग पर आने वाली कठिनाइयों का निराकरण तथा व्याधियों की समस्त अवस्थाओं की चिकित्सा का विस्तृत निर्देश इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है। लगभग ३०० से भी अधिक अनुभूत योग (Prescriptions) तथा समस्त औपसर्गिक व्याधियों का विस्तृत चिकित्सा-क्रम इसमें संगृहीत है। इस ग्रन्थ की शैली और कौशल में उभयविध अध्ययन-अध्यापन और चिकित्सा का अनुभव निहित है। २५-००

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्वर्गीय-पद्मभूषण वैद्यरत्न पं. शिवशर्माजी के
पुण्यस्मरणार्थ उपहारस्वरूप प्राप्त

To,

Vaidyaratna
Pt. Shiva Sharma
Bombay

With best Compliments

K. C. Chunekar
26/11/69

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन आयुर्वेद ग्रन्थमाला

५६

वानस्पतिक अनुसन्धान दर्शिका

१९६६–१९६८

सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य

डा० कृष्णचन्द्र चुनेकर ए. एम. एस.

प्राध्यापक : द्रव्यगुण विभाग, स्नातकोत्तर आयुर्वेदीय संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

भूमिका लेखक

आचार्य प्रियव्रत शर्मा

एम. ए. (द्वय), ए. एम. एस., साहित्याचार्य

अध्यक्ष : द्रव्यगुण विभाग एवं निदेशक : स्नातकोत्तर आयुर्वेदीय
संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० संवत् २०२६

मूल्य : १०-००

© चौखम्बा विद्याभवन

चौक, पो० बा० ६९, वाराणसी-१

फोन : ३०७६

प्रधान कार्यालय :

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

गोपाल मन्दिर लेन,

पा० आ० चौखम्बा, पोस्ट बाक्स ८, वाराणसी-१

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

THE

VIDYABHAWAN AYURVEDA GRANTHAMALA

56

VĀNASPATIKA ANUSANDHĀNA DARŚIKĀ

(Abstracts of research papers on Indian Medicinal Plants covering the fields of Botany, Pharmacognosy, Phytochemistry, Pharmacology and Clinical trials, published during 1966–1968)

Edited By

Ayurvedāchārya

DR. K. C. CHUNEKAR, A. M. S.

Lecturer, Department of Dravyaguna, Postgraduate Institute of Indian Medicine, B. H. U., Varanasi.

With a Foreword

By

ĀCHĀRYA PRIYAVRATA SHARMĀ

M. A. (Double), A. M. S., Sāhityāchārya

Head of the Department of Dravyaguna and Director, Postgraduate Institute of Indian Medicine, Banaras Hindu University.

THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI-1

1969

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

© The Chowkhamba Vidyabhawan
Post Box No. 69
Chowk, Varanasi-1 (India)
1969
Phone : 3076

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. RR I, P2..N69
Book No......
Acc No..... 002988

First Edition
1969
Price Rs. 10-00

Also can be had of
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
Publishers & Oriental Book-Sellers
P. O. Chowkhamba, Post Box 8, Varanasi-1 (India)
Phone : 3145

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, त्यागतपोमूर्ति, अर्वाचीन चरक, प्राच्य
पाश्च्यात्त्य चिकित्सा पद्धति के सिद्धहस्त चिकित्सक,
पीयूषपाणि, रोगविज्ञान के लब्ध कीर्ति प्राध्यापक,
काशी के गौरव, ए. एम. एस. कुलभूषण,
पूज्यपाद डा. गंगासहाय पांडेयजी भूतपूर्व
प्राध्यापक : आयुर्वेद विभाग, चिकित्सा
विज्ञान महाविद्यालय तथा चिकित्सक :
सर सुन्दरलाल आतुरालय, का.
हि. वि. वि. के कर
कमलों में सादर समर्पित।

गुरुवर्य,

जो कुछ भी आज मुझसे बन पड़ा है वह आप ही के मार्गदर्शन एवं कृपा का परिणाम है। मन के भावों को अभिव्यक्त करना मेरे शब्दसामर्थ्य के बाहर है। इसका मुझे अत्यंत संतोष है कि एक अल्प सी वस्तु आपको भेंट कर वर्षों की अभिलाषा पूर्ण कर सका हूँ।

आपका
कृपाभिलाषी
कृष्णचन्द्र चुनेकर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भूमिका

वनस्पति मानव के चिर सहचर हैं और वे मनुष्य के सुख दुःख में सर्वदा साथ देते आये हैं। भोजन के रूप में कन्दमूल-फल का प्रयोग तो होता ही था वस्त्र भी इन्हीं के वल्कल एवं सूत्रों से प्राप्त होता था। कार्पास एवं क्षौम वस्त्र सामान्यतः प्रयुक्त होते थे; महीन वस्त्र के रूप में भूर्जत्वक् (भोजपत्र वृक्ष की छाल) का व्यवहार होता था जो आजकल के मलमल या महीन रेशमी वस्त्रों का मुकाबला करता था। इसके अतिरिक्त, शय्या, आसन, पात्र, कृषि-उपकरण, रथ आदि इन्हीं से बनते थे। लेखन-कार्य में स्याही एवं कागज के रूप में वनस्पतियों का ही उपयोग होता था। यज्ञों में यूप एवं समिधा के रूप में विभिन्न वृक्षों के काष्ठ का व्यवहार होता था। दन्तधावन के लिए वृक्षों की कोमल-पतली टहनियाँ ली जाती थीं तथा तिलक, अनुलेपन, उद्वर्तन, स्नानीय चूर्ण, तैल आदि में सुगन्धित ओषधियों का प्रयोग होता था। विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर विभिन्न वृक्षों के स्तम्भ लगाये जाते थे और पल्लवों का बन्दनवार बनता था। मादक पेय के रूप में सोम प्रचलित था। सारांश यह कि मनुष्य का जीवन वनस्पति-मय था और वह वनस्पतियों में अपना ही रूप देखता था। जब कोई सुकुमार कृशांगी लतिका किसी सारवान वृक्ष की शाखाओं से लिपटी होती थी तो उसमें वह प्रेमी की भुजाओं में आलिंगनबद्ध किसी प्रेमिका को देखता था। ऋषि-मुनि आश्रम एवं वन के वृक्षों को बच्चों के रूप में देखते थे। प्रियंगु जब अपने समस्त यौवन एवं सौरभ के साथ प्रफुल्लित होती थी तो वह किसी श्यामा से कम नहीं लगती थी और उधर सहकार जब मञ्जरियों से पिञ्जरित स्वर्ण मुकुट धारण करता तो वह किसी राजपुत्र नायक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सा लगता। इस प्रकार मानव अपनी भावनाओं एवं आकांक्षाओं को वनस्पतियों में आरोपित कर तादात्म्य एवं सुख का अनुभव करता रहा।

दैनन्दिन आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सौन्दर्य भावना के आलम्बन के अतिरिक्त मानव के विपत्तिकाल में भी वनस्पतियों ने साथ नहीं छोड़ा। जिस प्रकार सुख के समय मनुष्य उनका उपयोग करता था उसी प्रकार दुःख के समय भी उनका प्रयोग करने लगा। वैदिक काल में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि पशु-पक्षियों के माध्यम से वनस्पतियों के गुणकर्म का अनुमान किया जाता था। इसी कारण अनेक ओषधियों के नाम भी पशु-पक्षियों के आधार पर रक्खे गये यथा वाराही, नाकुली, सर्पगन्धा, मृगादनी आदि। यज्ञकाल में जब अश्व, अजा आदि पशु रुग्ण हो जाते थे तो उनकी चिकित्सा की जाती थी क्योंकि रुग्ण पशुओं का याग में प्रयोग निषिद्ध है। आथर्वणिक उपचार में अधिकांश मणियों का प्रयोग होता था जिसमें वनस्पतियों के मूल मणिबन्ध में बाँधे जाते थे (सम्भवतः इसी आधार पर 'मणिबन्ध' संज्ञा है)। वनस्पतियों के रूप-रंग, आकृति से भी उनके गुणकर्म का अनुमान किया जाता था यथा अशोक का प्रयोग प्रदर में, हरिद्रा का कामला आदि पैत्तिक रोगों में, मरोड़फली का उदरशूल में इत्यादि। एक कर्म करनेवाले ऐसे अनेक द्रव्यों का एक वर्ग बनाया गया और वर्गीकरण की पद्धति प्रचलित हुई। कालक्रम से प्रयोग का क्षेत्र जैसे-जैसे बढ़ता गया मनुष्य के ज्ञान की परिधि में ये द्रव्य समाविष्ट होते गये। इसी कारण हम देखते हैं कि वैदिककाल से अब तक द्रव्यों की संख्या क्रमशः बढ़ती गई, आधुनिक काल तक जो नये द्रव्य परम्परा में उपयोगी सिद्ध हुए उनका शास्त्र में समावेश कर लिया गया। वस्तुतः द्रव्यविज्ञान की प्रयोगशाला लोक-परम्परा ही रही है और परम्परा-गृहीत द्रव्य समकालीन ग्रन्थकारों द्वारा अपनी रचनाओं में समाविष्ट कर लिये गये। परम्परा के अनादि स्रोत से ही भारतीय ओषधि-शास्त्र पल्लवित-पुष्पित होता रहा है।

आधुनिक काल में जब पुर्तगाली, फ्रांसीसी और डच निवासियों ने इस

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

देश में पदार्पण किया तो भारत भूमि की अपार वन-सम्पदा को देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये तथा कुतूहल एवं जिज्ञासा की शांति के लिए उन्होंने यहाँ की वनस्पतियों का अध्ययन प्रारम्भ किया। बाद में अंग्रेजों ने भी इनका पदानुसरण किया। इस प्रकार वानस्पतिक अध्ययन अग्रसर हुआ और परिणाम स्वरूप इस विषय में उपलब्ध वाङ्मय अतीव समृद्ध है तथा अभी भी इस दिशा में कार्य आगे बढ़ रहा है।

जिस प्रकार भारतीय वनस्पतियों के नामरूपात्मक अध्ययन की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट हुआ उसी प्रकार उनके गुणकर्मात्मक पक्ष पर भी अनुसंधान होने लगे। इस दिशा में अनेक देशी-विदेशी वैज्ञानिकों ने बहुमूल्य कार्य किया है जिसके फलस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण ओषधियाँ प्रकाश में आईं और सारा विश्व उनसे लाभान्वित हो रहा है। स्वतन्त्रता के बाद इस कार्य में अपूर्व वेग आया और अनेकानेक वनस्पतियों के गुणकर्मों का परीक्षण देश के चिकित्सा-महाविद्यालयों एवं अनुसन्धान संस्थाओं में होने लगा जिसके परिणाम स्वरूप अत्यधिक परिमाण में वैज्ञानिक सामग्री एकत्रित हो गई जिसका आकलन क्रमशः कठिन एवं समयसापेक्ष होने लगा। अतः अनुसंधानकर्त्ताओं की सुविधा के लिए इन कार्यों की सारग्राहिणी विवरणिकाओं की माँग होने लगी। इस प्रकार का एक प्रकाशन कर्नल रामनाथ चोपड़ा के प्रयास से हो चुका है जिसका उपयोग बहुशः होता है।

अनुसंधानकर्ताओं के लिए यह अत्यन्त आवश्यक अपितु अनिवार्य है कि वे उस विषय पर पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा किये यावत् कार्यों की जानकारी प्राप्त करें जिससे उन्हें अपनी सीमा, दिशा एवं कार्यक्षेत्र का नियोजन करने में सुविधा हो। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर आयुर्वेदीय संस्थान स्थापित होने पर यहाँ के अनुसंधान-कर्ताओं की सुविधा के लिए मेरी प्रबल इच्छा थी कि इस प्रकार का कार्य अपने विभाग से हो। बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि हमारे संस्थान के द्रव्यगुण विभाग के अध्यापक डा० कृष्णचन्द्र चुनेकर ने इस

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कार्य को अत्यल्प समय में सम्पन्न कर लिया तथा उसे 'वानस्पतिक अनुसंधान दर्शिका' के रूप में वैज्ञानिकों के समक्ष उपस्थित भी कर दिया। उनके इस परमोपयोगी कार्य के लिये मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इसी प्रकार वह वाङ्मय की अभिवृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान करते रहेंगे।

प्रियव्रत शर्मा

अध्यक्ष, द्रव्यगुण विभाग
एवं
निदेशक, स्नातकोत्तर आयुर्वेदीय संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

वाराणसी
४ अगस्त, १९६९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रस्तावना

भारत की वन-संपदा अत्यन्त वैभवशालिनी है। भिन्न भौगोलिक परिस्थिति के कारण भारत में हजारों प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं जिनका उपयोग अनेक क्षेत्रों में अनादि काल से किया जा रहा है। प्राचीन आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में इन्ही वनस्पतियों की प्रधानता रही और अभी भी चिकित्सा के लिए इनका व्यापक उपयोग किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू चिकित्सा के रूप में इनका प्रचलन है। काल के अनुसार इनके गुण धर्मों के परीक्षण की आवश्यकता महसूस होने लगी एवं स्वतंत्रता के पश्चात् इनके अनुसंधान में उत्तरोत्तर प्रगति होती गई। आज इतनी तीव्र गति से भारतीय वनस्पतियों पर अनुसंधान हो रहा है कि प्रत्येक के लिए उनकी जानकारी रखना कठिन हो रहा है। इसी दृष्टि से उन अनुसंधानों के परिणामों के सारांशों को एकत्र करने का प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है। अंग्रेजी भाषा में सर रामनाथ चोपड़ा जी द्वारा सन् १९५६ में इस प्रकार का सुप्रसिद्ध कार्य हो चुका है और हाल ही में सन् १९६४ तक के अनुसंधानों का नवीन पूरक संग्रह प्रकाशित हुआ है। हिन्दी में इस प्रकार का प्रकाशन कदाचित् कोई हो और इसीलिए सन् १९६६ से १९६८ के अन्त तक प्रकाशित अनुसंधानों के सारांशों को राष्ट्रभाषा में लिखने का प्रयास किया गया है।

द्रव्यों के परिचय (Pharmacognosy), रासायनिक स्वरूप (Chemical constitution), प्राणियों पर प्रभाव (Pharmacology) एवं चिकित्सा (Clinical trials) में उपयोगिता की दृष्टि से प्रकाशित किये गए ७६७ अनुसंधान पत्रों का सारांश इसमें है। लगभग ४५० वनस्पतियों का विवरण

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उनके वैज्ञानिक नामों के वर्णानुक्रम से लिखा गया है। प्रत्येक वनस्पति के सारांश के पश्चात् अनुसंधानकर्ताओं का नाम, पत्रिका का नाम, एवं प्रकाशन की तारीख आदि का विवरण दिया गया है जिससे विस्तार से अध्ययन की आवश्यकता पड़ने पर मूल शोध-पत्र को देखा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शब्दों को अंग्रेजी में ही लिखा गया है। आवश्यक स्थानों पर पारिभाषिक शब्दों के साथ अंग्रेजी शब्द भी लिखे गए हैं। अधिकांश मूल शोध-पत्रों में पौधों के वैज्ञानिक नाम के साथ भारतीय नाम न होने के कारण लेखक ने अपनी तरफ से यथा संभव उन नामों को जोड़ा है तथा उनकी एक वर्णानुक्रम सूची भी अन्त में दी है। कुछ पत्रिकाएँ विलम्ब से प्राप्त होने के कारण उनमें के शोध-पत्रों का सार परिशिष्ट १ में दिया गया है। कुछ शोध-पत्र ऐसे भी हैं जिनमें एक ही पत्र में अनेक वनस्पतियों पर प्रारम्भिक अध्ययन किया गया है। इस प्रकार के तथा कुछ अन्य विशिष्ट शोध-पत्रों का विवरण परिशिष्ट २ में दिया गया है। कुछ पत्रिकाओं के कुछ अंक न मिलने के कारण उनमें के शोध-पत्रों का विवरण नहीं दिया जा सका जिसके लिए उन वैज्ञानिकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। आगे के संस्करणों में यथा संभव उनका संकलन करने का प्रयत्न किया जायेगा। परिशिष्ट ३ में इन सारांशों को गुणकर्मादि के आधार पर वर्गीकृत किया गया है जिससे पाठकों को आवश्यक सारांश खोजने में सुविधा हो।

वैसे तो लेखक अपने अध्यापन कार्य के सिलसिले में नवीनतम अनुसंधानों की जानकारी का संग्रह करता रहा है, किन्तु इस प्रकार के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय हमारे विभागाध्यक्ष प्रोफेसर प्रियव्रत शर्माजी को है, क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा का यह परिणाम है। इस पुस्तक की भूमिका लिखकर उन्होंने इसके महत्व को बढ़ा दिया है उसके लिये मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ और मुझे इस बात का गौरव है कि उनकी प्रेरणाओं तथा कल्पनाओं को साकार करने का प्रयत्न कुछ हद तक मैं कर सका हूँ। स्नातकोत्तर आयुर्वेदीय संस्थान के उन सभी अध्यापकों का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य सुझावों को देकर इसको सुशोभित करने में सहायता की है।

चौखम्बा परिवार के सदस्यों का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ क्योंकि उन्होंने इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर पूर्ण किया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय तथा विभागीय पुस्तकालयों के अध्यक्षों एवं समस्त कर्मचारियों का भी आभारी हूँ जिनकी सहायता के बिना यह कार्य संभव ही नहीं था।

सीमित साधनों में कार्य किये जाने के कारण इसमें अनेक त्रुटियाँ रह सकती हैं जिसके लिये विद्वानों से प्रार्थना है कि वे उनके लिये क्षमा करते हुए आगे के लिये अपने अमूल्य सुझाव देकर कृतार्थ करेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक चिकित्सकों, वनस्पतिवेत्ताओं, रसायनवेत्ताओं तथा भारतीय वनस्पतियों पर अनुसन्धान करने वाले विद्वानों के लिये समान रूप से उपयोगी होगी।

दिनांक, १५ अगस्त, १९६९

कृष्णचन्द्र चुनेकर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विषय-सूची

शोध-पत्रों के सारांश	१–१६३
परिशिष्ट १—शोध-पत्रों के पूरक सारांश	१६४–१६६
परिशिष्ट २—कुछ अन्य महत्वपूर्ण लेख	१७०–१७४
परिशिष्ट ३—गुणकर्मादि के अनुसार वर्गीकृत सारांश	१७५–१७६
सन्दर्भ पत्रिकाओं की उनके संकेतों सहित सूची	१८०–१८२
संकेत	१८२
वर्णानुक्रम से द्रव्यों के भारतीय नाम	१८३–१६२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वानस्पतिक अनुसन्धान दर्शिका

१९६६--६८

1. Abroma augusta Linn. हिंदी-उलटकंबल

१. इसके काण्ड के क्वाथ में गर्भाशय के लिये बलदायक (uterotonic) क्रिया पाई गई किन्तु कुत्ते के परीक्षण में यह नहीं पाई गई।

एम. बी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एस. मिश्रा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५९-६० ।

२. प्रारम्भिक गर्भावस्था पर प्रभाव के अध्ययन के लिये इसके मूल के विभिन्न सत्वों का अध्ययन चूहों पर किया गया। इनका कोई विशेष गर्भ-निरोधक प्रभाव नहीं देखा गया। देखें–४७८।

2. Abrus precatorius Linn. सं०-गुंजा

३. इसके बीजों का इथेनोल द्वारा निकाला सत्व स्टेफिलाकोकस, तथा प्रवाहिका उत्पादक जीवाणु एवं कुछ कवकों की वृद्धि रोकता है। इसके रंजक पदार्थ केवल स्टेफिलोकोकस की वृद्धि रोकते हैं जब की ईथरीय अंश अनेक प्रकार के जीवाणुओं की वृद्धि को रोकता है। वर्णलेखन (chromatography) द्वारा विश्लेषण से इसमें गॅलिक एसिड तथा दो फनोलीय अंश पाये गये हैं।

डी. वी. देसाई एवं एम. सिरसी, इंडि. जर. फार्मे., २८, ६, १९६६, १६४-१६५ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४. इसमें विषैला तत्व प्रोटीन के जाति का है। चूँकि इसे गर्भपातक माना जाता है इसलिये इसका प्राणियों के गर्भाशय, गर्भ तथा अपरा आदि पर प्रभाव देखा गया। इससे गुण सूत्रों के विभजन तथा शुक्राणु में दुष्परिणाम होते हैं। इसका जीवाणु रोधक तथा गुणकर्मात्मक अध्ययन भी किया गया है।

ह्वी. बी. देसाई एवं एम. शिरसी, सार १८ हवी इंडि. फार्मा. काँग्रे., १९६६, इंडि. जर. फार्मे., २८, १२, १९६६, ३४१।

५. इसके बीजों से दो स्टेरायड अंश (Steroidal fractions), एक तैलीय तथा दुसरा रवेदार, प्राप्त किये गये जिनमें से तैलीय अंश में, मुख द्वारा प्रयोग करने से चूहों में स्पष्ट प्रजनन रोधी (antifertility) क्रिया पाई गई।

आर. वी. देसाई एवं ई. एन. रूपवाला, इंडि. जर. फार्मेंसी., २९, ८, १९६७, २३५-२३७।

६. इसमें का रक्त को जमानेवाला तत्व (haemagglutinating principle) एक प्रोटीन है जो बीजदल (cotyledons) में रहता है तथा यह १००° श० पर आधा घंटा गरम करने से नष्ट होता है। यह प्रोटीन संभवतः β-globulin है।

डी. एस. मिश्रा, बी. के. सोनी एवं डी. शर्मा, इंडि. जर. एक्स्पे. बायो., ६, २, १९६८, १०८-१०९।

७. चूहों में कृत्रिम रूप से उत्पन्न अर्बुदों पर इसके बीजों के जलविलेय प्रोटीन अंश का अध्ययन किया गया जिसमें उत्साह वर्धक परिणाम देखे गये। इसका अर्बुद कोशाओं पर प्रत्यक्ष हानिकर प्रभाव पड़ता है।

वी. वी. एस. रेड्डी एवं एम. सिरसी, सार, २० वी इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेंसी, ३०, १२, १९६८, २८८।

3. Acacia catechu Willd. सं०-खदिर

८. कुष्ठ रोगियों में खदिर द्वारा चिकित्सा के परिणामों का विवेचन है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लाक्षणिक लाभ पर्याप्त होता है। जीवाणुओं की दृष्टि से विशेष लाभ नहीं देखा गया।

दि. ओझा, ९ वां अन्तर्राष्ट्रीय कुष्ठ सम्मेलन, लंडन, १६–२१ सितम्बर १९६८।

4. Acacia pennata (L.) Willd. **सं०-अरि; हिंदी-अरार**

९. इसकी छाल के रासायनिक पृथक्करण से lupeol एवं α spinasterol प्राप्त किये गये।

पी. सेन गुप्त एवं अ. कु. चक्रवर्ती, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४३, ३, १९६६, १९१-१९३।

5. Acalypha indica Linn. **सं०-कुप्पी, मुक्तवर्चा; हिंदी-आमाभाजी**

१०. इसके पंचांग का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

जे. मुखर्जी, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४४, ९, १९६७, ७९२।

6. Achillea millefolium Linn. **हिंदी-रोजमरी, बिरंजसिफ**

११. इसके पुष्प गुच्छों से एक सत्व achillin पृथक् किया गया है, जिसका विवेचन है।

स्टेनिस्लॉस् जे. स्मोलेंस्की, चार्ल्स एल. बेल एवं लडविग बावर, लायडिया, ३०, २, १९६७, १४४–१४९।

7. Achyranthcs aspera Linn. **सं०-अपामार्ग**

१२. इसके पंचांग का क्वाथ महाकुष्ठ की प्रतिक्रिया में लाभदायक है। आधुनिक औषधि सल्फोन के साथ इसका यदि प्रयोग करे तो प्रतिक्रिया की कम सम्भावना रहेगी।

दि. ओझा, एस. एन. त्रिपाठी एवं गु. मो. सिंह, लेप्रसी रिव्यू, ३७, २, १९६६, ११५–२०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१३. इसके पंचांग के क्लोरोफार्म विलेय समाक्षारीय अंश के गुणकर्मात्मक प्रभाव को प्रस्तुत किया गया है। यह सम्वेदनाहृत कुत्तो में रक्त दबाव को बढ़ाता है। श्वसन को कुछ काल के लिए उत्तेजित करता है। हृदय संकोचों के आयाम को बढ़ाता है। आंत्र एवं गर्भाशय पर विभिन्न उद्वेष्टनकारी औषधों के प्रभाव को दूर करता है एवं चूहों में अल्प मूत्रजनन रोधी कार्य करता है।

वी. के. कपूर एवं हरकिशन सिंह, इंडि. जर. फार्मेसी, २९,१०, १९६७, २८५-२८८।

१४. इसके पंचांग के क्वाथ का अध्ययन गलित् कुष्ठ में किया गया। यह देखा गया कि यह डीडीएस के कार्य को बढ़ाता है, प्रतिक्रिया को रोकता है तथा इससे बिना किसी हानि के रोगी की दशा में सुधार होता है। अकेले इसके प्रयोग से जीवाणु की दृष्टि से लाभ नहीं होता।

दि. ओझा, गु. मो. सिंह, लेप्रसी रिव्यू, ३९, १, १९६८, २३-३०।

8. Aconites **सं०-वत्सनाभ**

१५. वर्ण लेखन (chromatography) एवं स्पेक्ट्रम प्रकाशमापी (spectrophotometry) पद्धति से वत्सनाभ वर्ग की विभिन्न जातियों (species) की पहचान आसानी से की जा सकती है। इस पद्धति से इनके द्वारा बने तरल योगों में किस जाति का उपयोग किया गया है एवं उसमें क्षाराभ की कितनी मात्रा है यह भी जाना जा सकता है। इस पद्धति से निम्नलिखित जातियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है—A. chasmanthum, A. napellus, A. heterophyllum, A. balfourii, A. deinorrhizum, A. spicatum, A. laciniatum.

एम. एल. खुराना एवं बी. एस. आर. मूर्ति, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, ९, १९६८, २०६-२०८।

9. Aconitum falconeri Stapf. **हि०—मींठा तेलिया**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१६. इसके मूल से दो नये क्षाराभ Bishatisine एवं Bishaconitine पृथक् किये गये हैं।

एन. सिंह, जी. एस. बाजवा एवं एम.जी. सिंह, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, १, १९६६, ३९-४२।

Aconitum heterophyllum Wall. सं०-अतिविषा

१७. इसके मूल से ३ नये diterpene lactone alkaloids पृथक किये गये जिनका नामकरण Heterophyllisine, Heterophylline एवं Heterophyllidine किया गया। इनकी संरचना का निर्धारण भी किया गया।

एस. डब्लू. पेल्लेटियर एवं आर. अनेजा, टेट्रा. लेट., ६, १९६७, ५५७-५६२।

11. Aconitum palmatum D. Don. सं०—प्रतिविषा

१८. इससे पृथक किये गये क्षाराभों में से Vakognavine की संरचना का अध्ययन है।

एन. सिंग एवं एस. एस. जसवाल, टेट्रा. लेट., १८, १९६८, २२१९-२२२२।

12. Acorus calamus Linn. सं०-वचा

१९. इसके तेल का अध्ययन चूहों पर किया गया। यह डेक्साएम्फेटा-माइन से उत्पन्न किये गये उद्वेगजन्य लक्षणों को रोकता है। एवं दूसरी तरह से निद्राजनक औषध हेक्सोबारबिटाल के गुण को बढ़ानेवाले वचा तेल के प्रभाव को डेक्साएम्फेटामाइन रोकता है। इन दो प्रयोगों से यह अनुमान होता है कि वचा तेल केन्द्रीय नाड़ी संस्थान पर एम्फेटामाइन की क्रिया का विरोधी है। तीसरे प्रयोग 'अनुकूलन निवारण प्रतिक्रिया' (avoidance conditioning response) द्वारा इसके संशामक कार्य (sedative tranquillising action) करने के तरीके पर प्रकाश डाला गया है जिसमें यह देखा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गया कि इस तेल में नाड़ी मंडल की प्रेरक कार्यकारी शक्ति को कम करने का गुण है।

ई० भट्टाचार्य, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, १९५–२०२।

13. Actinodaphne hookeri Meissn. बंबई-पिसा

२०. इसके बीज मज्जा स्नेह एवं कवच तैल के स्नेहीय अम्लों का रासायनिक विवेचन किया गया है।

टी. आर. भंभानी, वी. वी. आर. एस. एवं जे. जी. के., इंडि.. जर. केमिस्ट्री, ६, ३, १९६८, १६४१-६६।

14. Actinopteris fanis

२१. इसके पत्तों का चूर्ण ३००-६०० मि० ग्रा० प्रतिदिन, कुत्तों को मुखद्वारा दिया गया। यह देखा गया कि यह Tromexan १५० मि० ग्रा० प्रतिदिन (मुखद्वारा) की स्कन्दन रोधी (anticoagulant) क्रिया का विरोधी है।

पी. एस. आर. के. हरनाथ, एन. के. रामकृष्ण राव, के. सुनन्दा बाई, इंडि. जर. फीजियो. फार्मोकोला., सार, १२, २, १९६८, १०।

15. Actinopteris radiata (Sw.) Link. हि०-मयूर शिखा

२२. इसके सभी अंगों का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन किया गया है।

ब्रि. गोपाल एवं एस. भम्बी, जर. साइ. रिस., बी. एच. यू., १६ (२) ६५-६६, १९६१–१९८२।

16. Adhatoda vasica Nees. सं०-वासा

२३. इसके पत्तों से एक नाइट्रोजन रहित अंश को अलग करके उसका खरगोश में मुखद्वारा प्रयोग कर, रक्तशर्करा पर परिणाम देखा गया। रक्तशर्करा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

को कम करने की दृष्टि से टोलव्यूटामाइड की तुलना में इसमें वहुत कम प्रभाव पाया गया।

ए. टी. मोडक एवं एम. आर. राजाराम राव, इंडि. जर. फार्म., २८, ४, १९६६, १०५-१०६।

२४. इसके क्षाराभों का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

ए. के. भटनागर एवं एस. पी. पोपली, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ६, १९६६, २९१-२९२।

२५. ताम्र पुष्पी वासक—इसके श्वेत पुष्प की अपेक्षा ताम्रपुष्प वाले पौधे के पत्र तथा पुष्प में राजयक्ष्मा के लिए लाभदायक गुण है। इसके अरिष्ट का प्रयोग २८ रोगियों में किया गया। इनमें से ४६% में वहुत अच्छा लाभ, २१% में अच्छा लाभ तथा १७% में सामान्य लाभ तथा १४% में संशयात्मक प्रभाव रहा।

सू. का. राय, नागा., ११, ६, १९६८, २७४-८०।

सं०—A. vasica में कोई ताम्र पुष्प भेद नहीं पाया जाता। संभव है उपर्युक्त पौधा वासक से मिलता-जुलता कोई दूसरा पौधा हो।

17. Adiantum venustum G. Don

२६. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक triterpenoid द्रव्य प्राप्त किया गया जिसकी रासायनिक संरचना निर्धारित की गयी है।

ए. जमन, ए. प्रकाश, जी. बी., एफ. बी., बी. एम., ई. एम., आर. एम., टेट्रा. लेट., ३३, १९६६, ३९४३-३९४७।

18. Aegle marmelos or. सं०-बिल्व

२७. इसके तनें की छाल के रासायनिक विश्लेषण से पृथक किये गये Coumarin-Marmin की संरचना का विवेचन किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, सी. पी. दत्ता, कु. एस. भट्टाचार्य, एच. ई. ए. एवं बी. सी. दास, टेट्रा. लेट., ५, १९६७, ४७१-४७३।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२८. इसके पत्तों के विश्लेषण से प्राप्त अप्रधान क्षाराभ Aegelenine की संरचना के संबंध में विवेचन किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, कु. आर. आर. चौधरी एवं बी. सी. दास, साइन्स, कल्चर, ३३, ६, १९६७, २७९-८०।

२९. चूहों में प्रयोग से देखा गया कि इसके पत्रचूर्ण को उनके आहार में मिलाने से शारीरिक वृद्धि होती है।

वी. के. मालवीय एवं पी. एल. गुप्त, करेन्ट मेडि. प्रॅक्टि., ११, ६, १९६७, ३२६-३३८।

३०. इस प्रारम्भिक अध्ययन में बेल के पत्तों के जलीय एवं सुरासारीय सत्व का मेढक (उभयचरीय प्राणी) तथा कुत्ते (स्तनपायी प्राणी) के हृदय पर डिजिटॅलिस की तरह हृदय बलदायक (Cardiotonic) प्रभाव देखा गया।

एस. कृष्णन् हरावे, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, ३, १९६८, ३२७-३३१।

19. Aerva lanata Juss. सं०-पाषाण भेद

३१. इसके पंचांग का उपयोग 'पाषाण भेद' नाम से दक्षिण में किया जाता है। सिद्ध संप्रदाय के वैद्य केवल मूल का प्रयोग अधिक उपयोगी बतलाते हैं। इसके प्रतिनिधि रूप में A. tomentosa Forsk. का उपयोग किया जाता है। इसके स्थूल स्वरूप का वर्णन किया गया है। पाषाणभेद शब्द का अर्थ—जो शरीर में की पथरी आदि को बाहर निकाले—यह सिद्ध किया गया है। दूसरे अर्थ—पत्थर को तोड़कर उत्पन्न होनेवाली वनस्पति—का खण्डन किया गया है। पाषाण भेद नाम से दक्षिण में उपयोग में आनेवाली अन्य वनस्पतियों का स्थूल परिचय भी दिया गया है।

वी. नारायण स्वामी एवं उस्मान एस. अली, जर. रिस. इंडि. मेडि., भा, १ अं २, १९६७, २४२-२४९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

20. Aerva tomentosa Forsk. **सं०-पाषाण भेद**

३२. दक्षिण में इसका प्रयोग, A. lanata के प्रतिनिधि रूप में, पाषाण भेद नाम से किया जाता है। देखें–३१।

21. Ageratum conyzoides Linn. **बंबई-उचुण्टी**

३३. केरल में संग्रहीत इस पौधे के उड़नशील तैल के रासायनिक विश्लेषण से दो नये अंश पृथक् किये गये जिनकी संरचना का भी विवेचन किया गया है।

टी. आर. कस्तूरी एवं टी. मनीथामस, टेट्रा. लेट., २७, १९६७, २५७३-२५७५।

३४. इसका पारिस्थितिकी (Ecology) एवं ऋतु जैविकी (Phenology) सम्बन्धी अध्ययन इस लेख में किया गया है। यह सभी परिस्थितियों एवं स्थानों में उत्पन्न हो सकता है। यद्यपि इसका इतिहास इसे द० अमेरिका का आदिवासी वतलाता है तथापि ऐसा मालूम होता है कि यह पौधा भारतीय है। इसके प्राप्ति स्थानों का उल्लेख भी किया गया है।

एम. एल. एच. कौल, जर. साई. रिस., बी. एच. यू., १८ (१) १९६७-६७।

22. Ailanthus excelsa Roxb. **हिंदी-महारुख**

३५. इसके पत्र एवं छाल के जलीय तथा सुरासारीय सत्वों में जीवाणु रोधी तथा कवकरोधी गुण पाये गये जिससे इसकी चर्म रोग, पाचन संस्थान के रोग तथा अन्य रोगों में उपादेयता सिद्ध होती है।

आर. पी. पटेल एवं आर. एम. अलेवस, इंडि. जर. मेडि. साइ., २१, ४, १९६७, २२९-२३१।

23. Ailanthus malabarica D.C.

३६. इसकी राल से ९ नये triterpenoid पृथक् किये गये। इसमें

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

के प्रधान अंश Malabaricol की संरचना का निर्धारण किया गया है।

ए. चावला एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., १९६७, ४८३७-४८४३।

24. Alangium lamarckii Thwaites. सं०-अंकोल

३७. इसके मूल एवं काण्ड त्वक् का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें Tubulosine नामक क्षाराभ पाया गया।

एस. एस. सालगर एवं जे. आर. मर्चेण्ट, करेंट साइन्स, ३५, ११, १९६६, २८१-८२।

३८. उपर्युक्त लेख के कुछ अंशों का खण्डन एवं कुछ संशोधन किये गये हैं।

एस. सीं. पकराशी, करेंट साइन्स, ३५, १८, १९६६, ४६८-४६९।

३९. पूर्व के कार्यों द्वारा यह अनुमान हुआ कि इसके पत्र में जो शोथ-हर गुण है वह सम्भवत: किसी Steroid के कारण है। प्रस्तुत लेख इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त ४ द्रव्यों का है जिनका विवेचन किया गया है। इनमें से दो Steroid हैं एवं अन्य दो सम्भवत: Triterpenoid हैं जिन पर और आगे कार्य चालू है।

बी. दास गुप्ता एवं श्रीमती शी. शर्मा, एक्सपेरिएन्शिया, २२,१०,१९६६,६४७-४८।

४०. इसके पत्तों के सुरासारीय सत्व के जल विलेय अंश से एक Quaternary base पृथक् किया गया। इसकी क्रिया कोलीन के सदृश दिखलाई दी। इसके पूर्व (सान्याल एवं अन्य ५३, १९६५, १०५५-१०६१) सम्पूर्ण क्षाराभ का अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है।

ए. के. सान्याल, बी. दास गुप्ता, एस. एस. गम्भीर एवं पी. के. दास, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५४, ११, १९६६, १०६०-१०६३।

४१. इसके क्षाराभों का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

ए. आर. बी., आर. एस. कपिल, डी. एस. बी., एस. पी. पी., जे. आर. एम., एस. एस. एस., टेट्रा. लेट., ४१, १९६६, ४९६५-४९७१।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४२. इसका रासायनिक विश्लेषण सम्बन्धी अध्ययन है।

ए. पोपेलक, ई. हैंक, एच. स्पिगलर, टेट्रा. लेट., १०, १९६६, १०८१–१०८५; ४१, १९६६, ५०७७-५०८०।

४३. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से पूर्व में कुछ क्षाराभ पृथक् किये जा चुके हैं। प्रस्तुत लेख में दो नये फेनोलिक क्षाराभों Desmethyl psychotrine एवं Alangicine के पृथक्करण का अध्ययन है।

एस. सी. पकराशी, ए. अली, टेट्रा. लेट., २३, १९६७, २१४३-२१४६।

४४. इसके मूल की छालके प्रारम्भिक अध्ययनमें पक्षियों के अस्कॅरिड्स (Poultry ascarids) का नाशक गुण पाया गया। अन्य कृमियों में इससे लाभ नहीं हुआ। इसमें विषैला प्रभाव भी पाया गया।

एम. पी. दूबे एवं इ. गुप्ता, इण्डि. जर. फीजियो. एवं फार्माको., १२, १, १९६८, २५-३१।

25. Albizzia amara o v. **हिंदी-शिरीष भेद**

४५. इसकी पत्ती, छाल तथा काष्ठ का सॅपोनिन सम्बन्धी रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इससे एक नया flavonol glycoside पृथक् किया गया।

सी. वी. आर. शास्त्री, कु. सी. रुक्मिनी एवं एल. आर. राव, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, १२, १९६७, ६१३-६१५।

26. Albizzia lebbeck Benth. **सं०-शिरीष**

४६. चूँकि इसके अन्य अनेक अंगों का रासायनिक विश्लेषण हो चुका है इसलिए इसके काष्ठसार का अध्ययन किया गया जिससे अनेक द्रव्य पृथक् किये गये।

एस. आर. गुप्त, के. के. मलिक एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमेस्ट्री, ४, ३, १९६६, १३९-१४१।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

27. Albizzia procera Benth. **हि०-सफेद शिरीष**

४७. इसके बीजों से पृथक् किये गये Triterpenoid sapogenin -Proceragenin A की संरचना का निर्धारण किया गया है।

एस. राय एवं ए. राय, टेट्रा. लेट., ४६, १९६६, ५७४३-५७५०।

४८. पश्चिम बंगाल से संग्रहीत इसके बीजों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसमें के सॅपोनिन का विश्लेषण करके ७ अंश प्राप्त किये गये।

एस. राय एवं ए. के. राय, एक्सपेरिएन्शिया, २३, ३, १९६७, १८२-१८३।

28. Alectra parasitica A. Rich. var. Chitrakutensis. **हि०-निर्गुण्डी**

४९. कुष्ठ में लाभदायक इस वनस्पति के रासायनिक संगठन का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह पौधा चित्रकूट में पाये जानेवाले निर्गुण्डी गुल्म के मूल से निकलता है इसलिए इसे भी वहाँ के स्थानीय लोग निर्गुण्डी नाम से जानते हैं। इसमें ग्लाइकोसाइड नहीं पाया गया। कुछ क्षाराभ, शर्करा, स्टेरॉल, टॅनिन एवं स्नेहीय द्रव्य पाये गये।

बी. प्रसाद एवं जी. के. गोएन, सचि. आयु., १८, ८, १९६६, ७०२-७०४।

29. Allamania nodiflora Br.

५०. इसके पत्तों का चूर्ण ३००–६०० मि० ग्रा० प्रतिदिन, कुत्तों को मुख द्वारा दिया गया। प्रोथ्राँबिन काल द्वारा देखा गया कि यह Tromexan १५० मि० ग्रा० प्रतिदिन (मुख द्वारा) की स्कन्दन रोधी क्रिया का विरोधी है।

पी. एस. आर. के. हरनाथ, एम. के. रामकृष्ण राव, के. सुनन्दाबाई, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., सार, १२, २, १९६८, १०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

30. Alpinia galanga Willd. **हि०-कुलंजन**

५१. इसके सुगन्धित तैल की जीवाणुनाशक क्रिया का अध्ययन किया गया है। साथ में तुलनात्मक अध्ययन पिप्पली आदि का है।

ए. के. भार्गव एवं सी. एस. चौहान, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, ६, १९६८, १५०-१५१।

31. Alstonia neriifolia D. Don.

५२. इसके काण्ड की छाल के रासायनिक विश्लेषण से दो क्षाराभ Nerifoline एवं Echitamine पाये गये। इनके अतिरिक्त lupeol एवं β-amyrin भी पृथक् किये गये।

एस. के. राय एवं ए. चटर्जी, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, १, १९६८, २१-२२।

32. Alstonia scholaris R. Br. **सं०—सप्तपर्ण**

५३. इसकी छाल एवं मूलत्वक् को छोड़कर अन्य भागों का रासायनिक अध्ययन किया जा चुका है। प्रस्तुत लेख इसके मूल एवं मूलत्वक् के रासायनिक विश्लेषण से पृथक्कृत Echitamine chloride के संबंध में है।

एस. के. तलपत्रा एवं श्रीमती बी. तलपत्रा, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४४, ७, १९६७, ६३९-६४०।

५४. इसके मूल एवं मूलत्वक् से पृथक् किये गये उदासीन सघटकों (neutral constituents) का विवेचन किया गया है।

एस. के. तलपत्रा, एस. सेन गुप्त, कु. एस. बनर्जी एवं श्रीमती बी. तलपत्रा, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, १२, १९६८, ११८३-११८५।

33. Alstonia venenata R. Br.

५५. इसके फलों से पृथक किये गये दो नये indole alkaloid का

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रासायनिक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। इनमें से एक Echitovenidine तथा दूसरा (+)-minovincinine है।

बी. दास, के. बी., श्रीमती ए. चटर्जी, ए. बी. आर. एवं पी. एल. एम., टेट्रा. लेट., २२, १९६६, २४८३-२४८६।

५६. इसके फलों से पृथक् किये गये एक नये monoterpenoid alkaloid-Venoterpine का विवेचन है।

ए. बी. आर. एवं श्रीमती ए. चटर्जी, टेट्रा. लेट., २३, १९६८, २७६३-२७६६।

34. Ammannia baccifera Linn. **हि०-अगिया, दादमारी**

५७. केरल के वैद्य इसके पंचांग का प्रयोग पाषाणभेद नाम से करते हैं। यह पथरीली भूमि में उत्पन्न नहीं होता किन्तु जलीय स्थानों में होता है जो पाषाणभेद शब्द का अर्थ–'जो शरीर की पथरी को तोड़कर बाहर निकाले' सिद्ध करता हैं। इसका स्थूल परिचय भी दिया गया है। देखें–२१

35. Amoora rohituka W. & A.

देखें–६७-७१।

36. Anagallis arvensis Linn. **हि-जोंखामारी**

५८. इसके काण्ड के क्वाथ में गर्भाशय बलदायक (uterotonic) क्रिया पाई गई।

एम. बी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एन. मिश्रा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५९-६०।

37. Ananas comosus Merr. **हि०-अनानास**

५९. इसके फलों के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रोधी (Antifertility) क्रिया नहीं पाई गई।

यू. पी. वसु, बी. भादुरी एवं बी. के. मोझा, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २९१।

38. Anchusa strigosa Labill. **हि०-गुलेगावजवां, तुख्मेगांवजवां**

६०. कादरी एवं हमीद (१९६२) ने लिखा है कि गांवजवां नाम से भारतीय बजार में बिकनेवाले पत्र शायद Anchusa strigosa Labill. से प्राप्त होते हैं। इन्होंने गांवजवां के पुष्प (गुले गां०) तथा बीजों (तुख्म गां०) का उल्लेख नहीं किया है जिन्हें कुछ हकीम अधिक महत्व देते हैं। लेखक ने अनेक नमूनों का अध्ययन कर यह देखा कि तुख्म गांवजवां तो A. strigosa के बीज हैं, किन्तु गुलेगांवजवां Echium amoenum Fisch. नामक पौधे के पुष्प हैं। यह पुष्प बैंगनी, घंटिकाकार, रोमश, ३-४ से० मी० बड़े एवं अनियमित दलपत्र वाले होते हैं। अनेक पुस्तकों में गुले गांवजवां को Onosma bracteatum Wall. से प्राप्त लिखा है जो इस परीक्षण से मेल नहीं खाता।

आर. वी. सिठोले, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, ७, १९६८, १६७।

39. Andrachne aspera Linn. **हि०-भारतीय सेनेगा**

६१. अनेक विद्वानों ने भारतीय सेनेगा (Indian Senega) यह Polygala की जाति को लिखा है किन्तु बाद में अन्य विद्वानों ने उपर्युक्त A. aspera को भारतीय सेनेगा कहा है। इसलिए उपर्युक्त पौधे के मूल का गुणकर्मात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें का क्षाराभ कुत्ते एवं बिल्ली के श्वसन तथा रक्त दबाव को उत्तेजित करता है। विभिन्न प्राणियों की अनैच्छिक मांसपेशियों पर इसका उद्वेष्टन निरोधी प्रभाव है। यह जीवाणु विरोधी होते हुए भी विषैला नहीं है।

एच. आर. देरासरी, जे. एच. खालसा, इण्डि. जर. फार्मे. २८, ९, १९६६, २३७-२४०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

40. Andrographis paniculata Nees. हि०-कालमेघ

६२. इसमें के कार्यकारी तत्व Andrographolide की परिमापन की सुधारी हुई विधि का उल्लेख है तथा साथ में इसके सत्व के निकालने की अच्छी विधि का उल्लेख है।

पी. बी. तालुकदार, एस. बनर्जी, पी. के. चटर्जी एवं ए. के. दत्ता, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ६, ७, १९६८, ३५९-३६३।

41. Angelica archangelica Linn.

६३. इसके मूल का रासायनिक विश्लेषण पूर्व में किया गया है। इसमें बीज का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अन्य द्रव्यों के अतिरिक्त इसमें एक ग्लाइकोल Oxypeucedanin hydrate प्राप्त किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, ए. चक्रवर्ती एवं आर. मुखर्जी, जर. इण्डि. केमिक. सोसा., ४४, २, १९६७, ११०-११४।

६४. इसके मूल से पृथक् किए ४ furocoumarins का अध्ययन है।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं श्रीमती एस. दत्ता, इण्डि. जर. केमि., ६, ८, १९६८, ४१५-४२१।

६५. इसके रासायनिक पृथक्करण से एक Ostruthol नामक lactonic अंश पृथक् किया गया।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं श्रीमती एस. दत्ता, साइन्स, कल्चर, ३४, ११, १९६८, ४६०-४६१।

42. Annona squamosa Linn. हि०—शरीफा

६६. इसके काण्ड एवं पत्तों के क्वाथ में कुत्ते के गर्भाशय को छोड़कर अन्य पृथक्कृत गर्भाशयों पर बल्य (uterotonic) प्रभाव है।

एम. बी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एन. मिश्रा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५९-६०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

43. Aphanamixis polystachya (Wall.) Parker; Syn. Amoora rohituka W. & A. हि०-रोहड़ा

६७. प्राणियों में प्रयोगों द्वारा देखा गया कि इसका कार्य अन्य कैन्सर विरोधी औषधियों के समान है।

प्र. ज. देशपाण्डे, जे. डी. गोडे, जी. सी. प्रसाद, करेंट मेडि. प्रॅक्टि., १९६५, २५३।

६८. वास्तविक रोहितक की छाल के साथ इसके छाल का अध्ययन दोनों को पहिचाननें की दृष्टि से किया गया है। देखें–६५१।

६९. इसके कड़वे फल के छिलके के रासायनिक विश्लेषण से एक नया Triterpene--Aphanamixin पृथक् किया गया है जिसकी संरचना तथा विन्यास रसायन का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं ए. बी. कुण्डु, टेट्रा. लेट., १६, १९६७, १४७१-१४७६।

७०. चूहों में कृत्रिम रूप से उत्पन्न Lymphatic leukaemia (रुधिर श्वेताणु मयता) में इसके सत्व का अध्ययन किया गया है। प्रारम्भिक अध्ययन में आशाजनक परिणाम देखे गये।

गु. च. प्रसाद एवं प्र. ज. देशपाण्डे, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ३६-४२।

७१. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से एक रवेदार पदार्थ Aphanamixol पृथक् किया गया है जो diterpene alcohol है।

एस. चन्द्रशेखर एवं टी. चक्रवर्ती, जर. इण्डि. केमिक. सोसा., ४५, ३, १९६८, २०८-२१२।

44. Apium graveolens Linn. सं०-अजमोदा

७२. चूहों के केन्द्रीय वातनाडी सस्थान पर इसके सुगन्धी तैल का अध्ययन किया गया। १८०° से २६५° श० तक तापक्रम में पृथक्कृत अंश में

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सबसे अधिक तीव्रता पाई गई। इसमें सौमनस्यकारक (Tranquillizing) तथा आक्षेपरोधी गुण पाये गये तथा विषाक्तता की सम्भावना भी कम है।

आर. पी. कोहली, पी. आर. दुवा, के. शंकर एवं आर. सी. सक्सेना., इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, १०, १९६७, १०९९-११०२।

७३. प्रस्तुत शोधपत्र में इसके तेल के नाइट्रोजन तथा नाइट्रोजन विरहित अंशों के केन्द्रीय प्रभाव का अध्ययन है, जिनमें से नाइट्रोजन अंश में क्रियाशीलता पाई गई। यह शामक एवं सौमनस्यकारक है।

वी. के. कुलश्रेष्ठ, आर. सी. सक्सेना एवं आर. पी. कोहली, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार, ३७।

45. Argemone mexicana Linn. **सं०-स्वर्णक्षीरी; हिं०-भडभाड**

७४. इस शोधपत्र में इसकी अफीम (Chicalote opium) में मॉर्फीन जैसी क्रिया होने का खण्डन है तथा इसका भी खण्डन है कि पोस्ते के साथ इसका संकर (hybrid) उत्पन्न किया जा सकता है और उसमें मॉर्फीन के गुणधर्म हो सकते हैं। मस्तिष्क संस्थान पर इसके प्रभाव के सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता बतलाई गई है।

ह्वी. ई. टी., लायडिया, २९, ४, १९६६, २७८–२७९।

७५. इसके वर्गीकरण का इतिहास, लेटिन नाम की व्युत्पत्ति, विभिन्न भाषाओं के नाम एवं इसके स्वरूप में परिस्थिति के अनुसार होनेवाले परिवर्तनों का विवेचन किया गया है। यद्यपि यह अनेक प्रकार की परिस्थितियों में हो सकता है तथापि यह नई जमी हुई मिट्टी में एवं खुले स्थानों में अधिक अच्छा होता है। Argema का अर्थ मोतियाबिन्द है जो सम्भवत: इसकी नेत्र रोगों में उपयोगिता को इंगित करता है।

एम. एल. एच. कौल, जर. साइ. रिस., बी. एच. यू.. १८ (१) १९६७–६८।

46. Aristolochia indica Linn. **हिं०-ईश्वर मूल**

७६. इसमें अन्य वैज्ञानिकों द्वारा पाये गये क्षाराभ Aristolochine के रासायनिक स्वरूप का निर्धारण किया गया, जो कि 1-Curine है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

टी. आर. गोविन्दचारी एवं एन. विश्वनाथन, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, १२, १९६७, ६५५।

७७. इसके स्वरस का गर्भाशय पेशी पर शामक प्रभाव पड़ता है। देखें-५३७।

47. Arnebia nobilis Resh. f. हि०-रतनजोत

७८. उपर्युक्त पौधे की जड़ भी रतनजोत के नाम से बिकती है। इसका महत्व इसलिए बढ़ गया है कि इसमें का रंजक तत्व भोज्य पदार्थों के रंजन के लिए स्वीकृत किया गया है। इसके विभिन्न सत्वों की जीवाणु एवं कवक विरोधी क्षमता का अध्ययन किया गया है। साक्सलेट यंत्र द्वारा निकाले सुरासारीय सत्व में सबसे अधिक प्रभाव देखा गया जबकि शीत सुरासारीय सत्व में सबसे कम। जलीय सत्व में मध्यम स्वरूप का प्रभाव रहा। सभी सत्वों में ग्रामत्यागी जीवाणुओं की अपेक्षा ग्रामग्राही जीवाणुओं पर अधिक प्रभाव रहा।

आर. पी. पटेल एवं आर. एन. पटेल, इण्डि. जर. फार्मे., २८, ११, १९६६, ३०२–३०४।

48. Artabotrys odoratissimus R. Br. हि०-हराचंपा

७९. चूहों में प्रयोग करने पर इसके पत्तों में गर्भ निरोधक गुण पाया गया। यह निरापद है तथा इसका प्रभाव दीर्घकालिक है।

बी. चक्रवर्ती, आ. चौधरी एवं प. रा. चौधरी, जर. इण्डि. मेडि. एसो. ५१, ५, १९६८, २२७–२२९।

49. Artemisia brevifolia Wall.

८०. चकराता में उपज किये गये इन पौधों में की Santonin की मात्रा का अध्ययन किया गया है जिसमें परिस्थिति तथा आयु आदि से परिवर्तन देखा गया है।

एच. सेठी, बी. के. शर्मा एवं आर. एम. वेरी, इण्डि. फारे., ९२, ९, १९६६, ५८३–५८५।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

50. Artemisia roxburghiana.

८१. इसके पंचांग के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन रोधी क्रिया नहीं पाई गई। देखें–५६।

51. Artemisia scoparia Waldst & Ki. **पं०-दौना**

८२. इसके पुष्पित अग्रों में हलके पीले रंग का ०·५% उड़नशील तेल पाया गया जिसका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस तैल में अन्य द्रव्यों के अतिरिक्त ३०% eugenol रहता है जो एक महत्व का द्रव्य है।

आर. के. थापा, वी. एन वशिष्ट एवं सी. के. अटल, सार, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १६६८, २८३।

52. Artemisia vulgaris Linn. **सं०-दमनक**

८३. इसके पेट्रोलियमईथरीय सत्व से एक नया Pentacyclic alcohol Fernenol पृथक् किया गया तथा उसके स्वरूप का निर्धारण किया गया।

एस. के. कुण्डू एवं श्रीमती ए. चटर्जी, टेट्रा. लेट., १०, १६६६, १०४३-१०४७।

८४. इसके फलों के उष्ण जलीय सत्व (क्राथ) का अध्ययन गर्भाशय संकोचक गुण तथा अन्य गुण कर्म जैसे—हृदय, आंत्र, रक्तदवाव, श्वसन, मांशपेशी, मानसिक क्रियाएँ एवं कृमि पर प्रभाव की दृष्टि से किया गया। इसमें सौम्य गर्भाशय संकोचक क्रिया पाई गई। प्राणियों में हृद् उत्तेजक, आंत्र संकोचक एवं रक्त दबाब वर्धक क्रियाएँ देखी गई तथा मानसिक कार्यों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

एम. बी. मिश्रा, एस. डब्लू. सिंग, आर. के. मिश्रा एवं एस. एस. मिश्रा, इण्डि. जर. मेडि. साइ., २२, ३. १६६८, १४१-१४३।

53. Artocarpus heterophyllus Lam. **सं०-पनस**

८५. इसके काष्ठ सार के रंजक द्रव्यों के अध्ययन के सम्बन्ध में यह चतुर्थ लेख है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पी. वी. राधाकृष्णन् एवं ए. वी. रामाराव, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ६, १९६६, ४०६-४१२ ।

54. Asparagus racemosus Linn. **सं०-शतावरी**

८६. इसके अनेक सत्वों का अध्ययन स्तनश्राव एवं अन्तश्रावी ग्रंथियों पर प्रभाव की दृष्टि से किया गया । इससे स्तन एवं स्तन्य वृद्धि होती है ।

पी. वी. सवनीस एवं बी. बी. गायतोंडे, १८ वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, सार, इण्डि. जर. फार्मे, २८, १२, १९६६, ३४१ ।

८७. शतावरी मूल के विभिन्न निःस्सारों का प्राणियों में अध्ययन किया गया । प्रायः सभी की क्रिया मस्कॅरिनधर्मी (Muscarinic) पाई गई । सुरासारीय निस्सार में गर्भाशय संकोच निरोधी क्रिया पाई गई एवं इसमें स्तन वृद्धिकर प्रभाव भी होता है ।

एम. एच. जेत मलानी, पी. बी. सवनीस, एवं बी. बी. गायतोंडे, जर. रिस. इण्डि. मेडि., २, १, १९६७, १-१० ।

८८. इसके मूल के सुरासारीय अपरिष्कृत सत्व को मांसपेशी द्वारा चूहों में विभिन्न अवस्थाओं में दिया गया । इससे स्तन ग्रन्थि तथा गर्भाशय का वजन बढ़ा । स्तन एवं स्तन्य वृद्धि सम्भवतः इसके द्वारा उन्मुक्त कोर्टिकॉयड या पोलॅक्टिन के कारण हो सकती है ।

पी. बी. सवनीस, बी. बी. गायतोंडे एवं माया जेटमलानी, इण्डि. जर. एक्स्पेरि. बायो., ६, १, १९६८, ५५-५७ ।

८९. इसके विभिन्न अंगों के रासायनिक विश्लेषण का संक्षेप में उल्लेख किया गया है ।

एस. एस. सुब्रह्मनियन, करेंट साइन्स, ३७, १०, १९६८, २८७–२८८ ।

९०. इसके ३ सत्वों-सुरासारीय, सुरासार जलीय तथा ग्लाइकोसाइड अंश का प्रारम्भिक गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है ।

आर. एन. राय, एस. आर. चह्वाण, एस. भगवागेर, एन. के. दत्ता एवं एस. एन. ऐय्यर, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८९-२९० ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

55. Astercantha longifolia Nees. सं०-कोकिलाक्ष

६१. इसके पंचाग के रासायनिक विश्लेषण से Stigmasterol, lupeol एवं कुछ अन्य द्रव्य प्राप्त किये गये।

सी. कासिम एवं एन. एल. दत्ता, इण्डि. जर. केमिक. सोसा,, ४४, १, १९६७, ८२-८४।

56. Atropa acuminata Royle.

६२. देखें–२६२।

57. Azadirachta indica A. Juss. सं०-निंब

६३. निम्ब तैल के प्रमेहघ्न गुण का अध्ययन १० रोगियों पर किया गया। यह देखा गया कि स्थूल वर्ग के मधुमेही रोगियों में इससे लाभ हुआ किन्तु कृशवर्गीय रोगियों में इससे लाभ नहीं हुआ।

जे. के. ओझा, रा. सु. सिंह एवं रा. कृ. गुप्त, सचि. आयु., १९, ८, १९६७, ६५१–६५२।

६४. इसके गोंद में नत्रजनीय योगों की पहचान की गई एवं इससे D- glucosamine पृथक् किया गया जो इसमें २·६४% है। इस लेख में अन्य ९ प्रकार के गोंदों का भी अध्ययन amino sugar की दृष्टि से किया गया है किन्तु उनमें यह नहीं पाया गया।

एस. उषा लक्ष्मी एवं टी. एन. पट्टाबिरमन, इडि. जर. बायोकेमि., ४, ३, १९६७, १८१–१८३।

६५. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से Quercetin एवं β- sitosterol पृथक् किये गये। Quercetin की जीवाणुरोधी क्रिया प्रसिद्ध है।

एस. पी. बासक एवं डी. पी. चक्रवर्ती, जर. इण्डि. केमिक. सोसा., ४५, ५, १९६८, ४६६-४६७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

58. Bacopa monnieri (Linn.) Pennell; Syn. Herpestis monniera Linn. H. B. & K. सं०-ब्राह्मी (वंगीय)

९६. पहले इसमें के दो सॅपोनिन Bacoside A तथा Bacoside B में से A के स्वरूप का विवेचन किया जा चुका है। इस लेख में Bacoside B के रासायनिक स्वरूप का विवेचन है।

श्रीमती एन. बसू., आर. पी. रस्तोगी एवं एम. एल. धर, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, २, १९६७, ८४-८६।

९७. इसमें सौमनस्यकारक (Tranquillizing) गुण पाया गया किन्तु यह क्लोरप्रोमेजीन से बहुत कम था।

डी. के गांगूली एवं सी. एल. मल्होत्रा, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५५, ५, १९६७, ४७३-४८२।

९८. इसके एक अंश Hersaponin का अध्ययन मस्तिष्क के ऊपर उसके प्रभाव के लिए किया गया। विभिन्न प्रयोगों से इसके सौमनस्यकारक गुण का अध्ययन किया गया।

डी. के. गांगूली एवं सी. एल. मल्होत्रा. इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, १, १९६७, ३३-४३।

९९. प्राणियों में इसके सुरासारीय सत्व का मानसिक प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह शामक है किन्तु स्ट्रिकनीन या मेट्राझोल के आक्षेपजनन प्रभाव को रोकने में समर्थ नहीं है। मेट्राझोल के मारक प्रभाव के काल को यह बढ़ाता है। यह सेमीकार्बाझाइड के आक्षेपजनन एवं मारक कार्यों को पूर्णतया निष्प्रभावी करता है। यह 'स्वाभाविक कण्डू प्रत्यावर्त' को कम करता है तथा मेस्कालीन के कण्डूजनन कार्य को रोकता है।

पी. के. दे. एवं बी. के. चटर्जी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ९-१८।

59. Barringtonia acutangula (Linn.) Gaertn. हि०-हिज्जल

१००. इसके फलों एवं काष्ठसार का रासायनिक अध्ययन किया जा चुका है। इसकी शाखाओं से दो नये Triterpene प्राप्त किये गये जिनका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. के. वरुआ, एस. पी. दत्ता एवं एस. के. पाल, जर. इडि. केमि. सोसा., ४४, ११, १९६७, ६६१-६६३ ।

१०१. इसके काष्ठ के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त अनेक द्रव्यों के अतिरिक्त एक Triterpene-Tanginol की संरचना का विवेचन किया गया है।

सी. एस. पी. शास्त्री एवं एल. आर. राव, टेट्रा., २३, १९६७, ३८३७-३८४६ ।

१०२. इसकी शाखा से एक Triterpene diacid–Acid A प्राप्त किया गया है।

ए. के. बरुआ, एस. के. पाल. एवं एस. पी. दत्ता, साइन्स, कल्चर, ३४, ६, १९६८, २५९-२६० ।

१०३. इसके फलों से प्राप्त नये Triterpenoid sapogenin-Barringtogenoi B की संरचना का अध्ययन है।

ए. के. बरुआ, एस. पी. दत्ता एवं बी. सी. दास, टेट्रा., २४, १९६८, १११३-१११७ ।

60. Bassia butyracea Roxb. हि०-फलवारा

१०४. चूँकि इसकी छाल कड़वी तथा कषाय होती है इसलिए इसका रासायनिक विश्लेषण किया गया। इसमें तीन ग्लाइकोसाइड पाये गये।

द. कुमारी, एस. के. मुकर्जी एवम् टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३५, ९, १९६६, २२३-२२४।

61. Bauhinia purpurea Linn. हि०-कचनार

१०५. इसके पुष्पों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। चिकित्सा में इनका लाभप्रद प्रभाव सम्भवत: इनमें के ग्लूकोसाइड के कारण है।

आर. रामचन्द्रन् एवम् बी. सी. जोशी, करेंट साइन्स, ३६, २१, १९६७, ५७४-७५ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

62. Berberis Sp. **सं०-दारूहरिद्रा**

१०६. बर्बेरीन क्षाराभ जो दारुहरिद्रा से प्राप्त किया जाता है, विसूचिका की चिकित्सा में बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। विसूचिका कृमियों के जिस अंश से अतिसार के लक्षण होते हैं सम्भवत: उस द्रव्य को यह क्षाराभ निष्प्रभावी करता है। यह क्लोरॅम्फेनिकॉल से अधिक अच्छा है। मात्रा—५० मि० ग्रा० प्रारम्भ में, फिर प्रत्येक ८ घंटे पर ६ बार, फिर प्रत्येक १२ घंटे पर पांचवें दिन तक या ठीक होने तक। यह लवण-जल चिकित्सा के साथ बहुत उपयोगी है।

एस. सी. लहरी एवम् एन. के. दत्ता, जर. इंडि. मेडिक. एसोसि., ४८, १. १९६७, १-११।

१०७. इसमें का प्रधान Berberine क्षाराभ बढ़ी हुई केशिका पारगम्यता (Capillary permeability) को घटाकर सम्भवत: अतिसार तथा विसूचिका में कार्य करता है क्योंकि परीक्षण में देखा गया कि जो पदार्थ पारगम्यता बढ़ाते हैं उनके प्रभाव को यह घटाता है।

एम. वी. भिडे. एवम् एन. के दत्ता, इंडि. जर. फीजियो, फार्माकोला., १२, २, १९८६, १९।

१०८. चूंकि Berberine sulphate का उपयोग अतिसारादि में हो रहा है इसलिए इसके प्रचूषण आदि के अध्ययन के लिए खरगोशों के १० दिन के बच्चों पर प्रयोग किया गया। यह देखा गया कि इसका प्रचूषण मुख द्वारा सेवन से होता है। रक्त में यह ७२ घंटे से अधिक रहता है एवं इसका उत्सर्ग मूत्र द्वारा होता है। हृदय में इसकी मात्रा सबसे अधिक एवं अग्न्याशय एवं यकृत में इसकी मात्रा उत्तरोत्तर कम रही। सूचिका द्वारा देने से कुछ अंशों में मलद्वारा भी उत्सर्ग होता है। क्षुद्रांत्र, वृक्क एवं यकृत में इसकी मात्रा अधिक देखी गई।

एम. वी. भिडे, एस. आर. चह्वाण एवम् एन. के. दत्ता, सार, २० वीं इंडि. फार्मे कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

63. Berberis aristata D.C.

सं०-दारुहरिद्रा

१०९. प्राणियों में इसके सत्वों का अध्ययन अतिसार नाशक गुण की दृष्टि से किया गया। यह अमीबाजन्य आंत्रिक तथा यकृत विकारों में लाभप्रद है।

एन. के. दत्ता एवम् नटराजन ऐय्यर, जर. इंडि. मेडि. एसो., ५०, ८, १९६८, ३४९–३५२।

64. Berberis asiatica Roxb. ex D.C.

सं०-दारुहरिद्रा

११०. चूँकि कैन्सररोधी तत्व इसमे पाये गये थे इसलिए इसके मूल का रासायनिक विश्लेषण किया गया। इसमें ५ प्रकार के क्षाराभ (alkaloid) तथा ३ प्रकार के नये समाक्षार (Base) प्राप्त किये गये।

डॉ. एस. भाकुनी, ए. शोराव एवम् एस. पी पोपली, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, २, १९६८, १२३१।

65. Bergenia Sp.

सं०-पाषाण भेद

१११. उपर्युक्त प्रजाति की तीन जातियों 1. B. ligulata (Wall.) Engl. 2. B. ciliata (Royle) Raizada एवं 3. B. Stracheyi का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, इनके चूर्ण का सूक्ष्म अध्ययन तथा विभिन्न रासायनिक द्रव्यों के साथ सम्पर्क करने से होनेवाले परिणामों का उल्लेख है। विभिन्न विक्रय केन्द्रों से प्राप्त पाषाण भेद का भी अध्ययन किया गया है। गुजरात, केरल तथा पंजाब से B. ligulata के तथा उ० प्र० एवं राजस्थान से प्राय: B. ciliata एवं कुछ B. ligulata के मूल प्राप्त हुए जो इस नाम से वहाँ बिकते हैं।

ए. पी. शर्मा, नागा, ९, ७, १९६६, २३६-२४५।

११२. B ligulata का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, विभिन्न रासायनिक द्रव्यों के साथ सम्पर्क से होनेवाले परिणाम तथा आयुर्वेद में उल्लिखित पाषाणभेद के योगों का उल्लेख है

सं. सेन एवं आ. प्र. शर्मा, नागा., ९, ९, १९६६, ३२३-३३६।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

66. Bergenia ciliata [Royle] Raizada. सं०-पाषाणभेद

११३. इसके विभिन्न विलेयकों के सत्वों तथा एसिटोन सत्व के विशिष्ट अश तथा अन्य विशिष्ट सत्व Bergenin का गुणकर्मात्मक अध्ययन किया गया है। इनमें से सुरासारीय सत्व में क्रियाशीलता पाई गई। चूहों में इससे मूत्रल प्रभाव (५०० मि० ग्रा० प्रति किलो०) पाया गया। अहिफेन सत्व के कार्य को भी इसका सुरासारीय सत्व बढ़ाता है।

वि. सिंग, श्रीमती एस. प्रभू एवं बी. एन. शर्मा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, २, १९६७, ४५।

67. Betula utilis D. Don. सं०-भूर्जपत्र।

११४. इसकी बाह्य त्वचा तथा अन्तः त्वचा का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। बाह्य त्वचा में Betulin, lupeol, oleanolic acid, acetyloleanolic acid एवं leucocynidin पाये गये। अन्तस्त्वचा में Polymeric leucoanthocyanidins काफी रहते हैं।

वी. एम. चारी, एस. नीलकण्टन एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ५, १९६८, २३१-२३४।

68. Blighia sapida.

११५. चूंकि इसके बीजावरण (aril) में रक्तगत शर्करा को कम करने का गुण पाया गया है इसलिए इसके फल के रासायनिक संगठन का अध्ययन किया गया है।

एच. एस. गर्ग एवं सी. आर. मिश्रा, प्लैंन्टा मेडिका १५, १, १९६७, ७४-८०।

११६. इसके फल के गूदे से पृथक् कृत Quinone-Blighinone की संरचना का विवेचन किया गया है।

एच. एस. गर्ग एवं सी. आर. मित्रा, टेट्रा. लेट., १३, १९६८, १५४९-१५५२।

69. Blumea eriantha D.C. म०-निमुरडी

११७. इससे प्राप्त flavonol-capıianthin के स्वरूप का पुनर्निर्धारण किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पी. के. बोस,ए. के. बरुआ एवं कु. पी. चक्रवर्ती, जर. इंडि, केमि. सोसा., ४५, ६, १९६८, ८५१-८५२।

70. Boerhaavia diffusa Linn. सं०-पुनर्नवा

११८. इसके जलीय तथा एसिटोन से निकाले सत्वों एवं पुनर्नवीन नामक क्रियाशील सत्व के शोथहर गुणों का अध्ययन किया गया है। प्राणियों में उत्पन्न किये गये शोथ में इससे लाभ हुआ।

टी. एन. भल्ला, एम. बी. गुप्ता, पी. के. सेठ के. पी. एवं भार्गव, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार, ३७।

११९. इसमें रसायन गुण नहीं पाया गया।

देखें १८३।

१२०. इसकी कायिक गुणसूत्र संख्या (Somatic chromosome number) 2n= 26 है।

ए. के. श्रीवास्तव एवं के. सी. मिश्रा, साइन्स, कल्चर, ३२, ६, १९६६-३१५।

71. Boerhaavia punarnava Saha et Krishnamurthy; सं०-पुनर्नवा

१२१. यह नया नामकरण इस जाति (species) के लिए आवश्यक नहीं है। वास्तव में यह वनस्पति B. erecta Linn. है जो कि उष्ण कटिबंधज अमेरिका में बहुत होती है तथा अन्य उष्ण कटिबंधज देशों में फैल रही है। भारत में सम्भवतः यह बाहर से आया हुआ पौधा है जो अब सड़कों, रेलमार्ग आदि के किनारे एवं कूड़ा आदि के स्थानों में पाया जाता है। इसके फल पर ग्रन्थियां नहीं होतीं तथा ऊपर से यह कटा सा लगता है।

एन. सी. नायर, बुले. बोटेनि. सर्वे इंडि, ९, १९६७, २८३।

72. Boerhaavia repanda

73. Boerhaavia repens सं०-पुनर्नवा

१२२. इनके पंचांग के मूत्रल गुण का अध्ययन श्वेत चूहों में किया गया। दोनों प्रकार के गोखरू तथा तुलना के लिए यूरिया का प्रयोग किया

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गया। प्रारम्भिक अध्ययन में पुनर्नवा में मूत्रल क्रिया पाई गई किन्तु गोखरू में नहीं।

एस. कृष्णन हारवे, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५४, ८, १९६६, ७७४-७७८।

74. Bombax malabaricum DC. सं०-शाल्मली

१२३. इसके बीजों के क्वाथ में गर्भाशय बल्य (uterotonic) क्रिया पाई गई।

एम. बी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एन. मिश्रा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५९-६०।

१२४. प्राणियों के परीक्षण में इसके बीजों के उष्ण जलीय सत्व में साधारण गर्भाशय सकोचक क्रिया पाई गई। गिनीपिग के आंत्र पर इसकी पोषणज एव मेढक के हृदय पर उत्तेजक क्रिया हुई। कुत्ते के रक्त दबाव में नगण्य वृद्धि देखी गई। इसमें कोई वेदनाहर, शामक या निद्राजनन गुण नहीं पाया गया। खरगोश की आँख तथा मेढक की समोदरिका पेशी पर कोई प्रभाव नहीं रहा।

एम. बी. मिश्रा, एस. एस. मिश्रा एवं श्रीमती आर. के. मिश्रा, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, ७ १९६८, १६५-१६६।

१२५. इसके मूल, काण्ड एवं पत्र का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण तथा द्रव्यपरिचयात्मक स्थिरांकों का निर्धारण किया गया है। इसके सभी अंगों में glycoside हैं किन्तु काण्ड में कुछ क्षाराभ तथा मूल में प्रोटीन पाये गये।

पी. एन. मेहरा एवं सी. आर. कर्णिक, सार, २० वी इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८४।

75. Boswellia serrata Roxb. सं०-शल्लकी

१२६. इसके बीजों के तैल का रासायनिक विश्लेषण किया गया है।

एच. ए. भाकरे, एवं सी. बी. एन. राव, करेंट साइन्स, ३६, २४, १९६७, ६६८।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

76. Boucerosia aucheriana Decne.; **पं०-चंरुगली, पमनके**

१२७. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक alcohol, एक प्रकार का मोम एवं सॅपोनिन प्राप्त किये गये।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं ए. के. चक्रवर्ती, जर. इंडि. केमिक. सोसा. ४४, २, १९६७, ८७-९०।

77. Brassica Sp. **सं-सर्षप**

१२८. इसमें रागी (Eleusine coracana and other var.) की मिलावट पायी जाती है। चूर्ण में पहचान स्टार्च की अधिकता एवं विशिष्ट प्रकार के ऊतकों की उपस्थिति से की जा सकती है।

आर. वी. कृष्णराव, १७हवीं इंडि. फार्मास्यू. कांग्रेस, वाराणसी, दिस. १९६५, इंडि. जर. फार्मे., २८, ३, १९६६, ८०।

78. Butea monosperma (Lam.) Kuntze. **सं-पलाश**

१२९. चूहों में इसके पुष्प, पत्र एवं बीजों के विभिन्न सत्वों का अध्ययन गर्भ निरोधक गुण की दृष्टि से किया गया। इनमें से केवल बीजों के उष्ण सुरासारीय सत्व में यह गुण पाया गया।

यू. खन्ना, एस. हण्डा एवं आर. आर. चौधरी, १८ हवीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस., इंडि. जर. फार्मे, २८, १२, १९६६, ३४३।

१३०. इसके पुष्पों के आभ्यंतर दलपत्रों के सुरासारीय सत्व में, ३·२ मि. ग्रा./कि. ग्रा. भार/प्र. दिन की मात्रा में ईस्ट्रोजेन विरोधी क्रिया पाई गई। इससे कम मात्रा में यह क्रिया नहीं पाई गई।

के. आर. लॉमस एवं जे. पी. ऊनियाल, इंड़ि. जर. एक्स्पेरि. बायो., ४, ४, १९६६, २४६।

१३१. इसके स्नेह विरहित बीजों से कृमिघ्न अंश पृथक् किया गया जो Palasonin है। इसके रासायनिक स्वरूप का विवेचन भी किया गया है।

आर. के. राज एवं पी. ए. कुरूप, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, २, ११६७, ८६-८७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१३२. इसमें का क्रमिघ्न सत्व Palasonin कैसे कार्य करता है, इस सम्बन्ध में विवेचन है।

आर. के. राज एवं पी. ए. कुरूप, इंडि. जर. बायोकेमि. ४, २-३, १९६७, ९०-९३, १७८-१८१।

१३३. इसके बीजों से पृथक् किये गये प्रमुख द्रव्य Palasonin की संरचना का निर्धारण किया गया है। यह desmethyl cantharidin है।

आर. जे. वोन्चिस एवं एम. एच. फिशर, टेट्रा. लेट., १६; १९६८, १९७१–१९७४।

१३४. इसके प्रजनन रोधी प्रभाव (Antifertility effect) का प्राणियों में अध्ययन किया गया है। इसके बीजों के सुरासारीय सत्व में तथा पुष्पों में यह गुण पाया गया।

यू. खन्ना एवं आर. आर. चौधरी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, १०, १९६८, १५७५-१५८०।

१३५. इसके बीजों से पृथक् किये गये सक्रिय अंश Palasonin के क्रमिघ्न गुण, विषाक्तता एवं अन्य गुणकर्मों का अध्ययन किया गया है। साथ में इसके Piperazine लवण का भी अध्ययन किया गया है। इनके क्रमिघ्न गुण की तुलना Santonin तथा Piperazine से की गई है। यह इन दोनों से अधिक प्रभावशाली है। इसके Piperazine लवण में कम विषाक्तता है।

आर. कालेयसराज एवं पी. ए. कुरूप इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, १२, १९६८, १८१८-१८२५।

79. Caccinia glauca Savi. **हि०-गादजवां**

१३६. इसके फलों से rutin एवं एक अम्ल सॅपोनिन पृथक् किया जा चुका है। प्रस्तुत लेख में इससे पृथक् किये गये Caccigenin नामक एक नये triterpenoid sapogenin का विवेचन है।

के. एन. एन. आयंगार एवं एस. रंगस्वामी, टेट्रा. लेट., १८, १९६६, १९४७-१९५२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

80. Caesalpinia bonducella Fleming. सं०-कंटकीकरंज

१३७. चूहों में कृत्रिम शोथ उत्पन्न करके इसके शोथहर प्रभाव का अध्ययन किया गया। फेनिल ब्यूटेभोन की तुलना में इससे पर्याप्त लाभ देखा गया। इसके अन्य गुणधर्मों पर भी प्रकाश डाला गया है।

कु. माया जेटमलानी, पी. वी. सबनीस एवं बी. वी. गायतोंडे, १८ हवी इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मे., १, २८, १२, १९६६, ३४१।

81. Caesalpinia digyna Rottl. म०-वाकेरी

१३८. इसके मूल को क्षयजन्य गंडमाला, आंत्रिक क्षय तथा अस्थिक्षय में उपयोगी बतलाया जाता है। अन्य वैज्ञानिकों ने इसके सुरासारीय सत्व तथा एक रवेदार सत्व Vakerin (Syn. Bergenin) का अध्ययन गिनीपिग में क्षय उत्पन्न करके किया किन्तु कोई उल्लेखनीय फल नहीं पाया। किन्तु उन्होंने यह सुझाव भी दिया था कि प्रायोगिक प्राणी के क्षय में सफलता न दृष्टिगोचर हो तब भी इनमें अनुसन्धान चालू रखना चाहिये। इसी दृष्टि से इसके मूल के शीतजल सत्व, सुरासारीय सत्व तथा सुरासार एवं जल (८० : २०) मिश्रण सत्व का अध्ययन किया गया। अन्तः पात्र (in vitro) परीक्षण में यह देखा गया कि इनका कोई प्रभाव ग्रामग्राही या ग्रामत्यागी जीवाणुओं पर नहीं पड़ता। किन्तु यह क्षय दण्डाणु वृद्धि रोधक हैं। इसमें सबसे अधिक क्रियाशीलता तृतीय सत्व में मिली। यह द्रव्य ताप स्थिर भी है। गिनीपिग के आहार में (२%) इसका मिश्रण करने से उनके रक्तरस में भी यह गुण पाया गया। इसकी तुलना Capparis moonii से भी की गई।

श्रीमती एम. आर. पटेल, आर. ए. वेल्लारे एवं सी. वी. डेलीवाला, इंडि. जर. एक्स्पेरी., बायोला., ४, ४, १९६६, २१४-२१५।

82. Calophyllum apetalum Willd.

१३९. इसके फलों के रासायनिक विश्लेषण से एक नया 4-phenyl-coumarin–Apetalolide प्राप्त किया गया है जिसकी संरचना का अध्ययन है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. के. निगम, सी. आर. मित्रा, जी. के., बी. सी. दास, जे. पी., टेट्रा. लेट., २८, १९६७, २६३३-२६३६ ।

१४०. गोवा से संग्रहीत इसकी छाल के रासायनिक विश्लेषण से Friedelin एवं Apetalic acid, मूल से Friedelin, काण्ड से Friedelin एवं β—amyrin तथा काष्ठ से β—sitosterol एवं mesoinositol पाये गये । Apetalic acid की संरचना का निर्धारण किया गया है ।

१४१. उपर्युक्त पौधों के पत्तों से एक नया Triterpene lactone -Apetalactone पृथक् किया गया है, जिसकी संरचना का अध्ययन है ।

टी. आर. गोविन्दचारी, डी. प्रकाश एवं एन. विश्वनाथन, जर. केमि. सोसा., इंग्लैण्ड, सी, १९६८, ११, १३२३–१३२४ ।

83. Calophyllum inophyllum Linn. हिं०-सुलतान चंपा

१४२. इसके पत्रों की शिराओं का रचनात्मक अध्ययन किया गया है ।

बी. सी. कुण्डू एवं बी. गुप्त, साइन्स, कल्चर, ३३, ३, १९६७, १२३–१२४ ।

१४३. इसके पत्तों से Friedelin एवं तीन नये Triterpene पृथक किये गये । इनकी संरचना का विवेचन किया गया है ।

टी. आर. गोविन्दचारी, एन. वी., बी. आर. पी., यू. आर. आर. एवं एम. एस., टेट्रा., २३, १९६७, १९०१-१९१० ।

१४४. इसके काष्ठसार के रासायनिक विश्लेषण से दो द्रव्य Mesuaxanthone B एवं एक नया xanthone—Calophyllin B प्राप्त किये गये ।

टी. आर. गोविन्दचारी, बी. आर. पी., एन. एम., यू. आर. आर. एवं एन. एन. आर., इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, २, १९६८, ५७-५९ ।

१४५. इसके पत्तों में के मत्स्य विनाशक (Piscicidal) अंशों के पृथक्करण एवं उनके स्वरूप निर्धारण का अध्ययन है ।

के. के., एच. ओ., टी. एम., टेट्रा. लेट., १९, १९६८, २३८३-२३८५ ।

३

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

84. Calophyllum tomentosum T. Anders.

१४६. इसके फलों के रासायनिक विश्लेषण से दो नये द्रव्य Tomentolide A (4-phenyl-coumarin) एवं Tomentolide B (4-propyl-coumarin) पाये गये जिनकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

एस. के. निगम, सी. आर. मित्रा, जी. के., वी. सी. दास, एवं जे. पी., टेट्रा. लेट., २८, १९६७, २६३३-२६३६।

१४७. इसके पत्तों से एक नया Triterpene lactone-Apetalactone पृथक किया गया है जिसकी रासायनिक संरचना का अध्ययन है।

टी. आर. गोविन्दचारी, डी. प्रकाश एवं एन. विश्वनाथन्, जर. केमि. सोसा. इंग्लैंड, सी, १९६८, ११, १३२३-१३२४।

85. Calotropis gigantea Linn. R. Br. ex Ait. सं०-अर्क

१४८. इसके मूल की छाल के सम्बन्ध में किये गये रासायनिक विश्लेषण का विवेचन किया गया है।

वी. अंजनेयुलु एवं एल. रामचन्द्रराव, करेंट साइन्स, ३७, ६, १९६८, १५६-१५७।

१४९. इसके पुष्प तथा पत्रों के सत्वों का चूहों की प्रारम्भिक गर्भावस्था पर अध्ययन किया गया। इसके पत्तों के पेट्रोलियमईथर सत्व में कुछ गर्भ निरोधक गुण पाया गया।

देखें–४७८।

86. Cannabis sativa Linn. Syn. C. indica Lam.

हिं०-भांग, गांजा

१५०. इसके नर एवं मादा पौधों को अलग-अलग उत्पन्न कर उनके निस्सार निकाले गये। इसमें केवल पत्र तथा पुष्पिताग्र लिये गये। फल, मूल, शाखा एवं काण्ड को नहीं लिया गया। नर पौधे से ११% एवं मादा पौधे से १५% निस्सार प्राप्त हुवे किन्तु जैविकीय निर्धारण (biological assay) द्वारा इनमें कोई अन्तर नहीं पाया गया। इस प्रकार, यह धारणा कि मादा पौधों में अधिक प्रभाव है उचित नहीं मालूम होती।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जे. आर. वाल्ले, ए. जे. लापा, जी. जी. वरोस, जर. फार्मेसी फार्माकोला., २०, १०, १९६८, ७९८-७९९ ।

१५१. आबकारी अभिग्रहण में पकड़े गये इसके अनेक नमूनों के सूक्ष्म संगठन एवं तनु स्तर वर्णालेखीय विश्लेषणों का सर्वेक्षण किया गया है। कॉर्निया अप्रतिवर्तता परीक्षा (Geyer's test) द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया गया कि वर्णालेखीय स्वरूप एवं जैविकीय परिणाम में क्या कोई सम्बन्ध है।

जे. पी. जी., एम. ए. पी., कु. एस. एस. एवं एम. आर. एस., सार, २०वीं इंडि. फार्मा. कांग्रे., इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८२ ।

87. Carathamus tinctorius Linn. **सं०-कुसुम्भ**

१५२. चूंकि कुसुम्भ तेल से रक्त में कोलेस्टेरॉल कम हो जाता है इसलिए इसमें के असंतृप्त स्नेहाम्लों का अध्ययन चूहों पर किया गया। चूहों में हृद्रोध गलन (cardiac infarct) उत्पन्न करने योग्य आहार देने के बाद इन स्नेहाम्लों में से linolenic acid के देने से यह देखा गया कि कोलेस्टेरॉल कम हो जाता है।

एस. सी. नियोगी, इंडि. जर. एक्सपे. बायो., ४, २, १९६६, १२१-१२२ ।

88. Cardiospermum halicacabum Linn. **सं०-कर्ण स्फोटा**

१५३. इसके पंचांग का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें सैपोनिन तथा स्टेरॉल हैं। यह स्टेरॉल, स्टिगमेस्टेरॉल है। यह ग्लाइकोसाइड के स्वरूप में रहता है क्योंकि यह पेट्रोलियम ईथरीय अंश में नहीं पाया गया।

ए. के. दास, बुले. बोटेनि. सर्वे इंडि., ८, ३-४, १९३६, ३५७ ।

89. Carissa carandas Linn. **सं०-करमर्द**

१५४. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से ४ नये रवेदार पदार्थ प्राप्त किये गये। इनमें से C हृदय पर कार्य करता है। और भी अन्य द्रव्य पृथक् किये गये हैं।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आर. सी. रस्तोगी, एम. एम. वी., आर. पी. आर., एम. एल. डी., इंडि. जर. केमेस्ट्री, ४, ३, १९६६, १३२-१३८।

१५५. पूर्व के अध्ययन से यह मालूम हुआ था कि इसमें का हृदय पर कार्य करनेवाला अंश एक जलविलेय पीतवर्ण के चूर्ण रूप में रहता है। प्रस्तुत अध्ययन इनमें के ग्लाइकोसाइड के सम्बन्ध में है।

आर. सी. रस्तोगी, आर. पी. रस्तोगी एवं एम. एल. धर, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ५, १९६७, २१५-२१६।

90. Carum carvi Linn. **हि०-स्याह जीरा**

१५६. उपर्युक्त पौधे के फलों के स्थान पर बजार में निम्नलिखित पौधों का व्यामिश्रण किया जाता है, जिनको पहिचानने की दृष्टि से यह अध्ययन किया गया है।

1. C. bulbocastanum, 2. C. gracile, 3. C. cyminum. 4. Bunium cylindricum, 5. Bupleurum lanceolatum, 6. Spermacoce hispida (seeds), 7. Plantago pumila (seeds).

सी. के. अटल एवं ए. के. दत्ता, १७हवीं इंडि. फार्मास्यू. कांग्रेस, वाराणसी, दिस., १९६५, इंडि. जर. फार्मं., २८, ३, १९६६, ८०।

१५७. इसके एक उपभेद का चकराता में खेती करने के सम्बन्ध में अध्ययन है। इसके तेल का भी अध्ययन है।

वी. के. शर्मा एवं जे. पी. कपिल, इंडि. फारेस्टर, ९३, ३, १९६७, १८१-१८५।

91. Carum copticum Benth. & Hook. f. **हि०-अजवाइन**

१५८. इसके फलों में करीब २५% तेल रहता है। इसमें उड़नशील तैल ४·५% रहता है। इन दोनों तैलों तथा ग्लाइकोसाइड का गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है। यह अनैच्छिक मांसपेशियों में संकोच करते हैं तथा इनसे रक्त का दवाव भी कम होता है। इनमें विषैलापन भी कम होने से इनका उपयोग रक्त दबाव वृद्धि में किया जा सकता है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. मुखर्जी, एस. आर. चह्वाण एवं सिल्लू भगवागेर, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, ६, १९६७, १००३-१००६।

92. Casearia esculenta Roxb. हि०-सप्तरंगी

वक्तव्य—सप्तरंगी का वास्तविक वानस्पतिक स्रोत अब Salacia chinensis या उसकी अन्य जाति सिद्ध हुआ है। इसलिए निम्नलिखित शोध-पत्र उनके सम्बन्ध में या दोनों के सम्बन्ध में समझें जा सकते हैं।

१५९. रोगियों की चिकित्सा में तथा खरगोश में, रक्त शर्करा को कम करने का गुण इसके मूल के अपरिष्कृत सत्व में पाया गया था। इससे पृथक् किये गये एक परिष्कृत सत्व Leucoanthocyanidin के प्रारम्भिक अध्ययन में देखा गया कि यह रक्त शर्करा को बढ़ाता है। इससे अनुमान होता है कि अपरिष्कृत सत्व में दोनों प्रकार का कार्य करनेवाले अंश हैं।

एस. के. गुप्ता, ए. दास एवं आर. वी. अरोरा, सार, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, २, १९६७, ५१।

१६०. इससे यकृत द्वारा ग्लाइकोजनलयन (Glycogenolysis) में निरोध होता है।

एस. एस. गुप्ता, जे. आर. डी. वल्डेयर्स, वी. पी. गर्ग एवं एम. राय, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., सार, ११, २, १९६७, ५६-५७।

१६१. मधुमेह में उपयोग की दृष्टि से इसके मूल के विभिन्न सत्वों का अध्ययन प्राणियों में किया गया। जलीय तथा सुरासारीय सत्वों में लाभ-दायक गुण हैं। मधुमेह की साधारण अवस्था में इससे जो लाभ होता है वह सम्भवतः इसके द्वारा इन्सूलीन के ऊतक प्रभाव को बढ़ाने से होता है।

एस. एस. गुप्ता, एस. एल. सी. वर्मा, वी पी. गर्ग एवं श्रीमती पी. खण्डेलवाल, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, ७, १९६७, ७५४-७६३।

१६२. मधुमेह के रोगियों में भोजन पूर्व इसके क्वाथ का उपयोग किया गया। इनमें से ४६ रोगियों में अच्छा लाभ, ७८ में साधारण लाभ तथा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२२ में नगण्य प्रभाव रहा। बाल मधुमेही में लाभ नहीं था। कोई अन्य तीव्र दुष्परिणाम नहीं देखे गये।

आर. सी. डी. नौटियाल, ॲन्टिसेप्टिक, ६४, १२, १९६७, ९०७-९१६, नागा., ११, ११, १९६८, ५७१-५८०।

१६३. स्वस्थ मनुष्यों एवं मधुमेह के रुग्णों में इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसमें रक्तगत शर्करा की मात्रा को कम करने की शक्ति अन्य आधुनिक औषध टोलब्यूटामाइड की तुलना में बहुत कम है। २५ ग्राम से अधिक मात्रा में इससे हृल्लास एवं वमन आदि दुष्परिणाम होने लगते हैं।

एस. के. कश्यप, एम. एम. एस. अहूजा, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, १५५-१६०।

93. Cassia species

१६४. इसकी विभिन्न जातियों का रासायनिक विवेचन किया जा चुका है। प्रस्तुत अध्ययन में C. nodosa, C. grandis एवं C. rangigera के पत्रों का विवेचन है।

कु. एन. एन. काजी, सार, २० इंडि. फार्मा. कांग्रे., इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२ १९६८, २८२।

94. Cassia acutifolia Del. Syn. C. senna Linn. (Alexandrian Senna).

95. Cassia angustifolia Vahl. (Tinnevelly Senna).

हिं०-सनाय

१६५. चूंकि इन दोनों की स्वतंत्र सत्ता के विषय में मतभेद था इसलिए अनेक नमूनों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया। वास्तव में यह दो स्वतंत्र जातियाँ (Species) हैं एवं प्रथम का उचित नाम C. senna है। इनका पार्थक्य, बीज तथा फली के स्वरूप तथा पत्तों के रन्ध्रांक (Stomatal index) से आसानी से हो सकता है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जे. डब्लू. फेयरवेयर्न एवं ए. वी. श्रेष्ठा, लायडिया, ३०, १, १९६७, ६७-७२ ।

96. Cassia fistula Linn. **सं०-आरग्वध**

१६६. इसकी छाल एवं काष्ठसार के रासायनिक विश्लेषण से एक Leucoanthocyanidin-Fistucacidin एवं Barbaloin तथा Rhein प्राप्त किये गये ।

वी. के. मूर्ति, टी. वी. पी. राव एवं वी. वेंकटेस्वरलू, टेट्रा., २३, १९६७, ५१५-५१८ ।

१६७. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण इस अध्ययन में है। इसमें अयुक्त ह्रीन (free rhein), Rhein ग्लूकोसाइड एवं Sennoside A तथा Sennoside B पाये जाते हैं। विभिन्न ऋतुओं में इनकी मात्रा का अध्ययन भी किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि इनमें काल के अनुसार पर्याप्त अन्तर होता है। सेनोसाइड केवल पुष्पकाल में पाये जाते हैं जो फलोद्गम के बाद काफी कम हो जाते हैं जब कि उस समय (फलोद्गम) ह्रीन की उपस्थिति होने लगती है जो पतझड़ के समय अधिक रहती है। इसी प्रकार पुष्प की पंखुड़ियाँ एवं कलिका में अत्यल्प Rhein के साथ Sennidine रहता है किन्तु सेनोसाइड केवल कलिका में रहता है।

एन. एन. काजी, एम. एल. खोराना, एम. एन. संघवी, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १, १९६८, ८-११ ।

97. Cassia marginata.

१६८. इसके फूलों में प्रधान रूप से leucoanthocyanidin एवं कुछ anthocyanin रहता है।

डी. आदिनारायण एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, २, १९६६, ७३-७५ ।

98. Cassia obtusifolia Linn.

99. Cassia tora Linn. **सं०-चक्रमर्द**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१६९. इस शोधपत्र में इस बात का समर्थन किया गया है कि यह दोनों वस्तुत: भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं, न कि समानार्थी नाम जैसा कुछ विद्वानों का मत है।

आर. मिश्रा, जे. एस. सिंह एवं के. पी. सिंह, करेण्ट साइन्स, ३७, १३, १९६८, ३८१-३८३।

100. Cassia occidentalis Linn. सं०-कासमर्द

१७०. इसके बीज, पत्र एवं मूल के विभिन्न सत्वों में से सुरासार, बेंझीन एवं पेट्रोलियमईथर द्वारा निकाले सत्वों में जीवाणुविरोधी गुण पाया गया जो इनमें के उड़नशील तैल के कारण है। तनुस्तर वर्ण लेखीय अध्ययन (Thin layer chromatography) से देखा गया कि पत्र तैल में १०, मूल तैल में ९ एवं बीज तैल में ६ घटक होते हैं।

के. एन. गैंड,, आर. डी. बुधिराज, आर. एन. कौल, इंडि. जर. फार्मे., २८, ९, १९६६, २४८-२४९।

१७१. इसके पत्तों का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन तथा रासायनिक अध्ययन किया गया है।

देखें–१७३।

101 Cassia senna Linn.

देखें–१६५।

102. Cassia siamea Linn. म०-कसीड

१७२. इसके तने की छाल से एक द्रव्य lupenone प्राप्त किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, आर. यु., एस. के. एस., एस. वी., जर. इंडि. केमि. सोसा. ४३, १, १९६६, ६३-६४।

103. Cassia tora Linn.

१७३. इस द्वितीय लेख में C. tora L. एवं C. occidentalis L.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

के पत्रों का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक तथा रासायनिक अध्ययन किया गया है। चर्मरोगों में इनकी उपयोगिता इनमें के chrysophanol के कारण है।

सी. एस. शाह, एस. एम. जे., एस. कादरी एवं कु. एम. पी. त्रिपाठी, सार, २० इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८२।

१७४. C. tora यह C. obtusifolia से भिन्न एक स्वतन्त्र जाति है।

देखें–१६९।

104. Catharnthus roseus (L) G. Don. **हि०-सदाबहार**

१७५. सदाबहार का उपर्युक्त लैटिन नाम निर्धारित किया गया। पूर्व नाम Vinca rosea को अशुद्ध सिद्ध किया गया है।

देखें–७००।

105. Cedrela toona Roxb. **हि०-तून**

१७६. इसके पत्तों में पाई जानेवाली परिवर्तनशीलता का अध्ययन किया गया है। सामान्यतः इसके पत्र असमपक्षवत् विभक्त (imparipinnate) होते हैं किन्तु समपक्षवत् (Pinnate) तथा द्विपक्षवत् विभक्त प्रकार के पत्र पाये जाने का उल्लेख किया गया है।

एस. आर., सी. एम., बी. ए. एवं बी. डी., साइन्स, कल्चर, ३३, ९, १९६७, ४०५-४०६।

१७७. इसके काष्ठ से पृथक् किये गये एक नये Sesquiterpene alcohol की संरचना का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त इनमें से कुछ के आंशिक संश्लेषण का भी विवेचन है।

बी. ए. नाग संपागी, एल. यांकोव एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., १६, १९६८, १९१३-१९१८।

106. Cedrus deodara (Roxb.) Loud. **हि०-देवदार**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१७८. इसके सुगंधि तैल में के दो प्रमुख Sesquiterpene–α and β Himachalenes की संरचना एवं विन्यास रसायन का विवेचन है।

टी. सी. जोसेफ एवं सुखदेव, टेट्रा., २४, १९६८, ३८०९-३८२७, ३८४१-३८५२।

१७९. इसमें के सुगन्धि तैल के एक अन्य sesquiterpene-Himachalol के पृथक्करण तथा संरचना का अध्ययन है।

एस. सी. बिसार्या एवं सुखदेव, टेट्रा. २४, १९६८, ३८६१-३८६७।

१८०. एक अन्य Sesquiterpenoid-Allohimachalol का विवेचन है।

एस. सी. बिसार्या एवं सुखदेव, टेट्रा. २४, १९६८, ३८६९-३८७९।

107. Celastrus paniculatus Willd. **सं०-ज्योतिष्मती**

१८१. मालकांगुनी (हिं०) के तेल के पॉलीइस्टर का परीक्षण श्वेत चूहों पर किया गया। केन्द्रीय वातनाड़ी संस्थान पर इसका प्रभाव सौमनस्यकारक (Tranquiliser) है तथा साथ ही साथ इससे सुस्ती नहीं होती। अधिक मात्रा में यह उत्तेजक है।

जोगलेकर, जी. बी., बलवानी, जे. एच. एवं ब्राह्मे, जी. एन., जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६६, १९०-१९५।

108. Celtis australis Linn. **पं०-खर्क, ब्रमजी**

१८२. इसकी छाल के रासायनिक विश्लेषण से Betulin, 3, 3'--di-o-methylellagic acid एवं उसका क्षाराभ, gallic acid एवं quebrachitol ये द्रव्य पाये गये।

वी. एम. चारी, एस. नीलकण्टन एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ५, १९६८, २३१–२३४।

109. Centella asiatica (Linn.) Urban; Syn. Hydrocotyle asiatica Linn. **सं०-मण्डूकपर्णी, हिं०-ब्राह्मी (उ० प्र०)**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१८३. ४५ से ५० आयु के ४३ स्वस्थ व्यक्तियों में इसके पंचांग के चूर्ण की गोलियों का उपयोग ६ मास तक किया गया। शरीर के विभिन्न घटकों आदि के अध्ययन से देखा गया कि इसमें रसायन गुण है। तुलनात्मक अध्ययन में ये परिणाम पुनर्नवा (B. diffusa) में दृष्टिगोचर नहीं हुए।

एम. ह्वी. आर. अप्पाराव, एस. पी. उषा, एस. एस. राजगोपालन्, आर. सारंगन, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ७९–८५।

१८४. भारत में उत्पन्न हुए इस पौधे के रासायनिक विश्लेषण से Asiatic acid नामक टर्पिनाइड तत्व प्राप्त किया गया जो मॅडागास्कर में होनेवाले पौधे का प्रमुख अंश है।

टी. दत्ता एवं यू. पी. वसु, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ११, १९६७, ५८६–५८७।

१८५. इसके terpenoid के अध्ययन के अन्तर्गत Isothankuniside नामक Triterpene glycoside के शुद्ध रूप में प्राप्त करने तथा Isothankunic acid की रासायनिक संरचना के निर्धारण के सम्बन्ध में यह अध्ययन है।

टी. दत्ता एगं यू. पी. वसु, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ९, १९६८, ५४३–५४५।

१८६. इसके स्वरस एवं उससे प्राप्त अन्य द्रव्य, Isothankuniside एवं BK. Compound में चूहों में मुख द्वारा देने से प्रजनन विरोधी गुण पाया गया।

टी. दत्ता एवं यू. पी. वसु, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायो., ६, ३, १९६८, १८१–१८२।

110. Centipeda minima (Linn.) A. Br. et Aschers.

हि०-नकछिकनी

१८७. इसके विश्लेषण से इसमें lupeol acetate, lupeol, hexacosenol, β-sitosterol एवं stigmasterol पाये गये हैं।

ए. बी. सेन एवं वाइ. एन. शुक्ल, जर. इंडि. केमि. सोसा., सार, ६ ठवाँ वार्षिक सम्मेलन, ४५, १९६८, ४१–४२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

111. Cestrum diurnum.

112. C. nocturnum.

१८८. इनके पत्तों से saponin पृथक् किये गये एवं इनके गुण कर्मों का अध्ययन किया गया तथा साथ में इनके कार्यों की तुलना हृदय पर कार्य करनेवाले ग्लाइकोसाइड Quabain से की गई।

ए. आर. राय एवं एम. एल. चटर्जी, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायो. ६, ३, १९६८, १९०–९२।

113. Chenopodium album Linn. हि-बथुवा

१८९. इसका रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें के अविलेय अंश में magnesium oxalate की उपस्थिति प्रतिपादित है।

नि. च. शर्मा एवं वि. कु. सूर, करेंट साइन्स, ३५, ८, १९६६, २०७–२०८।

114. Chloroxylon swieteina DC. हि०-भिर्र ; म०-बिल्लु

१९०. इसके गोंद के रासायनिक संगठन के विषय में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. बोस, एन. एन. मोदी एवं एस. मुकर्जी, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ८, १९६८, ४२८–४३०।

१९१. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त द्रव्यों में से एक नये Furanocoumarin–Xylotenin के स्वरूप का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. के. तालपत्रा, कु. एम. बी., श्रीमती बी. टी. एवं बी. सी. डी., जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ९, १९६८, ८६१–८६३।

115. Chonemorpha macrophylla G. Don.

१९२. इससे प्राप्त क्षाराभ Chonemorphine के स्वरूप का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. चटर्जी एवं बी. दास, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ४, १९६७, १४६–१५० ।

116. Chrysanthemum parthenium. (L) Bernh.

१९३. इससे प्राप्त Parthenolide नामक Sesquiterpenic lactone के परिशुद्ध विन्यास (absolute configuration) का निर्धारण किया गया है।

ए. एस. वावडेकर, जी. आर. केलकर एवं एस. सी. भट्टाचार्य, टेट्रा. लेट., ११, १९-६६, १२२५–१२२७।

117. Cicer arietinum Linn. **सं०-चणक**

१९४. शरीर के कोलेस्टेरॉल को कम करने की दृष्टि से चने के स्नेहीय सत्व (lipid extract) का अध्ययन चूहों में किया गया। तुलना के लिये कुसुम्भ, सरसों तथा चिनियाबदाम के तेलों का उपयोग किया गया। यह देखा गया कि चने का स्नेहीय सत्व सबसे अधिक शक्तिशाली है एवं यह सम्भवत: इसका उत्सर्ग बढ़ाकर कार्य करता है जब कि अन्य स्नेहों से कोले-स्टेरॉल सीरम से यकृत या अन्य धातुओं में चला जाता है।

के. एस. माथुर, एन. सी. शर्मा, आर. डी. शर्मा, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, ८, १९६८, १२५१–१२५५।

118. Cinnamomum Species. **सं०-नागकेशर**

१९५. गुजरात में नागकेशर के नाम से बिकने वाले तीसरे द्रव्य के स्थूल तथा सूक्ष्म स्वरूप का विवेचन है। इसके पूर्व दो का विवेचन किया जा चुका है। विभिन्न विक्रेताओं से प्राप्त नमूनों में से केवल एक में Mesua ferrea के केशर थे। ७ स्थानों से Ochrocarpus longifolius B. & H. की कलिकाएँ प्राप्त हुईं तथा ४ स्थानों से Cinnamomum की किसी जाति के अपक्व फल आये। यह फल सम्भवत: C. wightii के हो सकते हैं एवं इसी का स्थूल तथा सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत है।

कु.९ स. सत्कोपन एवं पी. जे. थॉमस, नागा., ११, ९, १९६८, ४७४–४७७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

119. Cinnamomum camphora Siebold.

१९६. इसके तेल के नीले अंश से दो नये Sesquiterpenoid–Campherenone एवं Campherenol पृथक् किये गये जिनके स्वरूप का निर्धारण किया गया है।

एच. एच., एन. एस. एवं टी. टी., टेट्रा. लेट., ५०, १९६७, ५०६९–५०७०।

120. Cinnamomum wightii Meisn.

देखें–१९५, २७६।

121. Cissampelos pareira Linn. सं०-पाठा

१९७. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण सम्बन्धी इस तीसरे लेख में इसमें के क्षाराभ Hayatinin के रासायनिक स्वरूप के सम्बन्ध में अध्ययन है।

ए. के. भटनागर एवं एस. पी. पोपली, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ३, १९६७, १०२–१०४।

१९८. प्रस्तुत लेख में इसके मूल से प्राप्त एक क्षाराभ Hayatidin के विन्यास रसायन का विवेचन किया गया है।

ए. के. भटनागर एवं एस. पी. पोपली, एक्सपेरिएन्शिया, २३, ४, १९६७, २४२–२४३।

१९९. प्रस्तुत लेख में इसकी जड़ में पाये गये प्रधान Quaternary alkaloid—Cissamine के रासायनिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

एफ. अनवर, एस. पी. पोपली, आर. एम. श्रीवास्तव एवं एम. पी. खरे, एक्सपेरिएन्शिया, २४, १०, १९६८, ९९९।

122. Cissus quadrangularis Linn.; Syn. Vitis quadrangularis Wall. हिं०-हडजोड़

२००. इससे पृथक् किये गये एक स्टेरायड का प्राणियों में उत्पन्न किये गये भग्न एवं भग्न के रोगियों पर अध्ययन किया गया है। प्राणियों में

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आइसोटोप की सहायता से यह देखा गया कि अस्थिभग्न-रोपण की तीनों अवस्थाओं पर इसका लाभदायक प्रभाव पड़ता है। २२ रोगियों के अध्ययन में यह देखा गया कि इसके सूचिका भरण द्वारा प्रयोग से शीघ्र लाभ होता है। वृद्ध की अपेक्षा तरुण रोगी में इससे अधिक लाभ देखा गया।

जे. डी. गोडे, गु. च. प्रसाद, एस. पी. सेन एवं के. एन. उडुप, जर. इंडि. मेडि. एसो., ४६, ९, १९६६, ४७५–४८०।

२०१. इसके रासायनिक विश्लेषण के सम्बन्ध में इस दूसरे लेख में इसमें के स्टेरायड के दो अंशों का अध्ययन प्रस्तुत है।

एस. पी. सेन, करेण्ट साइन्स, ३५, १२, १९६६, ३१७।

२०२. इसके काण्ड से एक ग्लूकोसाइड प्राप्त किया गया। इसके गुण-कर्मों का प्राणियों में अध्ययन किया गया। इससे हृदय की गति कम होती है तथा रक्त दबाव कम होता है। गिनीपिग में इसकी न्यूनतम मारक मात्रा १५·५ मि० ग्रा० प्रति किलो है।

व्ही. एस. सुब्बू, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., सार, १२, २, १९६८, १५।

123. Citrullus colocynthis Schrad. **सं०-इन्द्रवारुणी**

२०३. इसके मूल से प्राप्त Coloside A नामक ग्लाइकोसाइड का अध्ययन किया गया है। यह पृथक्कृत गर्भाशय संकोच को कम करता है। खरगोश के आंत्र का संकोच नहीं करता। चूहों में मुख द्वारा देने से विरेचन हुआ किन्तु सूचिका द्वारा नहीं हुआ। सम्भवत: इसकी क्रिया मुख द्वारा देने के बाद इसमें परिवर्तन होने से होती हो या गर्भाशय संकोचक आदि कहे गुण किसी अन्य अंश से हों। इसमें आंत्र पर हिस्टामीनरोधी एवं एसिटिल-कोलीन रोधी क्रियाएँ पाई गईं। इससे प्राणी पृथक्कृत हृदय के संकोच एवं गति में कमी होती है।

एस. पी. बनर्जी, पी. सी. डण्डिया, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, २, १९६७, ३२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

124. Citrus reticulata Blanco. **हि०-नारंगी, सन्तरा**

२०४. इसके फलों के छिलके के रासायनिक पृथक्करण से Tangertin, Citromitin, 5-0–desmethylcitromitin, hesperidin एवं neohesperidin प्राप्त किये गये।

वी. पी. चालिहा, जी. पी. शास्त्री एवं पी. आर. राव, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ६, १९६७, २३९–२४१।

125. Clausena dentata (Willd.) R. & S.

२०५. इसके मूल की छाल से दो नये Coumarin–Dentatin एवं Nordentatin पृथक् किये गये जिनकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

टी. आर. गोविन्दचारी, वी. आर. पाई, पी. एस. सुब्रह्मनियम एवं एन. मुथुकुमार स्वामी, टेट्रा., २४, १९६८, ७५३–७५७।

126. Clausena heptaphylla Wt. & Arn.

२०६. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से दो नये Pyranocoumarins—Clausenin एवं Clausenidin पृथक् किये गये जिनके स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

वी. एस. जोशी एवं वी. एन. कामत, टेट्रा. लेट., ४६, १९६६, ५७६७–५७७३।

२०७. इसके मूल से दो नये pyranocoumarins—Clausenin एवं Clausenidin पृथक् किये गये एवं इनकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

वी. एस. जोशी, वी. एन. कामत एवं ए. के. सक्सेना, टेट्रा., २३, १९६७, ४७८५–४७८९।

२०८. इससे प्राप्त एक नये क्षाराभ Haptaphylline की संरचना का निर्धारण किया गया है।

वी. एस. जोशी, वी. एन. कामत, ए. के. सक्सेना एवं टी. आर. गोविन्दचारी, टेट्रा-लेट., ४१, १९६७, ४०१९–४०२२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

127. Claviceps purpurea Linn. अं०-Ergot

२०९. उत्तर प्रदेश के उष्ण कटिबन्धीय मैदानों में इसके सम्वर्धन करने के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है। लखनऊ के राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में किये गये प्रयोगों में प्रर्याप्त सफलता प्राप्त हुई क्योंकि इसमें एरगोटॉक्सिन क्षाराभ की मात्रा ०·२७% तक पाई गई जो भारतीय अधिकृत मानक से अधिक है।

एल. पी. मिश्र, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ७१–७६।

128. Clerodendron indicum (Linn.) Kuntze सं०-भारंगी

देखें–२१४।

129. Clerodendron inerme (Linn.) Gaertn. हिं०-लंजई

२१०. इसके पत्तों के जलीय एवं सुरासारीय सत्वों का प्राणियों में गुणकर्मात्मक अध्ययन किया गया। इसके जलीय सत्व में एसिटिलकोलीन सदृश क्रिया पाई गई। यह अॅड्रीनलीन के रक्तदवाव वृद्धिकर प्रभाव को बढ़ाता है। यह उद्वेष्ठन निरोधी तथा गर्भाशय संकोचक है। इसके सुरासारीय सत्व में रक्तदवाव ह्रासकर एवं उद्वेष्ठन निरोधी गुण पाया गया। उपर्युक्त कर्मों के लिये आवश्यक मात्रा से अत्यधिक मात्रा में मृत्यु हुई।

एम. ए. पटेल, नागा., १०, ५, १९६७, २०४–२१०।

130. Clerodendron infortunatum Linn. हिं०-भांट

२११. इसके मूल में पाये जानेवाले steroid glucoside का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। Momordica charantia से पाये गये ग्लाइकोसाइड से यह बहुत कुछ समान है।

ए. के. बरुआ, पी. के. सान्याल एवं पी. चक्रवर्ती, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४४, ६, १९६७, ५४९–५५१।

131. Clerodendrum phlomidis Linn f.

सं०-अग्निमंथ लघु; हिं०-टेकार

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२१२. इसके पत्र मधुमेह में लाभदायक होने से इनका स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं मात्रात्मक मूल्य आदि प्रस्तुत किये गये हैं जिससे इनकी पहचान आसानी से हो सके तथा बृहद् अग्निमंथ से पार्थक्य भी किया जा सके।

कृ. च. चुनेकर एवं के. रघुनाथन्, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ४८–५६।

२१३. इसके काण्ड में D–Mannitol, β-D glucoside of B. Sitosterol, B. Sitosterol एवं Ceryl alcohol ये द्रव्य पाये गये।

आर. के. गुप्त, एस चन्द्र एवं वी. महादेवन, इंडि. जर. फार्मेसी, २९, ३, १९६७, १०२।

132 (i) Clerodendron serratum (Linn.) Moon.

(ii) Clerodendron indicum Kuntze सं०-भारंगी

२१४. भारंगी नाम से प्रयुक्त उपर्युक्त दोनों वनस्पतियों के मूल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। द्रव्य विनिश्चय की दृष्टि से दोनों के विभेदक लक्षण दिये गये हैं।

सं. प्रसाद, र. ला. खोसा, अ. कु. वांही एवं र. च. भारद्वाज, जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, २, १९६७, २२३–२२९।

२१५. C. serratum का सुरासारीय सत्व हिस्टामीन की कमी करके उससे होनेवाले दुष्परिणाम जैसे—रक्त दवाव का कम होना एवं श्वसनिकाओं का संकोच होना आदि को कम करता है।

एन. के. गुप्त, एस. एस. गुप्त, महेशराय, इण्डि. जर. फीजियोला. फार्माकोला., सार, ११, २, १९६७, ५५; इण्डि. जर. मेडि. साइ. २१, १२, १९६७, ७९५–७९९।

133. Clerodendron splendens G. Don.

२१६. इसके पत्तों का सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

जे. ए. इनामदार, प्रोसीडिंग इण्डि. अॅकेडेमी साई., बी, ६७, १, १९६८, ८–१७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

134. Clitorea ternatea Linn. सं०-अपराजिता

२१७. इसके बीजों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

डी. के. कुलश्रेष्ठ एवं एम. पी. खरे, करेंट साइन्स, ३६, ५, १९६७, १२४–१२५।

135. Cocos nucifera Linn. सं०-नारिकेल

२१८. चूँकि इसकी जटा को जलाकर निकाला तेल चर्मरोगों में प्रयोग किया जाता है इसलिये इसके जीवाणुनाशक गुण का अध्ययन किया गया एवं परिणाम उत्साहवर्धक पाये गये।

के. एन. गौंड एवं ए. के. सिंगला, इण्डि. ड्रग्स, ४, १२, १९६७, ५१–५४।

136. Colchicum Sp. हिं-सुरंजान

२१९. इनके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक समीक्षा की गई है। इनका रासायनिक संगठन, विभिन्न भेद, सत्व परिमापन आदि का विवेचन किया गया है।

के. आर. फेल एवं डोरीन रैमूस्डेन, लायडिया, ३०, २, १९६७, १२३–१४०।

137. Commelina benghalensis Linn. हिं०-केना

२२०. चालीस रोगियों में इसके कल्क को, ६ माशा दो बार, की मात्रा में प्रयोग किया गया। यह देखा गया कि सभी प्रकार के शोफ में यह निरापद मूत्रल है। यकृत जन्य शोफ में इससे लाभ नहीं होता।

एस. के. मिश्रा एवं य. न. उपाध्याय, करेन्ट मेडि. प्रॅक्टि., ११, ३, १९६७, १६६–१७१।

138. Commiphora mukul (Hook. ex Stocks) Engl. सं०-गुग्गुलु

२२१. इसके गोंद के रासायनिक अध्ययन के सम्बन्ध में यह तीसरा लेख है जिसमें इसके methylation तथा periodate oxidation सम्बन्धी अध्ययन है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. बोस एवं के. सी. गुप्त, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, २, १९६६, ८७–८९।

२२२. इसमें आमवात के ९८ रोगियों पर किये गये इसके परीक्षण का परिणाम है। आमवात तथा सन्धिवात में इससे निश्चित लाभ देखा गया। बहुत बढ़े हुए रोगियों में कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। इससे कोई दुष्परिणाम नहीं हुवे।

पु. देव, ह्यूमेटिस्म, ३, ३, १९६८, १०४–१११।

२२३. चूजों में कृत्रिम कोलेस्टेरालाधिक्य (hypercholestraemia) उत्पन्न करके, गुग्गुलू के विभिन्न अंशों के, इसको कम करने के प्रभाव का अध्ययन किया गया! कोलेस्टेरालाधिक्य को रोकने की क्षमता की दृष्टि से भी प्रयोग किये गये। प्रथम प्रयोग में, अंश 'ए' में सबसे अधिक, अंश 'सी' में मध्यम एवं अंश 'बी' में सबसे कम क्षमता पाई गई। द्वितीय प्रयोग में यह देखा गया कि प्रतिबन्धन की दृष्टि से इनमें से किसी अंश में लाभदायक गुण नहीं हैं।

वी. एल. मेहता, सी. एल. मल्होत्रा एवं एन. एस. कालरा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, ३, १९६८, ९१–९५।

२२४. खरगोशों में कोलेस्टेरॉल तथा वनस्पति घी पिलाकर कृत्रिम रक्त स्नेहमयता उत्पन्न की गई एवं उनमें गुग्गुलू का प्रयोग किया गया। यह देखा गया कि इससे रक्तगत स्नेह की मात्रा एवं स्कंदन शक्ति में कमी हो जाती है। इन परिणामों तथा शास्त्रीय आधार पर इसका मेदोरोग से ग्रस्त एवं हृद्रोग तथा पक्षवध के रुग्णों पर, जिनमें रक्त-स्नेहमयता प्राय: अधिक हो जाती है, उपयोग किया गया जिसमें पर्याप्त सफलता मिली। गुग्गुलू का उपयोग स्नेहमयता जनित, रक्तस्कन्दन को कम करने के लिये लाभदायक है जिससे तज्जन्य हृद्रोग एवं पक्षवध आदि रोगों का प्रतिबधन किया जा सकता है।

एस. एन. त्रिपाठी, वी. वी. एस. शास्त्री एवं जी. वी. सत्यवती आचार्या, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, १४०–१५४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

139. Convolvulus pluricaulis Chois. सं०-शंखपुष्पी

२२५. इसका स्वरस कुत्ते के रक्तचाप को कम करता है तथा मेढक एवं कुत्ते के हृदय के लिये भी वलदायक है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से शंखपुष्पी एवं जटामांसी का प्रभाव कूष्मांड, रसोन एवं गुंजा की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

गो. ना. चतुर्वेदी, आर. के शर्मा, एस. पी. सेन, जर. रिस. इण्डि. मेडि. १, १, १९६६, ५७–६७।

140. Cordia myxa Roxb. non Linn. हि०-लिसोडा

२२६. इसके बीजों के तैल में पाये जानेवाले घटकों का अध्ययन किया गया है।

आर. डी. तिवारी, के. सी. श्रीवास्तव, एस. शुक्ल, आर. के. वाजपेयी, प्लॅन्टा मेडिका, १५, ३, १९६७, २४०–२४४।

141. Coronopsis didyma.

२२७. चूंकि शाहतरा या पित्तपापडा में इसकी मिलावट पाई गई इसलिये इसका Fumaria indica के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

देखें–३३६।

142. Coscinium fenestratum (Gaertn) Colebr.

सं०-कालीयक

२२८. उपर्युक्त वनस्पति आयुर्वेद का कालीयक द्रव्य है, यह सिद्ध किया गया है।

रा. सु. सिंह एवं भृ. ना. सिंह, इण्डि. ड्रग्स, ५, १, १९६७, १५–१६।

143. Crataeva nurvala Buch.-Ham. हि०-वरुण

२२९. प्रस्तुत शोधपत्र में आयुर्वेदिक उद्यान से शीत ऋतु में संग्रहीत

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वरुणत्वक् के सुरासारीय निस्सार के जलविलेय अंश का विभिन्न अवयवों पर प्रभाव देखा गया है। इसमें गर्भाशय संकोचक एवं कोलीन घर्मोत्तेजक (cholinergic) क्रिया पाई गई। इसमें शोथहर, आक्षेपहर, वेदनाहर तथा मूत्रोत्सर्ग प्रबलीकरण (diuretic potentiating) क्रिया नहीं पाई गई। अन्तः विद्रधि में जो इसका उपयोग बतलाया जाता है वह सम्भवतः इसके जीवाणु नाशक गुण के कारण हो सकता है।

दी. ना. प्रसाद, प्र. कु. दास एवं रा. सु. सिंग, जर. रिस. इण्डि. मेडि. १, १, १९६६, १२०–१२९।

२३०. इस लेख में उपर्युक्त वृक्ष की त्वचा का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सं. प्रसाद, रा. सु. सिंह, आई. सुन्दरेश, जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, १, १९६६, १४९–१५४।

२३१. शस्त्रकर्म के पूर्व वरुण एवं शिग्रुत्वक् क्वाथ को 'पूर्वकर्म' की दृष्टि से देने पर देखा गया कि शल्यकर्मोत्तर स्वास्थ्य लाभ की अवधि में २५% की कमी हुई।

प्र. ज. देशपाण्डे, गु. च. प्रसाद, स. दे. राय, प. सु. शंकरन, जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, १, १९६६, १५–२८।

144. Crocus sativus Linn. सं०-कुंकुम

२३२. इसकी खेती के सम्बन्ध में अध्ययन प्रस्तुत है। कुमाऊँ तथा उत्तराखण्ड में इसकी खेती में सफलता प्राप्त हुई है।

आर. पी. श्रीवास्तव, इण्डि. ड्रग्स, ६, १, १९६८, १७–२१।

145. Crotalaria Sp.

२३३. इसके क्षाराभों में से एक नया pyrrolizidine–aminoalcohol पृथक् किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सीं. के. अटल, के. के. कपूर, सी. सी. जे. सी., एल. डब्लु. एस., टेट्रा. लेट., ६, १९६६, ५३७–५४४।

146. Crotalaria Sp.

२३४. इस genus की विभिन्न species के रासायनिक अध्ययन सम्बन्धी इस ७ वें लेख में C. mucronata, C. brevifolia एवं C. laburnifolia के प्रमुख क्षाराभों का अध्ययन प्रस्तुत है। इनमें से प्रथम दो से Usaramine एवं तीसरे से Anacrotine नामक क्षाराभ पाये गये।

आर. एस. एस, आर. एन. जी., सी. के. ए., सी. सी. जे. सी. एवं एल. डब्लू. एस., इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, १२, १९६७, ६५५–६५६।

147. Crotalaria agatiflora Schwienf.

२३५. क्रोटेलेरिया की अनेक जातियों में विषैले तत्व होते हैं जो कैन्सर रोधी भी हो सकते हैं। इस शोधपत्र में सुरासारीय सत्व का गुणकर्मीय अध्ययन प्रस्तुत है। इसमें Madurensine नामक नया क्षाराभ पाया गया है। इसका सुरासारीय सत्व कुत्ते में रक्त दबाव को कम करता है एवं अनैच्छिक मांसपेशियों पर कुछ उद्वेष्ठनरोधी तथा शिथिल कर प्रभाव करता है।

एम. एल, शर्मा, जी. वी. सिंह एवं बी. जे. राय घटक, इण्डि. जर. एक्सपेरि. बायो., ५, ३, १९६७, १४९–१५०।

148. Crotalaria laburnifolia Linn.

२३६. इससे एक क्षाराभ Crotalaburnine अन्य वैज्ञानिकों द्वारा (एमेनुएल एवं घोष, इंडि. जर. फार्मे., २६, १९६६, ३२२-३२३) अलग किया गया है जिसका और रासायनिक अध्ययन शेषाद्रि एवं अन्य (करेन्ट साइन्स, ३६, १९६७, ३६३) विद्वानों द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन इस क्षाराभ के कुछ गुणकर्मों पर प्रकाश डालता है। प्राणियों के आंत्र पर यह पेपेह्वरीन सदृश कार्य करता है। हिस्टामीन से उत्पन्न किये गये श्वसनिका

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

संकोचों को रोकने में यह समर्थ नहीं है। प्रोकेन की तुलना में इसमें स्थानिक वेदना हर गुण अष्टमांश है।

एस. स्नेहलता एवं एम. एन. घोष, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५६, ६, १९६८, १३८६–१३९०।

२३७. इसमें कुछ शोथहर गुण पाया गया।

एच. सिंग एवं एम. एन. घोष, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., सार, १२, २, १९६८, २२।

149. Crotalaria mucronata Desv.

२३८. इसके बीजों के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त क्षाराभों में से प्रमुख क्षाराभ Mucronatinine की संरचना का निर्धारण किया गया है। यह Retrorsine का Diastereomer है। इस क्षाराभ में जीवाणुरोधी क्रिया भी नहीं पाई गई।

एन. एस. भका एवं आर के शर्मा, टेट्रा., २४, १९६८, ६३१९–६३२६।

150. Croton sparsiflorus Morong.

२३९. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक नया Proaporphine क्षाराभ पाया गया है जो Crotsparine है।

डी. एस. भाकुनी एवं एम. एम. धर, एक्सपेरिएन्शिया, २४, १, १९६८, १०–११।

२४०. इससे एक नया क्षाराभ पृथक् किया गया है जिसका नामकरण Crotoflorine किया गया एवं इसकी रासायनिक संरचना का निर्धारण भी किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं पी. एल. मजुमदार, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, १२, १९६८, १०८७–१०९०।

151. Croton tiglium Linn. सं०-जयपाल

२४१. इसके तैल के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त Tetracyclic

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

diterpene-Phorbol की संरचना एवं विन्यास रसायन (Stereochemistry) का विवेचन किया गया है ।

ई. एच., एच. बी., एच. वी., एम. जी., इ. एच, जी. के., एच. के., एच. यू. एस., सी. वी. एस. एवं एच. डब्लू. टी., टेट्रा. लेट., ३३, १९६७, ३१६५–३१७० ।

२४२. इसके तेल में कैन्सर उत्पन्न करने में सहायक द्रव्य होने का उल्लेख है । इसमें के प्रमुख द्रव्य Phorbol जो कि diterpene है, का रासायनिक अध्ययन किया गया है ।

एल. सी., एम. एल. जी, जी. जी. पी., जर. केमि. सोसा., इंग्लैंण्ड, सी, १९६८, ११, १३४७–१३६८ ।

152. Cucurbita maxima Duch. हिं०-कद्दू

२४३. इसके बीजों के कृमिघ्न गुण का अध्ययन किया गया । जल, ईथर तथा सुरासार सभी से निकाले सत्वों में यह गुण पाया गया ।

एम. सी. श्रीवास्तव एवं एस. डब्लु. सिंग, इण्डि. जर. मेडि. रिस. ५५, ६, १९६७, ६२९–६३२ ।

153. Cuminum cyminum Linn. हिं०-जीरा

२४४. इससे चूहों के स्तन उतक में ही केवल वृद्धि पाई गई, जब कि मंगरैल से इसके साथ ही दुग्धवृद्धि भी काफी होती है ।

आइ. पी. अग्रवाल, एम. वी. एस. अचर, आर. वी. बोरडकर एवं एन. राय, इंडि. जर. मेडि. रिस. ५६, ६, १९६८, ८४१–८४४ ।

154. Cupressus sempervirens Linn.

155. C. torulosa D. Don. हिं०-सुरू

२४५. इनके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से एक नया नैसर्गिक रंजक तत्व Cupressuflavone प्राप्त किया गया जिसकी संरचना का निर्धारण किया गया है ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वी. वी. एस. मूर्ति, पी. वी. रमन एवं टी. आर. शेषाद्री, टेट्रा., २३, १९६७, ३९७–४०४।

156. Curcuma longa Linn. हिं-हरदी

२४६. इसमें के रंजक द्रव्य Curcumim, जिसका अनेक क्षेत्रों में उपयोग होता हैं, पृथक् करने को एक सुधारी हुई विधि का उल्लेख है।

कु. एन. जानकी एवं जे. एल. बोस, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४४, ११, १९६७, ९८५-९८६।

157. Cuscuta reflexa Roxb. हिं०-आकाश बेल

२४७. आम के वृक्ष पर पाये गये इस पराश्रयी पौधे में Mangiferin पाया गया जो इस बात को सिद्ध करता है कि पराश्रयी पौधे के रासाय नक संगठन पर पोषद (host) पौधे का परिणाम होता है।

एस. एस. सुब्रह्मनियन एवं ए. जी. आर. नायर, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ७, १९६६, ३३५-३३६।

158. Cymbopogon martini (Roxb.) Stapf सं०-रौहिष

२४८. इसकी कृषि तथा इसके तैल के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है।

जी. वी. करीर एवं आर. एम. बेरी, इंडि. फारे., ९२, २, १९६६, १२७-१३१।

159. Cynodon–genus. सं०-दूर्वा

२४९. दूर्वा के वंश (genus) तथा उसकी भारत में प्राप्त सभी जातियों (species) का वानस्पतिक अध्ययन विस्तार के साथ किया गया है।

एस. के. जैन, बुले. बोटेनि. सर्वे. इंडि., ९, १९६७, १३४-१५१।

160. Cyperus species.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२५०. इस वंश में Ketones (Cyperenone) का अध्ययन किया गया है।

जी. ए. एन., आइ. सी. निगम एवं जे. एल. एच., टेट्रा., २४, १९६८, ३८९१-३८९७।

161. Cyperus rotundus Linn. हिं०-मोथा

२५१. इसके भारतीय भेद के उड़नशील तैल के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त sesquiterpenoids का विवेचन किया गया है। इनमें से कुछ की संरचना का निर्धारण किया गया जिनमें से एक Cyperolone से मिलता है जो कि जापान में होनेवाले पौधे के मूल में पाया गया है।

वी. एच. कपाडिया, वी. जी. नाइक, एम. एस. वाडिया एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., ४७, १९६७, ४६६१-४६६७।

162. Cyperus scariosus R. Br. हिं०-नागरमोथा

२५२. इसके मूल के उड़नशील तैल के सुरासारीय अंश से Cyperenol एवं Patchoulenol नामक दो नये sesquiterpene alcohol प्राप्त किये गये जिनकी रासायनिक संरचना का अध्ययन है।

एस. बी. नेराली एवं के. के. चक्रवर्ती, टेट्रा. लेट., २६, १९६७, २४४७-२४४९।

163. Dalbergia lanceolaria Linn. f. हिं०-गौरख

२५३. आमवात के विभिन्न प्रकार के रोगियों को गौरख का अवलेह दिया गया जिससे पर्याप्त लाभ देखा गया।

सु. ना. त्रिपाठी एवं के. पी. शुक्ला, जर. मेडि. साइ., ५, १, १९६४, ७५-८९।

२५४. चूहों में फार्मेलीन द्वारा कृत्रिम रूप से उत्पन्न किये गये सन्धि-शोथ में इसका उपयोग किया गया जिसमें देखा गया कि इससे शोथ कम होता है यद्यपि यह लाभ आधुनिक औषध जैसे कॉर्टिजोन या ब्यूटॅझोलिडिन की तुलना में कम रहा।

गो. ना. चतुर्वेदी एवं रा. ह. सिंह, जर. मेडि. साइ., ५, १, १९६४, ६९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२५५. चिकित्सा के उपर्युक्त परिणामों की पुष्टि के साथ ही इस शोध-पत्र में, चूहों में उत्पन्न किये गये सन्धिशोथ पर इसके विभिन्न निःसारों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। स्थूल औषध तथा इसके पेट्रोलियम ईथर निःसार से त्वरित लाभ होता है। फेनिलब्यूटॅझोन की तुलना में इससे अच्छा लाभ रहा। क्लोरोफार्म तथा सुरासारीय निःसारों में कुछ लाभ रहा। जलीय निःसार में कोई प्रभाव नहीं देखा गया।

प्रे. किशोर एवं सु. ना. त्रिपाठी, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, १, १९६६, २९-४६।

२५६. इसके ईथर, सुरासार तथा जलीय सत्वों में कुछ सन्धिशोथ हर गुण पाया गया।

रा. ह. सिंह एवं गो. ना. चतुर्वेदी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५४, ४, १९६६, ३६३-३६७।

२५७. इसके पुष्प एवं पत्रों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसमें के उपयोगी अंश ψ Baptigenin को पृथक् किया गया जो पत्र में अधिक है।

ए. महोत्रा, वी. वी. एस. मूर्ति, टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३६,१८, १९६७, ४८४-४८५।

२५८. इसके जड़ की छाल से एक नया Isoflavone glycoside–Lanceolarin पृथक् किया गया एवं इसकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

ए. महोत्रा, वी. पी. एस. मूर्ति एवं टी. आर. शेषाद्रि, टेट्रा., २३, १९६७, ४०५-४०९।

२५९. इस परीक्षण में प्रोफेसर टी. आर. शेषाद्रि द्वारा पृथक्कृत इसके एक प्रभावशाली घटक का अध्ययन किया गया। चूहों तथा रोगियों में प्रारम्भिक परीक्षण परिणामों को देखकर यह कहा जा सकता है कि यह प्रभावशाली शोथहर द्रव्य है तथा इसमें कोई विषाक्तता नहीं है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सु. ना. त्रिपाठी, प्रे. किशोर, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६७, १५५-१६६ ।

164. Dalbergia latifolia Roxb.

२६०. इसके काष्ठसार से पृथक् किये गये विशिष्ट द्रव्य Latifolin के विन्यास रसायन (Stereochemistry) का विवेचन किया गया है ।

द. कुमारी, एस. के. मुकर्जी एवं टी. आर. शेषाद्री, टेट्रा. लेट., ३१, १९६६, ३७६७-३७७२ ।

165. Dalbergia sissoo Roxb. सं०-शिशप

२६१. इसके पत्तों से एक नया Isoflavone glycoside–Sissotrin पृथक् किया गया है ।

ए. बनर्जी, वी. वी. एस. मूर्ति एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, २, १९६६, ७०-७२ ।

166. Datura and other sp. of Solanaceae. हिं०-धुस्तूरवर्ग के पत्र

२६२. प्रस्तुत लेख में निम्नलिखित ७ वनस्पतियों के पत्तों के लंब-ऊतक अनुपात, शिराद्वीपक संख्या, शिरान्तक संख्या तथा कॅल्शियम आक्जेलेट स्फटिकों के सम्बन्ध में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जिनसे इनकी पहचान आसानी से हो सकती है । इसकी आवश्यकता इसलिये है कि इनमें समान स्वरूप के रासायनिक सत्व होने के कारण बजार में इनका मिश्रण किया जाता है । 1. Datura innoxia Mill., 2. D. metel Linn. (green), 3. D. metel (purple), 4. D. meteloides Dunal, 5. D. stramonium Linn., 6. Atropa acuminata Royle, 7. Hyocyamus niger Linn.

प्रतापसिंह, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ६६-७० ।

167. Datura innoxia Miller सं०-धुस्तूर

२६३. इसके बीजों को ५% एथिल अल्कोहल में ३५° श० पर ४५ मिनट

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भिगोंकर फिर बोने से उनमें बहुगुणता (Polyploidy) आती है जिससे क्षाराभ की मात्रा भी बढ़ती है।

प्र. सिंग एवं वी. एल. कौल, इंडि. जर. एक्स्पे. बायो., ५, २, १९६७, १२८।

२६४. इसकी वृद्धि तथा इसमें के क्षाराभ की मात्रा पर indoleacetic acid का क्या प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन किया गया है।

ए. एस. सिनहा एवं के. सी. वर्मा, सार, २०वीं फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८५।

168. Datura metel var. fastuosa हिं०-धतूरा

२६५. धतूरा के पौधे पर विभिन्न वनस्पति-हार्मोन के प्रभाव का अध्ययन उसकी वृद्धि एवं क्षाराभ की मात्रा की दृष्टि से किया गया।

सी. एस. शाह एवं ए. एन. सावजी, १८वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मे., २८, १२, १९६६, ३३९।

169. Daucus carota Linn. हिं०-गाजर

२६६. इसके बीजों के जलविलेय सुरासारीय सत्व के गुणकर्मों का अध्ययन प्राणियों में किया गया हैं। इसमें क्षाराभ पाये गये। प्रारम्भिक अध्ययन में इसके कार्यों से यह मालूम होता है कि इसमें कोलीनधर्मी (cholinergic) तथा पेपेव्हरीन सदृश कार्य करने वाले अंश हैं तथा सम्भवतः हृदय बलकारक अंश भी है।

एस. एस. गंभीर, ए. के. सान्याल, एस. पी. सेन, एवं पी. के. दास, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५४, २, १९६६, १७८-१८७।

२६७. उपर्युक्त द्रव्य से दो प्रकार के Quaternary base पृथक् किये गये जिनका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इनमें से प्रथम बेस I क्लोराइड में कोलीनधर्मी क्रिया पाई गई। दूसरे बेस II की अभी पहिचान नहीं की जा सकी है।

एस. एस. गंभीर एवं अन्य, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५४, ११, १९६६, १०५३-१०५९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२६८. इसमें नाड़ी संस्थान के लिये एक विषैला अंश Carota toxin पाया गया जिसकी परीक्षा एक विशिष्ट जीवाणु Daphnia magna straus एवं चूहे पर की गई। इसकी संरचना का भी निर्धारण किया गया है। एक किलो से २ मि० ग्रा० यह अंश पाया गया। इसकी विषाक्तता (एल. डी. ५०) १०० मि० ग्रा० प्रति १०० किलो ग्राम देखी गई।

डी. जी. क्रासबी. एवं एन. एहारोन्सन, टेट्रा., २३, १९६७, ४६५-४७२।

२६९. इसके और अध्ययन से इसमें से एक Tertiary base अलग किया गया। इसमें अनैच्छिक मांसपेशी पर शिथिल कर प्रभाव पाया गया। यह कार्य पेपेह्वरीन की अपेक्षा १०-१५ गुना कम तीव्र रहा।

एस. एस. गंभीर, एस. पी. सेन, ए. के. सान्याल, एम. के. रैना एवं पी. के. दास, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार ३५।

170. Delonix regia (Boj) Raf.

२७०. इसकी छाल का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके सुरासारीय सत्व से Lupeol एवं β—sitosterol पृथक् किये गये।

एस. राय एवं पी. सेनगुप्त, जर. इंडि. केमिक. सोसाइ., ४५, ५,१९६८,४६४-४६५।

171. Delphinium denudatum Wall. हिं०-जद्वार

२७१. विषनाशक द्रव्य के रूप में जद्वार (निर्विषी) बहुत प्रसिद्ध है। अनेक विद्वानों ने इसका वानस्पतिक स्रोत उपर्युक्त पौधा लिखा है। अन्य विद्वानों ने इस वंश (genus) की अन्य वनस्पतियों जैसे—D. kashmirianum Royle एवं D. pauciflorum को इसका स्रोत बतलाया है। कुछ नें विषहीन Aconite की जातियों को जद्वार लिखा है। प्रस्तुत अध्ययन में अनेक स्थानों से संग्रहीत जद्वार नाम से बिकनेवाले द्रव्यों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया एवं इनकी तुलना D. denudatum के वास्तविक मूल से की गई। यह पाया गया कि बजार का जद्वार इससे मेल नहीं खाता। सम्भवतः

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बजार का जद्वार किसी Aconite का मूल है किन्तु Stapf (१९०५) द्वारा निश्चित किये गये इसके किसी भी भेद से यह मिलता नहीं ।

पी. एन. मेहरा एवं एच. एस. पुरी, सार, २०वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २९५-२९६ ।

172. Derris uliginosa Benth. बं०-पानलता

२७२. इसका स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण किया गया है। विभिन्न ऋतुओं में संग्रहीत नमूनों में Rotenone की मात्रा का भी अध्ययन है। यह द्रव्य इसके मूल में नवम्बर से फरवरी तक सबसे अधिक पाया जाता है।

ए. नन्दी, बी के. गुप्त एवं डी. के. संत्रा, सार, २०वीं इंडि. फार्मे, कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८४ ।

२७३. उपर्युक्त पौधे में जल-सम्वर्ध पद्धति से, नत्रजन एवं क्षारीयता की विभिन्न मात्रा का उसमें के Rotenone की मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन किया गया है। यह देखा गया कि इनको बढ़ाने से Rotenone की अधिक प्राप्ति होती है।

देखें–२७२ ।

173. Desmodium gangeticum DC. सं०-शालपर्णी

२७४. इसमें के Indole क्षाराभों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें संपूर्ण क्षाराभ की मात्रा सूखे द्रव्य (०·०१–०·०३%) की अपेक्षा ताजे द्रव्य में तिगुनी पायी गई।

एस. घोपाल एवं पी. के. बनर्जी, सार, २०वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८१ ।

174. Digitalis lanata Ehrh. हिं०-हृत्पत्री

२७५. इसके पत्तों को कमरे में सूखने देने से प्रथम २४ घंटों में इसमें सत्व की मात्रा बढ़ती है तथा वजन में ५०-६०% की कमी होती है जो आर्द्रता

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कम होने के कारण है। इसमें सत्व की मात्रा बढ़ने के लिये एक निश्चित ताप पर इसकी आर्द्रता निकल जाना आवश्यक है। पत्तों को तोड़ने के बाद तुरन्त अधिक उष्णता से सुखाया जाय या वाष्प संपृक्त हवा में सुखाया जाय तो इनके सत्व में वृद्धि नहीं होती।

एम. कुसेरा, एफ. स्टेरी एवं जे. पित्रा, प्लॅन्टा मेडि., १६, १९६८, २, १३७-१४२।

175. (i) Dillenia pentagyna Roxb. (Fam. Dilleniaceae)
मलाबार नागकेशरम्

(ii) Cinnamomum wightii Meisn. (Fam. Lauraceae)
नाट्टु नागकेशरम्, सिरुनगप्पु

२७६. दक्षिण भारत के बजार में नागकेशर (सं०) के स्थान पर जो दो द्रव्य बिकते हैं उनके वानस्पतिक स्रोत का पता उनके स्वरूप के आधार पर लगाया गया है। इनमें से प्रथम के फलों का उपयोग मद्रास तथा केरल में किया जाता है जिन्हें वहाँ मलाबार नागकेशरम् कहा जाता है। इनका संग्रह केरल मे प० घाट तथा दक्षिण कनारा के जंगलों से किया जाता है। यह ५ स्थायी एवं वर्धनशील पुष्प बाह्यदलों से आवृत रहते हैं। बाह्यदल भूरे रंग का तथा सिकुड़नदार होता है जिसके अन्दर पञ्चकोष्ठीय फल होता है जिसके प्रत्येक कोष्ठ में ३-६ काले बीज होते हैं। इनमें कोई विशिष्ट गंध नहीं होती तथा इनका स्वाद कुछ मधुराभ तथा पिच्छिल रहता है।

दूसरे के कोमल फलों का प्रयोग तमिलनाड तथा सिद्ध सम्प्रदाय के वैद्य करते हैं जिन्हें नाट्टु नागकेशरम् (या सिरुनगप्पु) कहा जाता है। इनका संग्रह तमिलनाड के पलानी एवं निलगिरी पर्वतीय जंगलों से किया जाता है। यह दो चक्रों के ६ खण्डयुक्त पुष्प बाह्यदलों से आवृत्त रहते हैं। इनमें एक बीज रहता है तथा इनकी गन्ध तेजपत्ते जैसी होती है। यह भी सम्भव है कि सिरुनगप्पु नाम से इसके अन्य भेद C. macrocarpum Hook. f. के फल भी बिकते हों।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मद्रास के वैद्य उपर्युक्त दोनों फलों का उपयोग कल्प की विभिन्नता के अनुसार करते हैं। आसव, अरिष्टों में मलाबारीय तथा लेह एवं चूर्णों में नाट्टु प्रकार का उपयोग करते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में इन दोनों वानस्पतिक नामों का उल्लेख सर्वप्रथम है।

उस्मान एस. अली, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ५७-६५।

देखें–१९५।

176. Dioscorea deltoidea Wall. ex Griseb.

२७७. भारतीय पौधों में Steroid sapogenin के अध्ययन की दृष्टि से इसकी विभिन्न जातियों का अध्ययन किया गया है। इनके स्थूल स्वरूप, चूर्णरूप में स्वरूप, उपर्युक्त जाति में Diosgenin की विभिन्न ऋतु में मात्रा आदि का अध्ययन है। अन्य पौधों का भी अध्ययन है जिनमें यह द्रव्य पाये गये हैं।

आइ. सी. चोप्रा एवं एल. डी. कपूर, इंडि. फारेस्ट., ९४, ८, १९६८, ६२०-६३०।

177. Diospyros melanoxylon Roxb. हि०-तेन्दू

२७८. इसके पत्तों में के Triterpenes का अध्ययन प्रस्तुत है।

एल. रामचन्द्र राव; सी. संकर राव एवं टी. सुन्दर रामैया, करेंट साइन्स, ३५, १८, १९६६, ४५७-४५८।

२७९. इसके काष्ठसार से पृथक् किये गये कुछ अंशों की रासायनिक संरचना का अध्ययन किया गया है। इसमें ५ प्रकार के Naphthaquinone एवं ४ प्रकार के Naphthol derivative तथा β–sitosterol, lupeol, betulin एवं betulinic acid पाये गये।

जी. एस. सीधु, ए. वी. बी. संकरम् एवं एस. महमूद अली, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, १२, १९६८, ६८१-६९१।

178. Diospyros montana Roxb. हि०-विषतेन्दू

२८०. इससे प्राप्त Diospyrin की रासायनिक संरचना का विवेचन किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. के. गांगूली एवं टी. आर. गोविन्दचारी, टेट्रा. लेट., २९, १९६६, ३३७३-३३७७।

179. Dolichos biflorus Linn. सं०-कुलत्थ

२८१. इसके सुरासारीय सत्व में मूत्रल प्रभाव (१·५ ग्राम प्रतिकिलो) पाया गया। इसके ग्लूकोसाइड में यह क्रिया २० मि. ग्रा. प्रति किलो पाई गई। इसके अन्य गुणकर्मों का भी अध्ययन किया गया है।

वी. सिंग, श्रीमती एस. प्रभू एवं वी. एन. शर्मा, सार, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, २, १९६७, ४५।

२८२. इसमें के प्रोटीन का पोषणात्मक मूल्य जानने के लिये इसके बीजों का चूर्ण चूहों को खिलाकर अध्ययन किया गया। यह शारीरिक वृद्धि को बढ़ाता नहीं। सम्भवतः इसके ये कारण हो सकते हैं—(१) कम मात्रा में सेवन, (२) आवश्यक एमिनोएसिड का अभाव या (३) किसी वृद्धि रोधक अंश की उपस्थिति।

पी. के. रे, साइन्स एण्ड कल्चर, ३४, ८, १९६८, ३५१-३५२।

२८३. चूहों को इसकी दाल खिलाने से रक्तगत शर्करा तथा कोलेस्टेराल की मात्रा कम होती है।

एम. जी. पन्त, आई. उद्दीन, यू. आर. भारद्वाज एवं आर. डी. तिवारी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, १२, १९६८, १८०८-१८१२।

180. Echium amoenum Fisch. हिं०-गुले गांवजवां

२८४. उपर्युक्त पौधे के फूल ही बजार में बिकनेवाला द्रव्य गुलेगाँवजवाँ है।

देखें–९०।

181. Eclipta alba Hassk. सं०-भृङ्गराज

२८५. इसके रासायनिक विश्लेषण से पृथक् किये गये एक नये द्रव्य Polythienyl के स्वरूप का विवेचन किया गया है। यह द्रव्य Wedelia calendulacea Less. में नहीं पाया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एन. आर. कृष्णस्वामी, टी. आर. शेषाद्रि एवं वी. आर. शर्मा, टेट्रा. लेट., ३५, १९६६, ४२२७-४२३० ।

२८६. इसके स्वरस में एलिल् अल्कोहोल एवं कार्बन टेट्रा क्लोराइड के यकृत्–हानिकर प्रभाव को रोकने का सामर्थ्य है।

जी. वी. जोगलेकर एवं जे. एच. वलवानी, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १, २, १९६७, ३२ ।

२८७. इसके मूल, काण्ड एवं पत्र का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, पीतभृंगराज (Wedelia calendulacea Less.) के साथ तुलना करते हुए किया गया है क्योंकि दोनों का भृंगराज नाम से व्यवहार होता है। प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन भी किया गया है।

पी. एन. मेहरा एवं एस. एस. हण्डा, सार, २० वीं इंडि. फार्म. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३० १२, १९६८, २८४ ।

182. Elaeodendron glaucum Pers. सं०-कृष्ण मोक्षक

२८८. इसकी भी छाल कभी-कभी भारंगी नाम से बिकती है जिसकी सूचना श्री ठा. बलवन्त सिंह जी द्वारा प्राप्त हुई।

मा. उनियाल, आयु. विकास, ६, ८, १९६७, २४-२५ ।

183. Eleusine corocana Gaertn. हिं०-रागी

२८९. चावल के स्थान पर इसका मधुमेह के आठ रोगियों में उपयोग किया गया। रक्त में (ग्लूकोस सह्यता परीक्षण) कोई खास परिवर्तन नहीं पाया गया।

जे. सी. पटेल, एम. के. धिरवानी एवं आर. डी. नरणे, इंडि. जर. मेडि. साइ., २२, १, १९६८, २८-२९ ।

184. Elsholtzia polystachya Benth.

२९०. इसके सुगन्धि तैल के रासायनिक विश्लेषण से 1, 8–Cineole एवं एक नया furan compound पाये गये।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वी. एन. वशिष्ट, कु. सी. एम. गण्डोत्रा एवं सी. के. अटल, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ३, १९६७, १३० ।

185. Embelia ribes Burm. f. सं०-विडङ्ग

२९१. विडंग की गोलियों का उपयोग केंचुए की बीमारी में लाभदायक है। इसके साथ विरेचक द्रव्य देने की भी आवश्यकता नहीं रहती एवं इससे कोई हानिकर प्रभाव भी नहीं देखा गया।

एल. वी. गुरू एवं डी. एन. मिश्रा, अॅन्टीसे., ४, १९६५, १।

२९२. कृमिघ्न गुण की दृष्टि से इसका सुरासारीय सत्व, जलीय सत्व की अपेक्षा अधिक गुणकारी है।

एल. वी. गुरू एवं डी. एन. मिश्रा, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, १, १९६६, ४७-५६।

२९३. इसके रासायनिक अध्ययन के अन्तर्गत इस सप्तम लेख में Rapanone की कुछ प्रतिक्रियाओं का विवेचन है।

वी. के. मूर्ति, टी. वी. पी. राव एवं वी. वेंकटेस्वरलू, टेट्रा., २३, १९६७, ८१७-८२४।

186. Embelia robusta C. B. Clarke सं०-विडङ्ग

२९४. बजार में इसमें २–१० % धनियाँ की मिलावट पाई गई।

आर. वी. कृष्णराव, १७ हवीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मे., २८, ३, १९६६, ८०।

187. Emblica officinalis Gaertn. सं०-आमलकी

२९५. यह देखा गया कि छोटे जंगली आँवले में, बड़े बीजू आँवले की अपेक्षा विटामिन सी अधिक रहता है। सुखानें पर यह कम हो जाता है। धूप में सुखाया जाय तो विटामिन सी बहुत नष्ट होता है। छाया में सुखाये आँवले में यह धूप में सुखाये की अपेक्षा तिगुना अधिक रहता है। इसी प्रकार आमलकी रसायन जिसमें प्रायः धूप में सुखाया जाता है विटामिन सी बहुत कम रहता है जब कि सीठी में यह अधिक रह जाता है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जी. सी. भवसार, आर. के. गुप्ता, आर. एस. सिंग, एल. वीं. गुरु, इंडि. मेडि. गजेट, ५, ८, १९६५, ४५-४८।

२९६. खरगोशों के रक्तरस पर आमलकी रसायन का अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि इससे रक्तरस के सम्पूर्ण प्रोटीन की मात्रा में वृद्धि हुई किन्तु उसके विभिन्न अंशों के अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया। इससे शरीर भार की वृद्धि भी हुई। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिप्पली रसायन में व्याधिक्षमत्व में वृद्धि होती है जब कि इसका शरीर पर उपचयात्मक (anabolic) प्रभाव होता है जो रसायन द्रव्यों के दूसरे प्रभाव-धातुओं की पुष्टि एवं आयुवृद्धि का निदर्शक है।

अ. तिवारी, सु. प्र. सेन, ल. वि. गुरु, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, १८९-१९४।

188. Enhydra fluctuans Lour. सं०-हिलमोचिका

२९७. इसका रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

एन. आर. कृष्णस्वामी, टी. आर. शेषाद्रि एवं बी. आर. शर्मा, करेंट साइन्स, ३७, ४, १९६८, ९४-९६।

189. Enicostemma littorale Blume. हिं०-नाय, मामिज्वा

२९८. पूर्व में इससे प्राप्त किया गया क्षाराभ Gentianine यह एक अवक्रमणात्मक प्रतिरूप (artefact) है। इसका पुरोवर्ती Swertiamarin है।

टी. आर. गोविन्दचारी, एस. एस. साठे एवं एन. विश्वनाथन, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ४, १९६६, २०१-२०२।

२९९. इसका रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

ज. राय एवं के. ए. ठकार, करेंट साइन्स, ३५, ६, १९६६, १४८-१४९।

190. Ensete superbum Cheesm. हिं०-बनकदली

३००. वैद्य इसके बीज छोटी माता एवं बड़ी माता आदि रोगों में प्रतिबन्धन तथा चिकित्सा के लिए व्यवहार में लाते हैं। इसी दृष्टि से

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इसके बीजों से प्राप्त तीन सत्वों का जैविकीय परीक्षण किया गया। परिणामों से यह कहा जा सकता है कि यह चेचक की चिकित्सा में लाभदायक हो सकते हैं।

एन. के. दत्ता, के. एच. दवे, एस. एम. देसाई, एम. वाई. म्हसालकर, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, ५, १९६८, ७३५-७४१।

३०१. इसके बीजों से पृथक् किये गये VIDR–2T, VIDR–2GC एवं VIDR–2GD सत्वों में से तीसरे का गुण-कर्मीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह तीनों Variola तथा Vaccinia विरोधी सिद्ध हो चुके हैं। इससे रक्तदवाव कम होता है। श्वसनिकाओं पर इसका कोई प्रभाव नहीं है। आंत्र पर कोलीनधर्मी प्रभाव हैं तथा यह विषैला भी नहीं है।

आर. एन. राय, सी. भगवागेर एवं एन. के. दत्ता, सार, २० वीं इण्डि. फार्मे. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८५।

191. Entada phaseoloides Merrill हिं०-चिया, गिला

३०२. इसके बीज तैल के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है।

ए. आर. एस. कार्या एवं आर. नारायणन, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, १२, १९६६, ५४४-५४५।

३०३. इसके बीज मज्जा से एक नया Triterpenoid sapogenin–Entagenic acid पृथक् किया गया जिसकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

ए. के. वरुआ, टेट्रा., २३, १९६७, १४९९-१५०३।

३०४. उपर्युक्त संरचना का और परीक्षण किया गया है।

ए. के. वरुआ, पी. चक्रवर्ती एवं वी. सी. दास, टेट्रा., २३, १९६७, १५०५-१५०८।

192. Ephedra nebrodensis Tineo.

३०५. इसका स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, प्रतिदीप्ति परीक्षण, संपूर्ण क्षाराभ का परिमापन एवं तनुस्तर वर्णलेखीय अध्ययन (Thin layer chromatography) प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सी. एस. शाह एवं नीला एस. शाह, इण्डि. जर. फार्मे., २८, ४, १९६६, १०३-१०५।

193. Ervatamia wallichiana Steub

३०६. इसके पत्र तथा काण्डत्वक् से एक विशेष प्रकार का Triterpenoid पृथक् किया गया है।

एस. के. टी., एस. एस. जी. एवं बी. टी., जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४४, ५, १९६७, ४१६-४१९।

194. Erythrina indica Lam. हि०-फरहद

३०७. चूँकि इसकी छाल बजार में रोहितक नाम से बिकती है इसलिए इसको पहिचानने के लिये इसके स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

देखें–६५१।

195. Erythrina superba Roxb. हि०-फरहद

३०८. इसके बीज एवं पत्तों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। B–sitosterol एव Hypaphorine ये दो द्रव्य बीजों में उल्लेखनाय हैं।

एच. सिंग, एवं ए. सिंग चावला, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रे., इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८२।

196. Erythroxylon monogynum Roxb. दक्षिण-देवदारू

३०९. इस चतुर्थ लेख में इसके रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त दो Norditerpenoid, Tertiary alcohol एवं तीन Diterpenoid epoxide का विवेचन है।

ए. मार्टिन एवं आर. डी. एच. मुरे, जर. केमि. सोसा. इंग्लैण्ड, सी, २०, १९६८, २५२९-२५३३।

197. Eucalyptus citriodora Hook.

३१०. इसके गोंद में राजयक्ष्मा दण्डाणु संवर्ध रोकने का गुण पाया गया।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. एस. रामस्वामी एवं एम. सिरसी, इण्डि. जर. फार्मेसी, २६, ५, १९६७, १५७-१५६।

198. Eugenia fruticosa Roxb.

३११. इस वृक्ष के काण्डत्वक् का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसका वर्गीकरण-विज्ञान की दृष्टि से महत्व है।

एस. घोष मजुमदार एवं स्व. ठाकुर, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, ६, १९६८, ७८५-७६०।

199. Eugenia jambolana Lam. सं०-जम्बू

३१२. मधुमेह निरोधक क्षमता के अध्ययन के लिये इसके बीजों के निस्सार को खरगोशों को पिलाया गया। यह देखा गया कि इससे उपोषणा-नन्तर रक्तगत शर्करा में ३४·६ % ह्रास होता है जब कि करेले के फलरस निस्सार में यह ह्रास २३·३ % होता है।

ब्र. ना. लाल एवं कृ. दा. चौधरी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., २,२,१९६८,१६१-१६४।

200. Eugenia wallichii Wt.

३१३. इसकी छाल का रासायनिक विश्लेषण पहले किया जा चुका है। इस शोधपत्र में इसके पत्तों के बेंझीन द्वारा निकाले सत्व का अध्ययन है। इसमें 1–Dotriacontanol द्रव्य पाया गया।

एस. घोष मजुमदार एवं एस. ठाकुर, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, २, १९६८, १८७-१८८।

३१४. इसके छाल का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। E. fruticosa की छाल में पाये गये द्रव्यों के अतिरिक्त एक विशिष्ट द्रव्य B–sitosterol इससे पृथक् किया गया।

एस. घोष मजुमदार एवं स्व. ठाकुर, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, ६, १९६८, ७८५-७६०।

201. Euphorbia acaulis Roxb. सं०-हस्तिदन्ती

३१५. उपर्युक्त वनस्पति, शास्त्रीय हस्तिदन्ती है। लेखक के विचार से नागदन्ती, हस्तिदन्ती तथा दन्ती ये तीनों भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं।

मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, १२, १९६६, १०२१-१०२२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

202. Euphorbia antiquorum Linn. हिं०-तिधारा सेहुण्ड

३१६. इसके काण्ड के triterpenes का विश्लेषण किया गया है।

वी. ए., डी. एन. आर., एल. आर. आर., जर. इण्डि. केमिक. सोसा., ४४, २, १९६७, १२३-१२६।

३१७. इसके क्षीर में के रासायनिक द्रव्य ट्राइटर्पीन का विवेचन है।

वी. अंजनेयुलु एवं एल. आर. राव, करेंट साइन्स, ३६, ८, १९६७, २०४।

३१८. प्राणियों में इसके सत्व का मानसिक प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन किया गया है। यह उत्तेजक है तथा इसका स्ट्रिकनीन, मेट्राझोल या सेमी कार्बाझाइड के आक्षेप जनन कार्य पर कोई प्रभाव नहीं है। यह मेस्कालीन के कण्डूजनन प्रभाव को बढ़ाता है।

पी. के. दे. एवं वी. के. चटर्जी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ९-१८।

203. Euphorbia cattimandoo W. Elliot; Syn. E. trigona Haw. हिं०-थूहर भेद

३१९. इसके दुग्ध में euphol, nerifoliol, euphorbol एवं काण्ड में taraxerol पाये गये।

वी. ए., सी. एस. आर., सी. एस., एल. आर. आर., जर. इण्डि. केमिक. सोसा., ४५, ५, १९६८, ४०४-४०८।

204. Euphorbia dracunculoides Linn. हिं०-तितली

३२०. इस पौधे के रासायनिक विश्लेषण से Euphorbol, sucrose तथा flavone glycoside पाये गये।

ए. सिंग एवं एस. एन. श्रीवास्तव, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ९, १९६६, ४२०।

३२१. प्राणियों में प्रयोग करने पर देखा गया कि एसिटिलकोलीन की ही तरह इसका सभी प्रकार की मांसपेशियों पर एवं रक्तचाप पर प्रभाव होता हैं किन्तु इसमें कुछ विशेषताएँ भी हैं जैसे–(i) इसके निस्सार के गर्भाशय संकोचक कर्म का ॲट्रोपीन द्वारा निरोध नहीं होता है तथा (ii) अधिक मात्रा से उद्वेष्ठनजन कर्म में ह्रास होता है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

डी. एन. प्रसाद, के. डी. गोडे, आर. एस. सिंह, पी. के. दास, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, १, १९६७, ७३-७९ ।

205. Euphorbia pilosa Linn. **सं०-सप्तला**

३२२. हिमालय में होनेवाली इस वनस्पति के शास्त्रीय सप्तला होने की सम्भावना व्यक्त की गई है ।

मा. उनियाल, सचि. आयु., १९, ११, १९६७, ८७३-७४ ।

206. Euphorbia pulcherimma Willd.

३२३. इसके पौधे का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसमें Germanicol एवं β-sitosterol पाये गये ।

एच. एन. खस्तगीर एवं वी. पी. प्रधान, जर. इंडि. केमिक. सोसा. ४४, २, १९६७, १५९-१६१ ।

207. Euphorbia tirucalli Linn. **हिं०-सातला, अंगुलिया थूहर**

३२४. इसके काण्ड का रासायनिक विश्लेषण किया गया है ।

आर. के. गुप्ता एवं ही. महादेवन, १८ हवीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, १९६६, इंडि. जर. फार्मे. २८, १२, १९६६, ३३८ ।

३२५. इसकी क्षीरवाहिका तथा क्षीर का अध्ययन वानस्पतिक दृष्टि से किया गया है। साथ में क्षीर का प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन भी है ।

ए. आर. राव, कु. वी. के. एम. एवं कु. एम. एम., प्रोसीडि. इंडि. ॲकेडेमी साइ., वी, ६७, २, १९६८, ६१-६६ ।

208. Evolvulus nummularis Linn. **हिं०-मूसाकानी भेद**

३२६. प्राणियों में इसके स्नेहांश विरहित सुरासारीय सत्व का मानसिक प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन किया गया है । यह शामक, तथा निद्रावर्धक है एवं मेट्राझोल के मारक प्रभाव के काल को बढ़ाता है किन्तु स्ट्रिकनीन के कार्य पर इसका कोई प्रभाव नहीं है । इससे सेमीकार्बझाइड का आक्षेपजनन कार्य विलम्ब से प्रारम्भ होता है किन्तु मारक प्रभाव रोकने में यह असमर्थ है । यह स्वाभाविक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कण्डू प्रत्यावर्त को कम करता है तथा मेस्कालीन के कण्डूजनन प्रभाव को कुछ कम करता है।

पी. के. दे. एवं बी. के. चटर्जी, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, ६-१८।

209. Ferula alliacea Boiss. सं०-हिंगु

३२७. इसके फलों से ईथर द्वारा पृथक्कृत सत्व Byakangelicin का अध्ययन किया गया है। इसमें अंशतः इस्ट्रोजन विरोधी तथा प्रजनन बाधक गुण हैं।

श्रीमती ए. पकराशी, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायो., ५, २, १९६७, ७५-७९।

३२८. यह सत्व अवयस्क चुहियों में अपराजनन ग्रंथिपोषी हारमोन की क्रिया को रोकता है।

श्रीमती ए. पकराशी, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायो., ५, ३, १९६७, १९७-१९८।

210. Ficus bengalensis Linn. सं०-वट

३२९. मधुमेह में इसकी उपयोगिता को देखते हुए इसके क्षीर का अध्ययन चूहों में किया गया। **शिलाजीत** का भी अध्ययन इसी दृष्टि से किया गया। तुलना के लिए पिट्यूटरी ग्रंथि के अग्रभागीय सत्व का उपयोग किया गया। इससे जो लाभ हुआ वह सम्भवतः शारीरिक वृद्धि, अग्न्याशय ग्रन्थि पोषण, जनन ग्रंथि पोषण या धातुओं के चयापचय पर प्रत्यक्ष क्रिया के कारण हुआ होगा।

एस. एस. गुप्त, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५४, ४, १९६६, ३५४-३६२।

३३०. इसके तनें की छाल का, स्थूल एवं सूक्ष्म रचना की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इसके चूर्ण को भी पहिचाननें के लिए विशिष्ट लक्षण दिये गये हैं। उदुम्बर की तनें की छाल का भी इसके साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

राय एच. एन. चौधरी, जर. इंडि. बोटॅनि. सोसा., ४०, १-२, १९६६, ६७-७३।

३३१. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से Friedelin (triterpene) एवं β–sitosterol पृथक् किये गये।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

डी. चटर्जी एवं डी. पी. चक्रवर्ती, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ३, १९६८, ४८५।

211. Ficus racemosa Linn. सं०-उदुम्बर

३३२. इसके तनें की छाल का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन किया गया है। चूर्ण रूप में पहिचाननें के लिए भी आवश्यक लक्षण दिये गये हैं। साथ में वट की छाल का भी तुलनात्मक अध्ययन है।

राय एच. एन. चौधरी, जर. इंडि. बोटॅ. सोसा., ४०, १-२, १९६६, ६७-७३।

212. Ficus religiosa Linn. सं०-पिप्पल

३३३. इसकी छाल से β–Sitosteryl–D–glucoside पृथक् किया गया। इसमें रक्तगत शर्करा को कम करने की क्रिया तथा विषैली मात्रा से केन्द्रीय तन्त्रिका संस्थान पर एम्फेटामाइन सदृश (उत्तेजक) क्रिया पायी गई।

एस. एच. अंबिके एवं एम. आर. राजाराम राव, इंडि. जर. फार्मेसी, २९, ३, १९६७, ९१-९४।

213. Fritillaria imperialis Linn.

३३४. इसमें के प्रमुख Imperialine क्षाराभ का गुण कर्मात्मक अध्ययन पहले प्रस्तुत किया जा चुका है (मीर जी. एन. एवं घटक बी. जे., ३, १९६५, २४९)। इस शोधपत्र में अवशिष्ट क्षाराभों का अध्ययन प्रस्तुत है। इंपेरियेलीन में साधारण रक्तदबाव ह्रासक एवं प्रबल उद्वेष्ठन रोधी क्रिया पाई गई थी। अन्य अवशिष्ट क्षाराभों में भी स्पष्ट दाबह्रासी, अल्प उद्वेष्ठन रोधी एवं विकम्पन-रोधी (Antifibrillatory) क्रियाएँ पायी गई। अन्तिम गुण सम्भवतः इसी अंश का है।

जी. एन. मीर एवं बी. जे. रे घटक, इंडि. जर. एक्सपे. बायो., ४, ३, १९६६, १५७-१६०।

214. Fritillaria oxypetala Royle

215. Fritillaria Roylei Hook. सं०-क्षीरकाकोली

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३३५. इसके कंद वृष्य एवं शुक्रजनन होते हैं। इन्हें क्षीरकाकोली कहा जा सकता है। इनका वर्णन सचित्र दिया हुआ है।

मा. उनियाल, सचि. आयु., २०, ३, १९६७, १६०; मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ६, ८, १९६६, २७६-२८४।

216. Fumaria indica (Haussk) Pugsley हिं०-शहतरा, पित्तपापडा

३३६. Fumaria की यही जाति भारत में पाई जाती है जो विभिन्न नामों जैसे—F. officinalis Bedd., F. parviflora Lam., F. vaillanti Loisel आदि से उल्लिखित है। इसका उपर्युक्त नाम उचित है। इसके मूल, काण्ड, पत्र एवं फल का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक स्वरूप, विभिन्न विलेयकों से प्राप्त सत्वों के मान एवं राख का मान एवं मूल तथा वायवीय अंगों का प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। चूँकि Peristrophe bicalyculata को भी पित्तपापडा कहा गया है एवं बजार के नमूनों में Coronopsis didyma भी पाया गया इसलिए इनका तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

पी. एन. मेहरा, एस. एस. जॉली एवं एच. एस. पुरी, सार, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८४।

217. Garcinia morella Desr. सं०-तमाल

३३७. इसके बीजावरण में से पृथक् किये रासायनिक संघटकों (Morellin, Neomorellin) के प्रोटोझोआ-रोधी गुण का अध्ययन किया गया है। आन्त्रिक रोगों में जो इसकी उपादेयता बतलाई जाती है वह इसी गुण के कारण हो सकती है।

बी. पी. सानी एवं पी. एल. नरसिंहराव, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायोला., ४, १, १९६६, २७-२८।

३३८. इसके काष्ठसार से एक नया biflavonoid-Morelloflavone पृथक् किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सी. जी. करंजगाँवकर, पी. वी. राधाकृष्णन एवं के. वेंकटरामन, टेट्रा. लेट., ३३, १९६७, ३१९५-३१९८।

३३९. इसके बीजावरण से प्राप्त द्रव्य α guttiferin की विषाक्तता तथा उसका गुण कर्मात्मक अध्ययन किया गया है।

३४०. इसके प्राप्त α&β Guttiferins की प्रतिसूक्ष्म जीवी क्रिया का अध्ययन किया गया है।

के. वी. नागेश्वरराव एवं पी. एल. नरसिंहराव, इंडि. जर. एक्स्पेरि. बायो., ५, २, १९६७, ९६-१००, १०१-१०५।

३४१. इससे प्राप्त Morellin के मात्रात्मक परिमापन (quantitative estimation) की विधियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. एल. सी. वर्मा एवं पी. एल. नरसिंहराव, इंडि. जर. एक्स्पेरि. बायो. ५, २, १९६७, १०६-१०९।

३४२. इसमें β एवं α_2 guttiferin के कुछ अन्य जीवाणु रोधी कार्य करने के तरीके का विवेचन किया गया है।

सी. आर. पुट्टन्ना एवं पी. एल. नरसिंह राव, इंडि. जर. एक्स्पेरि. बायो., ६, ३, १९६८, १५०-१५२।

३४३. गॅम्बोज, बीजावरण एवं अन्य अंगों का उपयोग विरेचन के लिए किया जाता है। इस अध्ययन में यह सिद्ध किया गया है कि विरेचन कार्य करनेवाला द्रव्य β–guttiferin (α–gambogic acid) एवं α_1–guttiferin है। इनमें से प्रथम अधिक वीर्यशाली है।

के. संथानम् एवं पी. एल. नरसिंहराव, इंडि. जर. एक्स्पेरि. बायो., ६, ३, १९६८, १५८-१५९।

218. Gardenia lucida Roxb. हिं०-डिकामाली

३४४. इसके मूल की छाल के रासायनिक विश्लेषण से D–mannitol पृथक् किया गया।

एच. के. दत्ता, एस. एन. गांगूली एवं ए. के. भट्टाचार्या, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४३, ५, १९६६, ३८०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३४५. Gardenin जो कि इसके गोंद में पाया गया flavonoid रंजक तत्व है उसके पुराने रासायनिक स्वरूप का खण्डन करके नये स्वरूप का निर्धारण किया गया है।

ए. वी आर. राव एवं के. वेंकटरमन, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ११, १९६८, ६७७-६७८।

219. Gardenia turgida Roxb. हि०-थनैला

३४६. उपर्युक्त वनस्पति की छाल भारंगी नाम से बिकती है।

मा. उनियाल, आयु. विकास, ६, ८, १९६७, २४-२५।

220. Glycine soja Sieb. & Zucc. हिं-भाट

३४७. चूहों को इसकी दाल खिलाने से रक्तगत शर्करा तथा कोलेस्टेरॉल की मात्रा कम होती है।

एम. जी. पन्त, आइ. उद्दीन, यू. आर. भारद्वाज एवं आर. डी. तिवारी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, १२, १९६८, १८०८-१८१२।

221. Glycosmis arborea (Roxb.) DC. Correa

३४८. इसके पत्तों से पृथक् किये गये Arborinone का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. सी. पकराशी एवं पी. मजुमदार, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ३, १९६७, १२९-१३०।

३४९. इसमें के quinazoline क्षाराभों के परस्पर संबंधों पर अध्ययन किया गया है।

एस. सी. पकराशी एवं जे. भट्टाचार्या, टेट्रा., २४, १९६८, १-५।

222. Glycosmis pentaphylla (Retz.) Correa हिं०-बन नींबू

३५०. इसके मूल की छाल से पृथक् किये गये एक नये Carbazole derivative -Glycozoline का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

डी. पी. चक्रवर्ती, टेट्रा. लेट., ६, १९६६, ६६१-६६४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३५१. इसके मूलत्वक् से पृथक् किये गये एक नये Carbazole संजात Glycozolidine की संरचना का विवेचन किया गया है।

डी. पी. चक्रवर्ती एवं बी. पी. दास, साइन्स, कल्चर, ३२, ४, १९६६, १८१-१८२।

३५२. इनसे निकाले सत्व Glycosine का चूहे की मानसिक क्रियाओं पर तथा अन्य अंगों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। यह मेस्कालीन के केन्द्रीय कार्य तथा कोकेन, स्ट्रीकनीन एवं मेट्राझोल के आक्षेपजनन कार्यों को रोकता हैं। यह थायोपेन्टॉल जन्य सुषुप्ति को बढ़ाता है एवं संशामक प्रभाव उत्पन्न करता है। मेढक के हृदय के संकोचों तथा बिल्ली में रक्त दवाव को कम करता है।

पी. के. दे. एवं बी. के. चटर्जी, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, १९-२४।

223. Glycyrrhiza glabra Linn. सं०-यष्टीमधु

३५३. इसकी खेती के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है।

र. वेदी एवं भ. दास, नागा., १०, ८, १९६७, ४१०-४१२।

224. Gmelina arborea Linn. सं०-गंभारि

३५४. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इससे Luteolin नामक द्रव्य पृथक् किया गया है।

डी. वेंकटराव, ई. वी. राव एवं एन. विश्वनाधम, करेंट साइन्स, ३६, ३, १९६७, ७१-७२।

३५५. खरगोशों को इसके शुष्क फलों का चूर्ण खिलाकर इसके रसायन गुण का अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि इससे रक्तरस में α_2 तथा γ ग्लोब्यूलिन का प्रतिशत प्रमाण बढ़ता है। साथ में शारीरिक भार वृद्धि एवं उनके व्यवहार में अधिक स्फूर्ति भी देखी गई।

दा. श. गौड एवं ला. प्र. गुप्त, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ४३-४८।

225. Grewia populifolia Vahl. सं०-गांगेरुकी; हि०-गंगेरन

३५६. इसके बीजों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

६

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. एन. गांगूली, ए. के. भट्टाचार्या एवं जी. गांगूली, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४३, ६, १९६६, ४५३-४५४ ।

226. Gymnema sylvestre R. Br. हिं०-गुडमार

३५७. इसके विशिष्ट सत्व Gymnemic acid के विभिन्न योगों का अध्ययन, विषाणुनाशक गुण की दृष्टि से किया गया। इनमें से 'A' योग में काफी प्रभाव देखा गया तथा 'B' योग में साधारण प्रभाव रहा।

जे. ई. एस., जी. एस. आर., एच. एम. एम., आर. वी. एस., एच. एफ. एम., के. डब्लू. सी., एक्सपेरिएन्शिया, २४, ३, १९६८, ३०२-३०३ ।

227. Gymnosporia spinosa (Forsk.) Fiori हिं०-बैंकल

३५८. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से β–amyrin dulcitol एवं एक quinone ये द्रव्य पाये गये।

के. सत्यनारायण एवं आर. के. मिश्रा, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, २, १९६८, १८९-१९० ।

228. Habenaria intermedia D. Don. सं०-ऋद्धि, वृद्धि

३५९. इसके या इसी प्रजाति के अन्य कंद सम्भवतः अष्टवर्गोक्त ऋद्धि, वृद्धि हो सकते हैं।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ९, १९६६, ८; २०, १०-११, १९६८, ७७० ।

229. Hardwickia pinnata Roxb. म०-अंजन

३६०. इसके रालीय द्रव्य से पृथक् किये गये Hardwickiic acid एवं उससे सम्बन्धित अन्य द्रव्यों के विन्यास रसायन (Stereochemistry) का विवेचन किया गया है।

आर. मिश्रा, आर. सी. पाण्डे एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., २२, १९६८, २६८१-२६८४ ।

230. Hedyotis auricularia Linn. & H. hispida Retz.
बंब-दपोली

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३६१. चूँकि इसको ग्रहणी (Colitis) तथा हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में उपयोगी बतलाया गया था इसलिए इससे प्राप्त एक क्षाराभ जो कि पहले पाये गये क्षाराभों से भिन्न है, का अध्ययन किया गया। यह अच्छा रक्त दबाव ह्रासक एवं हृद्वल्य है। यह श्वसनिका विस्फार करता है तथा हिस्टॅमीन के प्रभाव को नष्ट करता है। प्रभावी मात्रा में इसमें विषाक्तता भी नहीं है।

ए. मुकर्जी, एस. आर. चह्वाण एवं एन. के. दत्ता, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, १०, १९६७, ११०३-११०६।

231. Helianthus annuus Linn. **हि०-सूर्यमुखी**

३६२. चूहों में उत्पन्न किये गये व्रणों में इसके मलहम का लाभदायक प्रभाव देखा गया।

प्र. ज. देशपाण्डे, एस. एन. पाठक, पी. एस. शंकरन, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५३, १, १९६५, ५३९।

232. Helicteres isora Linn. **हि०-मरोडफली**

३६३. इसके फलों का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

वी. के. देशमुख एवं यू. पंडित, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८३-२८४।

233. Heliotropium eichwaldi Steud ex DC. **हि०-नीलकट्टे**

३६४. इस प्रजाति (genus) के पौधों में 'Senecio bases' स्वरूप के क्षाराभ पाये जाते हैं। इसमें भी विषैले क्षाराभ का उल्लेख होने से इसके पंचांग का रासायनिक विश्लेषण किया गया है।

आर. एन. गांधी, टी. आर. राजगोपालन एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३५, ५, १९६६, १२१-१२२।

234. Heliotropium indicum Linn. **सं०-हस्तिशुण्डी**

३६५. इसके रासायनिक विश्लेषण से indicine के अतिरिक्त acetyl

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

indicine, indicinine, एक retronecine का ester एवं एक अम्ल पाया गया।

एं. आर. मेटॉक्स, जर. केमि. सोसा. इंग्लै., सीं, ५, १९६७, ३२९-३३१।

235. Heracleum rigens Wall. var. multiradiatum Gamble (Fam. Umbelliferae) सं०-सूक्ष्मएला, क्षुद्रएला; ता०-चित्रेलम

३६६. दक्षिण भारत में तमिल नाम 'चित्रेलम' से, जो कि (सं०) सूक्ष्म-एला या क्षुद्रएला का समानार्थी है, जिस द्रव्य का वैद्य प्रयोग करते हैं वह (हिं०) छोटी इलायची (Elettaria cardamomum) नहीं है जिसका उपयोग उत्तर भारत में किया जाता है बल्कि उपर्युक्त धनिया के वर्ग के फल हैं। इन फलों के आधार से इसके वानस्पतिक स्रोत का पता लगाया गया। यह फल खण्ड (mericarp) प्रायः ८–१२ मि. मी. लम्बे, ६–१० मि. मी. चौड़े, कुछ चिपटे, उन्नत-नतोदर, लंबाई में ४-६ गहरे भूरे रंग की रेखाओं से युक्त, बिम्वाभ-अभिअण्डाकार, आधार कटा हुआसा, अग्र नुकीला एवं किनारे पर चौड़े पंख युक्त होते हैं। कभी-कभी दो अर्ध खण्ड मिलकर संपूर्ण फल (Cremocarp) के रूप में भी रहते हैं। इसको काटकर देखने से प्रत्येक अर्धखण्ड के बाह्य भाग में प्रायः ६ एवं भीतरी भाग में ८ तैल नलिकाओं (Vittae) के कटे भाग दिखलाई देते हैं। इसमें नींबू जैसी गंध होती है। इनका संग्रह निलगिरी तथा पलानी पहाड़ियों के जंगलों से किया जाता है। भारतीय चिकित्सा में सर्वप्रथम इस वनस्पति का उल्लेख किया गया है।

उस्मान. एस. अली, जर. रिस. इण्डि. मेडि., २, २, १९६८, २०३-२०७।

236. Herpestis monniera (Linn.) H. B. & K.

देखें–९६-९९।

237. Hibiscus rosa-sinensis Linn. सं०-जपा

३६७. इसमें इसके पत्तों का प्रारम्भिक रासायनिक संगठन प्रस्तुत किया गया है। इसमें अल्कलायड, ग्लाइकोसाइड, अपचायक शर्कराएँ (reducing

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

sugars), वसा सदृश द्रव्य, राल एवं स्टेराइड द्रव्य पाये गये हैं। इसमें ग्लाइकोसाइड की मात्रा ०·९% पाई गई। यह गहरे भूरे रंग का, अत्यन्त आर्द्रता ग्राही (hygroscopic) एवं जल तथा एथिल एसिटेट में घुलनशील है। इसमें टैनिन, उड़नशील तैल तथा सेपोनिन नहीं पाये गये।

एस. सी. एल. वर्मा, एस. शिन्दे एवं एस. एल. अग्रवाल, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६८, २३६-२३८।

३६८. उपर्युक्त ग्लाइकोसाइड का गुणकर्मीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसकी क्रिया कोलीन तथा पेपेह्वरीन जैसी है। इसमें कोई तीव्र विषैलापन नहीं है। इसमें कई कार्य करनेवाले अंश हैं। इसके रक्त दबाव ह्रासक, वाहिनी विस्फारक एवं उद्वेष्ठन निरोधी गुणों का और अध्ययन आवश्यक है।

एस. एल. अग्रवाल एवं एस. शिन्दे, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, ९, १९६७, १००७-१०१०।

238. Hippeastrum equisetre Herb.

३६९. इसके कंद से जो क्षाराभ पृथक् किया गया वह Lycorine है।

एस. एन. गांगूली, ए. के. भट्टाचार्य एवं जी. गांगूली, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, १२, १९६७, ६५४।

239. Holarrhena antidysenterica Wall. हिं०-कुरैया

३७०. चूँकि अतिसारादि के लिये यह बहुत उपयोगी द्रव्य है एवं इसका एक क्षाराभ Conkurchine सबसे अधिक वीर्यशाली है इसलिये इसका गुणकर्मीय अध्ययन किया गया। Conkurchine hydrochloride प्रत्यक्षतः हृदयावसादक है तथा मेंढक में परिसरीय वाहिनी संकोच करता है एवं कुत्ते में रक्त दबाव को कम करता है। अनैच्छिक पेशी पर कोई प्रभाव नहीं है।

एन. के. बसु एवं एस. बी. जायसवाल, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८९।

३७१. परखनली में, इसमें के ५ क्षाराभों के अमीबानाशी गुण का

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अध्ययन किया गया जिसमें देखा गया कि इनमें से Conessine सबसे अधिक प्रभावशाली है, न कि Conkurchine।

देखें–३७०।

३७२. प्राणियों में इसके सत्वों के अध्ययन से इसके अमीबा उपसर्ग नाशक गुण की पुष्टि की गई।

एन. के. दत्ता एवं एन. ऐय्यर, जर. इंडि. मेडि. एसोसि., ५०, ८, १९६८, ३४९-३५२।

240. Hordeum vulgare Linn. **हिं०-जव**

३७३. इसके नये अंकुरों से पृथक् किये गये कवकरोधी (antifungal) द्रव्य, Hordatine A एवं B का रासायनिक अध्ययन किया गया है।

ए. एस., टेट्रा. लेट., २१, १९६६, २२८७-२२९२।

३७४. Hordatine A के संश्लेषण का विवेचन है।

ए. एस., टेट्रा. लेट., २५, १९६६, २८४९-२८५१।

241. Hunteria corymbosa Roxb.

३७५. विद्वानों ने इसके पत्तों से Corymine की प्राप्ति का उल्लेख पहले किया है किन्तु प्रस्तुत रासायनिक विश्लेषण से देखा गया कि इसके एक भारतीय भेद के पत्तों में Corymine नहीं है किन्तु एक अन्य क्षाराभ Rhazine है जो Rhazya stricta Decaisne का प्रमुख क्षाराभ है। इन दोनों द्रव्यों के Biogenetic सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है।

पी. एल. मजुमदार, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, ९, १९६८, ८५३-८५४।

242. Hydrocotyle asiatica Linn.

देखें–१८३-१८६।

243. Hygrophila spinosa T. And. **सं०-कोकिलाक्ष**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३७६. इसके पंचांग के क्वाथ एवं राख में मूत्रल गुण पाया गया जो इसमें के पोटॅशियम के कारण है।

जी. शान्ता कुमारी एवं जी. वाइ. एन. ऐय्यर, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५५, ७, १९६७, ७१४-७१६।

244. Hyocyamus niger Linn. **हिं०-खुरासानी अजवायन**

देखें–२६२।

245. Illicium verum Hook. f. **हिं०-बादियाण**

३७७. इसके फलों की जीवाणुनाशक (anti microbial) क्रिया का अध्ययन किया गया है। साक्सलेट द्वारा निकाले सुरासारीय सत्व में यह सबसे अधिक है एवं शीत सुरासारीय में सबसे कम। ग्राम ग्राही जीवाणु (gram positive) की अपेक्षा यह ग्रामत्यागी (gram negative) जीवाणुओं पर अधिक सक्षम है। कवकनाशी (antifungal) क्रिया, साक्सलेट के सत्व में सबसे अधिक एवं जलीय सत्व में सबसे कम पाई गई।

आर. एन. पटेल, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, २, १९६८, ४३-४४।

246. Ipomoea petaloidea Chois. **सं०-विधारा**

३७८. अध्ययन से यह देखा गया कि स्थानीय विधारा उपर्युक्त लता है जिसका संग्रह मिरजापुर (चुनार) से किया जाता है। इसमें स्टेरॉल तथा ग्लाइकोसाइड होता है। इसके रालीय भाग में सकमुनिया की तरह विरेचक गुण भी पाया गया।

रा. सु. सिंह एवं क. द. गोडे, जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, १, १९६६, १४४-१४८।

247. Ipomoea turpethum R. Br. **सं०-त्रिवृत्**

३७९. कानपुर के बाजार में 'विधारा' नाम से उपर्युक्त लता की जड़ एवं कांड के टुकड़े बिकते हैं। इसका संग्रह मूसानगर जि० कानपुर से किया जाता है। वास्तव में यह त्रिवृत् (निशोथ) है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रा. सु. सिंह, रा. कृ. गुप्ता, नागार्जुन, १, १९६६, १-४।

३८०. त्रिवृत् के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है।

रा॰ सु॰ सिंह, रा. कृ॰ गुप्त एवं भा॰ ओझा, जर॰ रिस॰ इण्डि॰ मेडि., १, २, १९६७, २५०-२५५।

248. Jasminum auriculatum Vahl. सं०-यूथिका; हिं०-जूही

३८१. व्रणरोपण की दृष्टि से इसके स्वरस का प्रयोग प्राणियों में किया गया जिससे व्रण संकोच देखा गया। इससे मालूम होता है कि इसमें व्रणरोपक गुण हैं।

प्र॰ ज॰ देशपाण्डे एवं पी॰ एस. शंकरन्, जर. मेडि. साइ॰, बी. एच. यू., जुलाई १९६४, ११८।

३८२. चूहों में द्वितीय श्रेणी के दग्धव्रण उत्पन्न करके इसके घृत का तथा केवल घृत का उपयोग किया गया। रोपण कार्य में बिना किसी औषध की अपेक्षा इसके घृत से २०% अधिक वृद्धि पाई गई।

प्र. ज॰ देशपाण्डे एवं सु. ना. पाठक, जर. रिसर्च. इण्डि. मेडि, १, १, १९६६, ८१, ९०।

३८३. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण सम्बन्धी अध्ययन किया गया है। दूसरे लेख में उसमें पाये गये स्नेहाम्लों का विवेचन है।

एस. एम॰ देशपांडे एवं आर. आर॰ उपाध्याय, करेंट साइन्स, ३६, ९, १९६७, २३३-३४; ३७, ७, १९६८, २००-२०१।

३८४. इसमें भी पत्तों के विश्लेषण से प्राप्त कुछ अंशों का रासायनिक अध्ययन किया गया है।

एस. एम. देशपांडे एवं आर. आर॰ उपाध्याय, एक्सपेरिएन्शिया, २४, ५, १९६८, ४२१।

249. Jasminum officinale Linn. सं०-जाती

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३८५. इसके पत्तों के रन्ध्रों (stomata) के विकास के सम्वन्ध में अध्ययन किया गया है।

जे. ए. इनामदार, करेंट साइन्स, ३६, १६, १९६७, ४४३–४४४।

250. Jasminum sambac Ait. हिं०-मोगरा

३८६. उपर्युक्त वनस्पति शास्त्रीय मदयन्ती या मदयन्तिका है। मेंहदी (Lawsonia inermis Linn.), मदयन्ती नहीं है, जैसा बहुत लोग मानते हैं।

रा. प्रा. आ. भटनागर, आयु. विका., ५, ५, १९६६, १३-१८।

३८७. उपर्युक्त मत का खण्डन किया गया है तथा मेंहदी को ही मदयन्तिका बतलाया गया है।

ज्ञा. पांडेय, आयु. विका., ५, ७, १९६६, २८-३३।

251. Kochia trichophylla

३८८. इसके रासायनिक विश्लेषण से Oleanolic acid, Saponin, Hentriacontane एवं Hentriacontanol प्राप्त किये गये।

जे. एस. टण्डन एवं के. पी. अग्रवाल, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, १२, १९६६, ५४५।

252. Lantana camara Linn. बंब०-घणेरी

३८९. चूँकि इसकी पुष्पितावस्था में इससे प्रकाशसुग्राहिता (photosensitization) तथा भेड में खुजली उत्पन्न होती है इसलिए इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण किया गया, जिसमें एक नया Triterpene-Lantanolic acid पाया गया।

ए. के. वरुआ, कु. पी. सी., एस. पी. डी., डी. के. एम. एवं बी. सी. डी., साइन्स, कल्चर, ३२, ९, १९६६, ४५६-४५८।

253. Lathyrus sativus Linn. हिं०-खेसारी

३९०. वातवृद्धि व्रणरोपण में बाधक हो सकती है इस उपकल्पना की परीक्षा करने के लिए चूहों में प्रयोग किये गये। खेसारी, जिसका वातवर्धक गुण

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विख्यात हैं, उसको चूहों को खिलाया गया और पश्चात् व्रणरोपण प्रयोग किये गये। इसमें देखा गया कि इससे व्रणरोपण में बाधा उत्पन्न होती है।

प्र. ज. देशपांडे, पी. एस. शंकरन् एवं जी. एस. गोडे, नागार्जुन, अक्तू., १९६४, १४५।

३९१. इसकी दाल के विषैलेपन को दूर करने के निम्न उपाय हैं। १. दाल को अधिक जल में पकाकर जल को फेंक देना। २. छिलका निकाली दाल को दो घंटे उष्ण जल में भिगो रखना। फिर सुखाकर, पीसकर, रोटी बना कर सेवन करना। इन क्रियाओं के पूर्व यदि रातभर जल में दाल को भिगो दिया जाय तो अधिक अच्छा है।

वी. एस. मोहन, वी. नागराजन, सी. गोपालन, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५४, ४, १९६६, ४१०-४१४।

३९२. इसमें के विषैले तत्वों का और अध्ययन किया गया है।

वी. नागराजन, वी. एस. मोहन एवं सी. गोपालन, इण्डि. जर. बायोकेमि., ३, २, १९६६, १३०-१३१।

३९३. खेसारी दाल की मिलावट बेसन आदि में है या नहीं यह जानने के लिए एक आसान एवं विशिष्ट पद्धति का उल्लेख है। इसके विशिष्ट हानि-कारक द्रव्य, BOAA एमिनोएसिड का पता इलेक्ट्रोफोरेसिस एवं वर्णक्रम लेख (क्रोमेटोग्राफी) द्वारा लगाया जा सकता है।

वी. नागराजन एवं वी. एस. मोहन, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५५, ९, १९६७, १०११-१०१४।

३९४. खेसारी दाल के ६०० नमूने मध्यप्रदेश के विभिन्न भागों से प्राप्त कर उसमें के तंत्रिकाविष-अमिनो एसिड (neurotoxic amino acid) की मात्रा का अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि इनमें बहुत ही अन्तर (०.१–२.५%) रहता है। इस अध्ययन में इसके हानिरहित कृषिजन्य भेदों की खेती की संभावना पर भी विचार किया गया है।

वी. नागराजन एवं सी. गोपालन, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५६, १, १९६८, ९५-९९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३९५. इसकी दाल में तंत्रिका संस्थान के लिए घातक अनेक अंश होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इससे पृथक् किये गये एक नए जल विलेय अंश Aliphatic amino acid glycoside का अध्ययन है जो चूजे के परीक्षण में विषैला सिद्ध हुआ है।

सी. रुक्मिनी, इंडि. जर. बायोके., ५, ४, १९६८, १८२–१८४।

254. Lavandula dentata Linn. हिं०-उस्तुखद्दूस

३९६. पुस्तकों में L. stoechas एवं Prunella vulgaris Linn. इन दो वनस्पतियों को उस्तुखद्दूस लिखा हुआ है। बजार के नमूने के स्थूल तथा सूक्ष्म अध्ययन से उसका स्रोत L. dentata ज्ञात हुआ। अभी इसका निर्णय नहीं किया जा सकता कि L. dentata ही वास्तविक उस्तुखद्दूस है, या प्रतिनिधि या व्यामिश्रण है।

जे. के. भटनागर एवं सी. के. अटल, सार १८ हवीं. फार्मा. कांग्रेस, १९६६, इण्डि. जर. फार्मै, २८, १२, १९६६, ३३९।

255. Lepidium sativum Linn. सं०-चन्द्रशूर

३९७. इसके बीजों के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन रोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–५९।

256. Leptadenia reticulata W. & A. सं०-जीवन्ती

३९८. इसके मूल एवं मूलत्वक् के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन-रोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–५९।

257. Lilium polyphyllum D. Don. सं०-काकोली, क्षीरकाकोली

३९९. बजार में प्रचलित काकोली एवं क्षीरकाकोली उपर्युक्त वनस्पति के कंद हैं। यह अधिकतर नेपाल से संग्रहीत होते हैं। Roscoea sp.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

का भी संग्रह इन नामों से होता है। इसमें Fritillaria roylei Hook. का भी मिश्रण रहता है। इनके स्वरूप आदि का विवेचन किया गया है।

मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ९, १९६६, ५-६; मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४।

258. Lilium wallichianum Schutlf. सं०-आदित्यभक्ता

४००. उपर्युक्त पौधा जीवनीयगणोक्त आयुर्वेदीय आदित्यभक्ता द्रव्य हो सकता है क्योंकि इसका पुष्प सूर्य की दिशा के अनुसार घूमता है एवं ग्रामीण इसके कंदों का उपयोग रसायन एवं वाजीकरण के लिए करते हैं।

मायाराम उनियाल, सचि. आयु., २०. १०-११, १९६८, ७६९।

259. Limonia crenulata Roxb. हिं०-बेली

४०१. इसके पत्तों का अपस्मार में उपयोग होता है इसलिए इनका रासायनिक विश्लेषण किया गया। इससे Luvangetin नामक तत्व पृथक् किया गया।

एम. शवीर एवं ए. जमन, जर. इंडि. केमिक. सोसा., ४५, ३, १९६८, २७९-२८०।

260. Litsea consimilis

४०२. इसकी छाल के रासायनिक विश्लेषण से β–amyrin एवं β–sitosterol प्राप्त किये गये।

डी. आर. गुप्त एवं एस. के. गर्ग, जर. इण्डि. केमिक. सोसा.,४४,२, १९६७,१५६-१५७

४०३. इसके बीज तैल से β–sitosterol प्राप्त किया गया।

डी. आर. गुप्त एवं एस. के. गर्ग, इंडि. जर. केमिक. सोसा., ४५, ३, १९६८,२५०-२५२।

261. Luffa echinata Roxb. सं०-देवदाली

४०४. चूहों में कृत्रिम कामला उत्पन्न करके इसके फलों के जलीय सत्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस प्रारम्भिक अध्ययन में उत्साह वर्धक परिणाम पाये गये।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. के. वापट एवं वि. चन्द्रा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, ३, १९६८, ११९-१२० ।

262. Luvunga eleutherandra Dalz.

४०५. इसके स्नेहविरहित अंश का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें से Ostruthin, Limonin एवं Xanthyletin पृथक् किए गए।

ए. के. गांगूली, टी. आर. जी., ए. एम. एवं पी. ए. एम., इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ६, १९६६, २९२-२९४ ।

263. Luvunga scandens Buch. -Ham. बं०-लवंगफल

४०६. इसकी छाल के रासायनिक विश्लेषण से Taraxerol, Myricardiol एवं Myricolal प्राप्त किए गए।

बी. डी. पाल एवं पी. के. बोस, जर. इण्डि. केमि. सोसा.,४४ ८,१९६७,६५९-६६२ ।

264. Lycopersicon esculentum Mill. हिं०-टमाटर

४०७. इसके पत्तों में हिस्टॅमीन-रोधी एवं अॅट्रोपीन सदृश गुण पाए गए एवं इसके जलीय सत्व के शिरान्तर्गत सूचीभरण से खरगोश एवं गिनीपिग की मृत्यु हुई तथा इससे अनैच्छिक मांसपेशी की गति तथा तान बढ़ता है। इन क्रियाओं का कारण टोमेटीन द्वाराभ बतलाया गया था किन्तु प्रस्तुत अध्ययन से यह देखा गया इसमें का क्रियाशील तत्व R6 अंश है और टोमेटीन नहीं है।

ओ. चन्द्र, के. पी. गुप्त, एस. अजमल एवं पी. एन. सक्सेना, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार, ३१ ।

265. Lyonia formosa

४०८. इसके पत्तों के सुरासारीय निःस्सार से hexacosane, β-sitosterol, lupeol, α-amyrin, quercetin एवं कीटो क्रिया युक्त hydroxy triterpene प्राप्त किये गये।

ए. वी. सेन, एम. एम. धर एवं वाइ. एन. शुक्ल, जर. इण्डि. केमि. सोसा., सार, ६७वाँ वार्षिक सम्मेलन, ४५, १९६८, ४१ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

266. Majorana hortensis Moench हिं०-मरुग्रा

४०९. इसके रासायनिक संघटकों का विवेचन किया गया है।

वोन. जी. लोवनर, प्लॅन्टामेडिका, १६, १, १९६८, ५४-५७।

267. Mallotus philippinensis Muell.–Arg. सं०-कंपिल्लक

४१०. इसके कृमिघ्न गुण का अध्ययन किया गया। यह स्फीत कृमि नाशक (taenicidal) है। इसका सुरासारीय सत्व सबसे अधिक, जलीय सबसे कम एवं ईथरीय मध्यम प्रभावशाली है। अन्तः पात्र (In vitro) अध्ययन में इसके सुरासारीय, ईथरीय एवं जलीय सत्व Cestode नाशक हैं, सुरासारीय एवं ईथरीय trematode नाशक तथा कोई भी nematode नाशक नहीं है। काइमोग्राफ द्वारा अध्ययन में देखा गया कि केंचुवा तथा चिपटे कृमि पर इनका अल्प कालिक चोभक प्रभाव होता है, किन्तु केंचुवें पर अस्थाई घातज (paralytic) प्रभाव होता है।

एम. सी. श्रीवास्तव, एस. डब्लू. सिंग एवं जे. पी. तिवारी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, ७, १९६७, ७४६-७४८।

268. Mammea longifolia (Wt.) Planch & Iriana

४११. इसके मूल से दो नये Coumarin–Surangin A एवं Surangin B पृथक् किये गये जिनके स्वरूप का भी निर्धारण किया गया है।

वी. एस. जोशी, वी. एन. कामथ, जे. आर. गोविन्दचारी एवं ए. के. गांगूली, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८०।

269. Mangifera indica Linn. हिं०-आम

४१२. इसके पत्र, काष्ठसार तथा काण्डत्वक् से Mangiferin पृथक् किया गया जो xanthone वर्ग का C–glycoside है। इसकी संरचना का विवेचन किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वी० के. भाटिया, जे. डी. रामनाथन एवं टी. आर. शेषाद्रि, टेट्रा., २३, १९६७, १३६३-१३६८।

270. Manihot esculenta Crantz हि०-शकरकंद

४१३. विभिन्न प्रकाश-अवधि (photoperiods) का अध्ययन इसके कंदो की उत्पत्ति की दृष्टि से किया गया। यह देखा गया कि १२-१६ घंटे की प्रकाश-अवधि इसके कन्द के उत्पत्ति की प्रारम्भिक अवस्था में उपयोगी है।

टी. वी. आर. नायर एवं एस. के. सिह्वा, इण्डि. जर. एक्स्पे० बायो., ६, १, १९६८, ६६।

271. Marsdenia volubilis T. Cook; Syn. Dregia volubilis Benth. ex. Hook. f. हि०-लाखन, मूर्वभिद

४१४. इसके काण्ड एवं पत्तों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

डी. वी. राव, ई. वी. राव एवं एन. विश्वनाथम, करेंट साइंस, ३६, १६, १९६७, ४२१-४२२।

४१५. इसकी छाल में के flavonoid अंशों का रासायनिक विवेचन किया गया है।

डी. वी. राव एवं ई. वी. राव, सार, २० वीं. इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८२।

272. Marsilea minuta Linn. सं०-सुनिषण्णक

४१६. इसके नये पौधे उगाने के संबंध में अध्ययन किया गया है। इसके नये पौधे अधिकांशतः इसकी कन्दवत् रचना जिन्हें Propagules कहा गया है उससे बढ़ते हैं।

बृज गोपाल, जर० इण्डि० बोटॅनि० सोसा., ४०, ३-४, १९६६, ३५०-३५३।

४१७. इसके पत्तों के श्वसन-रन्ध्रों (stomata) का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पी. सी. शर्मा, करेंट साइन्स, ३५, १७, १९६६, ४४४-४४५।

४१८. M. minuta तथा M. rajasthanensis से प्राप्त एक सत्व Marsilin में आक्षेपरोधी, तन्द्राजनक एवं शामक गुण पाये गये हैं (आ. चटर्जी एवं अन्य, जर. एक्सपे. मेडि. साइ., १, १९६३, ५३)। इस शोधपत्र में, प्राणियों में, मन पर कार्य करनेवाली अनेक औषधियों के कार्यों पर, इसके प्रयोग से होनेवाले परिवर्तनों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह मेस्कॅलीन के खुजली आदि उत्पन्न करने के कार्य को रोकता है। चूहों को ३५% कार्बन-डाइआक्साइड में रखकर हटाने से उत्पन्न रोमहर्ष, उत्तेजनशीलता आदि को भी यह रोकता है। स्ट्रिक्नीन जन्य आक्षेपों को यद्यपि यह रोकता है तथापि तज्जन्य मृत्यु नहीं रोकता। केन्द्रीय तन्त्रिका संस्थान पर LSD–25, सेमीकार्बझाइड एवं कोकेन की क्रियाओं पर इससे कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पी. के. डे. एवं बी. के. चटर्जी, इण्डि. जर. एक्स्पे. बायो., ४, २, १९६६, ९९-१००।

273. Marsilea rajasthanensis Gupta सं०-सुनिषण्णक

देखें–४१८।

274. Matricaria chamomilla Linn. हिं०-बाबूना

४१९. इसके फूलों के नीले रंग के उड़नशील तैल के महत्व की दृष्टि से एक सूक्ष्म रासायनिक विधि का उल्लेख है जिससे इसके नीले द्रव्य Prochamazulene का मापन किया जा सकता है। ब्रोमीन के वाष्प से यह द्रव्य नीला हो जाता है जिसको सूक्ष्म दर्शक से गिनकर इसमें के नीले तेल की मात्रा का अन्दाज किया जा सकता है।

एम. एस. के., के. ई. ए., जे. एस. एवं टी. एफ., प्लॅन्टामेडिका, १६, २, १९६८, १६६-१७३।

275. Melia azedarach Linn. सं०-महानिम्ब

४२०. इसके सम्पूर्ण फल से पृथक् किये गये एक रवेदार द्रव्य, Melianone का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

डी. लेवी, एम. के. जैन एवं आइ. किरसन, टेट्रा. लेट., १९६६, २०४९-२०५२।

276. Melia azadirachta Linn. सं०-निम्ब

४२१. इसके बीजों के तैल का प्रभाव स्थूल वर्ग के मधुमेही रोगियों पर सफल एवं उत्साहवर्धक है, परन्तु कृशत्वर्गीय मधुमेहियों पर इसका कोई सफल प्रभाव नहीं पड़ता।

जे. के. ओझा, रा. सु. सिंह, रा. कृ. गुप्ता, सचि. आयु., फरवरी १९६७, ६५१-६५२।

४२२. इसके तेल के रासायनिक विश्लेषण से एक नया Tetranortriterpenoid–Meldenin पृथक् किया गया है जिसकी संरचना का अध्ययन है।

जे. डी. कोनोली, के. एल. हण्डा एवं आर. एम. क्रिंडल, टेट्रा. लेट., ४, १९६८, ४३७-४४०।

४२३. इसके तेल से प्राप्त Nimbin की संरचना तथा विन्यास रसायन (stereochemistry) का अध्ययन है।

एम. एच., आर. एच., आर. एम. सी. एवं के. एच. ओ., टेट्रा., २४, १९६८, १५१७-१५२३।

४२४. उपर्युक्त Nimbin के पृथक्करण के साथ उसके समान एक अन्य Tetranortriterpenoid–Selannin की संरचना तथा उसके विन्यास रसायन का अध्ययन है।

आर. एच., आर. एम. सी., ए. एम. एवं के. एच. ओ., टेट्रा., २४, १९६८, १५२५-१५२८।

277. Mentha arvensis Linn. हिं०-पुदीना

४२५. इसके पत्तों में पाये जानेवाले असंयुक्त एमिनोएसिड (Aminoacids) का विवेचन किया गया है।

एस. के. अरोरा एवं महेन्द्र सिंग, साइन्स, कल्चर, ३४, ८, १९६८, ३७३।

७

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

278. Mesua ferrea Linn. **हिं०-नागकेशर**

४२६. इससे पृथक् किये गये प्रतिजैविकीय द्रव्य (antibiotic)–Mesuol की संरचना का विवेचन किया गया है।

डी. पी. चक्रवर्ती एवं वी. सी. दास, टेट्रा. लेट., ४६, १९६६, ५७२७-५७३०।

४२७. इसके काष्ठसार से दो नये पीत रंजक तत्व Mesuaxanthone A & B, तथा ज्ञात Euxanthone पृथक् किये गये। इनमें से प्रथम दो की संरचना का निर्धारण तथा प्रथम द्रव्य का संश्लेषण भी किया गया है।

४२८. इस लेख में इसके काण्डत्वक् से प्राप्त एक नये 4–alkylcoumarin–Ferruol का विवेचन है।

टी. आर. गोविन्दचारी, बी. आर. पाइ, पी. एस. सुब्रह्मनियम, यू. आर. राव एवं एन. मुथुकुमार स्वामी, टेट्रा., २३, १९६७, २४३-२४८; ४१६१-४१६५।

४२९. गुजरात के विभिन्न स्थानों में नागकेशर नाम से बिकनेवाले द्रव्यों का संग्रह किया गया है। उनमें से सूरत से आये नमूने में उपर्युक्त द्रव्य के पुंकेशर रहे। अन्य दो द्रव्य Ochrocarpus longifolius की कलिकाएँ एवं Cinnamomum sp. के कच्चे फल और स्थानों से प्राप्त हुवे। इनमें से M. ferrea का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कु. एस. सत्कोपन एवं पी. जे. थॉमस, नागा., १०, ९, १९६७, ४६१-४६७।

279. Michelia champaca Linn. **सं०-स्वर्णचम्पक**

४३०. इसके अपक्व फलों के विभिन्न सत्वों में चूहों की प्रारम्भिक गर्भावस्था पर कोई निरोधक प्रभाव नहीं देखा गया।

देखें–३१०।

280. Micromelum pubescens Linn.

४३१. इसके काण्डत्वक् से दो नये Coumarin–Micromelumin

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एवं Micropubescin पृथक् किये गये जिनकी संरचना का निर्धारण किया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, सी. पी. दत्ता एवं कु. एस. भट्टाचार्य, साइन्स, कल्चर, ३३, ८, १९६७।

281. Microstylis muscifera Ridley. सं०-जीवक

४३२. इसका कंद सम्भवतः अष्टवर्गोक्त 'जीवक' हो सकता है।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., २०, ३, १९६७, १५८; २०, १०-११, १९६८, ७७१।

282. Microstylis wallichii Lindl. सं०-जीवक, ऋषभक

४३३. अष्टवर्गोक्त जीवक एवं ऋषभक नाम से बजार में बिकनेवाले कंदों का वानस्पतिक स्रोत उपर्युक्त पौधा है। इनके स्वरूप आदि का वर्णन दिया गया है।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ९, १९६६, ४; २०, ३, १९६७, १५८; २०, १०-११, १९६८, ७७१।

४३४. अष्टवर्गोक्त जीवक नाम से बजार में बिकनेवाले द्रव्य के अध्ययन से उसका वानस्पतिक स्रोत उपर्युक्त पौधा निश्चित किया गया। इसका स्थूल एवं सूक्ष्म स्वरूप तथा प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है।

जे. के. भटनागर, एस. एस. शान्त, १८ हवीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, १९६६, इंडि. जर. फार्मे., २८, १२, १९६६, ३३९।

283. Millettia auriculata Baker ex Brand. हिं०-गोडार

४३५. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त Auriculatin नामक isoflavone की संरचना का अध्ययन है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एम. शबीर, ए. जमन, एल. सी., वी. टी. एवं डी. ए. डब्लू., जर. केमि. सोसा. इंग्लै., सी, १५, १९६८, १८९९-१९०१ ।

284. Mimosa pudica Linn. हिं०-लजवंती

४३६. चूँकि इसके phloem द्वारा विद्युत संवहन होता है इसलिये इसके पत्रनाल के बाह्य एवं आन्तरिक Phloem के विषय में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ में अन्य पौधों, M. himalayana एवं M. pigra का भी अध्ययन है।

वी. सी. कुण्डू एवं बी. साहा, एक्सपेरिएन्शिया, २४, ३, १९६८, २८७-२८८।

285. Mimusops elengi Linn. सं०-बकुल

४३७. इसके त्वक्, काण्ड, काष्ठ, पत्र एवं पुष्प का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

सी. पी. वहल, ए. बनर्जी एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३७, १, १९६८, १।

286. Mitragyna parvifolia (Roxb.) Korth. हिं०-करम, कैमा; सं०-कदम्ब भेद

४३८. इसके पत्तों का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पत्रों को केरल से प्राप्त किया गया था। नूतन काण्ड का भी अध्ययन है।

ई. जे. शैलार्ड एवं मार्लियन राइड, प्लॅन्टा मेडिका, १५, ३, १९६७, ३२३-३३६।

४३९. महाराष्ट्र से संग्रह किये गये इसके पत्तों में के क्षाराभ का अध्ययन किया गया है।

ई. जे. शेलार्ड, जे. डी. फिलिपसन एवं डी. गुप्ता, प्लॅन्टा मेडिका, १६, १, १९६८, २०-२७।

287. Mollugo hirta Thunb. सं०-भिस्सटा; हिं०-गंदी बूटी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४४०. इसके पंचांग के रासायनिक विश्लेषण से Mollugogenol नामक एक ट्राइटर्पिनाइड सॅपोजेनिन प्राप्त किया गया है।

कु. पी. चक्रवर्ती, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४४, ५, १९६७, ४५४-४५५।

288. Mollugo spergula Linn. हिं०-जिमशाक; म०-झरस

४४१. इस पौधे से एक Spergulagenic acid नामक sapogenin पृथक् किया गया है।

कु. पी. चक्रवर्ती, डी. के. एम. आर. सी. एवं ए. के. बी., जर. इंडि. केमि. सोसा., ४३, १, १९६६, ४१-४४।

४४२. इससे प्राप्त एक नये Triterpenoid sapogenin–Spergulagenic acid की संरचना तथा विन्यास रसायन का विवेचन है।

पी. चक्रवर्ती, डी. के. मुखर्जी, ए. के. वरुआ एवं बी. सी. दास, टेट्रा., २४, १९६८, ११०७-११११।

289. Momordica charantia Linn. सं०-कारवेल्लक

४४३. करेले का स्वरस (१ से २ औंस) मधुमेह में लाभदायक देखा जाता है। प्रस्तुत लेख में उससे प्राप्त Charantin जो कि एक स्टेरोल ग्लाइकोसाइड है, का अध्ययन किया गया है। टोल्यूव्यूटामाइड की तुलना में यह अधिक वीर्यशाली मालूम होता है। इसका कार्य प्रत्यक्ष अग्न्याशय (पैन्क्रीयाज) पर प्रभाव से तथा अन्य तरह से भी होता है। अन्य कार्यों की दृष्टि से यह सामान्य उद्वेष्ठन निरोधी एवं सौम्य कोलीनधर्मोत्तेजक क्रिया का अवरोध करनेवाला है। इसके फल का मधुमेह में लाभदायक गुण केवल इसी Charantin अंश में है ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्वरस की जितनी मात्रा से लाभ होने को कहा जाता है उसमें यह अंश बहुत ही अल्प रहता है। सम्भवतः इसके स्वरस की अपेक्षा संपूर्ण फल का उपयोग अधिक लाभदायक हो सकता है। इस दृष्टि से दीर्घकालीन विषाक्तता संबन्धी परीक्षण आवश्यक है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्रीमती एम. एम. लोटलीकर एवं एम. आर. राजाराम राव, इंडि. जर. फार्मे., २८, ५, १९६६, १२९-१३३ ।

४४४. १० मधुमेह के रोगियों पर इसका परीक्षण किया गया । इससे कोई लाभ नहीं देखा गया (ग्लूकोस सह्यता परीक्षण) । एक रोगी जिसका वजन घटा उसमें रक्त शर्करा सामान्य हुई । अन्यों में अतिसार होते हुए भी वजन नहीं घटा ।

जे. सी. पटेल. एम. के. धिरवानी एवं जे. सी. डोशी, इंडि. जर. मेडि. साइ., २२, १, १९६८, ३०-३२ ।

४४५. इसके फलरस का निस्सार खरगोशों को पिलाया गया । यह देखा गया कि इससे उपोषणानन्तर रक्तगत शर्करा में २३·३% ह्रास होता है जबकि जामुन की गुठली के निस्सार से ३४·६% ह्रास होता है ।

व्र. ना. लाल एवं कृ. दा. चौधरी, जर. रिस. इंडि. मेडि.; २, २, १९६८, १६१-१६४ ।

290. Morinda citrifolia Linn. सं०-आक्षिक

४४६. इसके मूल का उपयोग रंग के काम में किया जाता है। मूल के संपूर्ण सत्व में मनुष्यों में रक्त दबाव ह्रासक तथा पृथक्कृत गर्भाशय पर उद्वेष्ठनरोधी गुण बतलाया गया है । एसिटोन तथा सुरासारीय सत्व में वाहिका दाबह्रासी प्रभाव, कुत्ते में देखा गया । इसके एसिटोन सत्व के जलविलेय अंश में ग्लाइकोसाइड अंश है । इसी अंश का गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है । इससे रक्त दबाव कम नहीं होता । इसमें स्पष्ट उद्वेष्ठनरोधी गुण हैं । मेंढक के हृदय पर निरोधक प्रभाव रहा, किन्तु स्तनपायी प्राणी हृदय पर इसके विपरीत परिणाम देखा गया एवं कोरोनरी रक्त प्रवाह बढ़ा । इसका कार्य papaverine सदृश मालूम होता है ।

के. के. अग्रवाल, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार २१ ।

291. Moringa oleifera Linn. हिं०-सहेजन

४४७. देखें–२३१ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४४८. यह indoleglucosinolate का संश्लेषण नहीं करता जो कि इस गण (Rhoeadales) के अन्य वर्गों के विपरीत है। इसका वर्गीकरण विज्ञान की दृष्टि से (taxonomic) महत्व हो सकता है।

एच. एस., एक्स्पेरिएन्शिया, २३, २, १९६७, १०३।

४४९. इसके मूल के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन-रोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–५९।

292. Morus alba Linn. सं०-तूद

४५०. इसके काण्ड एवं मूलत्वक् के रासायनिक विश्लेषण से betulinic acid तथा ४ नये flavone derivative प्राप्त किये गये।

वी. एच. देशपाण्डे, पी. सी. पार्थसारथी एवं के. वेंकट रामन, टेट्राहेड्रान लेटर्स, १४, १९६८, १७१५-१७१६।

293. Mucuna pruriens Bak. सं०-कपिकच्छु

४५१. चूँकि द्विदलों में रक्त शर्करा एवं रक्तरस कोलेस्टेरॉल को कम करने के गुण पाये गये हैं इसलिये चूहों में इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया। यह इन दोनों अंशों को कम करता है।

एम. सी. पन्त, आइ. उद्दीन, यू. आर. भारद्वाज एवं आर. डी. तिवारी, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, १२, १९६८, १८०८-१८१२।

294. Murraya koenigii Spreng. हिं०-मीठा नीम

४५२. इससे पृथक् किये गये Pyranocarbazole–Mahanimbine की संरचना का विवेचन किया गया है।

डी. पी. चक्रवर्ती, के. सी. दास एवं पी. के. बोस, साइन्स, कल्चर, ३२, २, १९६६, ८३-८४।

295. Musa sapientum Linn. सं०-कदली

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४५३. प्राणियों में इसके पुष्पों का, रक्तगत शर्करा को कम करने की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। जनवरी में संग्रहीत 'ने पूवन' भेद के पुष्पों के क्लोरोफार्म विलेय अंश में यह गुण सबसे अधिक पाया गया। इसके रासायनिक संगठन का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। एक श्वेत रवेदार अंश में सबसे अधिक यह क्रिया पाई गई। यह रक्त दबाव को कम करता है तथा हृदयावसादक है।

स्ने. रा. जैन, प्लॅन्टामेडिका, १६, १, १९६८, ४३-४७।

296. Musa superba Roxb.

४५४. इसके बीजों का उपयोग चेचक की चिकित्सा में लाभदायक देखा गया था इसलिये चेचक के विषाणु पर इसके बीजों का अध्ययन किया गया।

एम. ए. आयंगार एवं जी. एस. पेंडसे., प्लॅन्टामेडिका, १५, ४, १९६७, ४१६-४१९।

297. Myristica fragrans Houtt. सं०-जाती फल

४५५. इसके बीजों के स्नेहविरहित अंश से पृथक् किये गये Genin की पहचान की गई है, जो oleanolic acid है।

आइ. पी. वार्शने एवं एस. सी. शर्मा, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ८, १९६८, ४७४।

298. Myrtus communis Linn. हिं०-विलायती मेंहदी

४५६. इसके पत्तों का रासायनिक संघटन प्रस्तुत किया गया है।

एच. आइ. एल. सिरसी एवं एम. ए. आइ. एल. अन्सारी, प्लॅन्टामेडिका, १५, १, १९६७, ४१-५१।

299. Nardostachys jatamansi DC. सं०-जटामांसी

४५७. चूहों में अनेक प्रयोगों द्वारा इसके सुरासारीय सत्व का मानस कार्य संबंधी अध्ययन किया गया है। मानस पर कार्य करनेवाली औषधियों में

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पाये जानेवाले हिस्टामीन रोधी, सिरोटोनिन रोधी एवं ऍसिटिलकोलीन रोधी प्रभाव भी इसमें हैं। साथ में Rhus succedanea का भी अध्ययन है।

एस. एस. गुप्त, सी. बी. सेठ, ह्वी. एस. माथुर, श्रीमती सी. घूई एवं आर. के. वर्मा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माको., १०, १, १९६६, ५-१४।

४५८. इसका शीतजलीय निस्सार शंखपुष्पी की तरह रक्तचाप को कम करता है।

देखें—२२५।

४५९. इसका प्रयोग मानसिक रोग जैसे—अपस्मार, मूर्च्छा, उन्माद एवं कम्प से पीड़ित १२ रोगियों में किया गया। यह न्यूनतम मात्रा में उत्तेजक तथा अधिक मात्रा में अवसादक है। इसमें कोई विषैला परिणाम नहीं दिखलाई दिया। धृति, स्मृति, निद्रा, भ्रम, मूर्च्छा आदि के विकारों में यह लाभ करती है।

जे. के. ओझा, नागा., ९, १२, १९६६, ५०२-५०६।

४६०. इसके पूर्व जटामांसी के धूसर भूरे भेद का रासायनिक अध्ययन किया गया है। इस लेख में इसके गहरे भूरे वर्ण के भेद के कुछ रासायनिक संघटकों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें पाये गये एक नये sesquiterpene alcohol के स्वरूप का विवेचन है जिसका नामकरण Nardol किया गया है।

एस. डी. शास्त्री, एम. एल. माहेश्वरी एवं एस. सी. भट्टाचार्या, टेट्रा. लेट., १०, १९६६, १०३५-१०४२।

४६१. इसके मूल से एक नया Terpenoid–Calarenol पृथक् किया गया एवं उसकी संरचना का निर्धारण भी किया गया है।

एस. डी. शास्त्री, एम. एल. एम., के. के. सी., एवं एस. सी. बी., टेट्रा., २३, १९६७, १९९७-२०००।

४६२. इसके मूल से प्राप्त Terpenoid–Nardostachone की संरचना

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

का निर्धारण किया गया है।

एस. डी. शास्त्री, एम. एल. एम., के. के. सी. एवं एस. सी. वी., टेट्रा., २३, १९६७, २४९१-२४९३।

४६३. बिल्ली में विद्युत द्वारा केन्द्र को उत्तेजित करके उत्पन्न की गई हृद् गति की अनियमितता पर इसके क्षाराभ का अध्ययन किया गया है। यह इस अनियमितता को रोकने में समर्थ है। दूसरे प्रयोग में, सुषुम्ना कटी हुई बिल्ली में यह निकोटीन की तरह केन्द्र द्वारा हृद्गति को बढ़ाता है।

एस. एस. गुप्त, ई. डगलस, जी. एम. लिंग एवं आर. पी. भार्गव, इंडि. जर. फीजियोला. फार्माकोला., सार, ११, २, १९६७, ५६।

४६४. इससे प्राप्त एक द्रव्य Jatamansone का अध्ययन इस दृष्टि से किया गया है कि विभिन्न प्राणियों में एक ही द्रव्य के भिन्न-भिन्न परिणाम होने से कौन सा प्राणी विस्तृत अध्ययन के लिये उपयुक्त हो सकता है। इस दृष्टि से इसके लिये बिल्ली अधिक उपयुक्त पाई गई। कुछ रोगियों में इससे ८/१० दिन में लाभ हुआ।

सी. के. अरोरा, आर. बी. अरोरा, यू. के. शेठ एवं एम. जे. शाह, इंडि. जर. मेडि. साइ., २१, ७, १९६७, ४५५-४६०।

300. Nelumbium speciosum Willd. **सं०-कमल**

४६५. इसके श्वेत तथा रक्त पुष्पों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

एस. नागराजन, ए. जी. आर. नायर, एस. रामकृष्णन एवं एस. एस. सुब्रमनियन, करेंट साइन्स, ३५, ७, १९६६, १७६-१७७।

301. Neolitsea zeylanica Merr.

४६६. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से ६ sesquiterpene पृथक् किये गये जिनमें से प्रथम दो Linderalactone एवं Linderane का विवेचन किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४६७. उपर्युक्त sesquiterpene में से Neolinderane की संरचना का निर्धारण किया गया है।

४६८. उपर्युक्त sesquiterpene में से शेष तीन Zeylanine, Zeylanicine एवं Zeylanidine की संरचना का निर्धारण किया गया है।

वी. एस. जोशी, वी. एन. कामत एवं टी. आर. गोविन्दचारी, टेट्रा., २३, १९६७, २६१-२६५; २६७-२७१; २७३-२७७।

302. Nepeta hindostana (Roth) Haines **पं०-बद्रंग बोथा, बिल्ली लोटन**

४६९. इसके पंचांग से एक नया flavone glucoside–Nepitrin पृथक् किया गया है। इसका जो रासायनिक स्वरूप पाया गया वह पहले Pedaliin के लिये बतलाया गया था जो कि तिल में पाया गया है। चूँकि दोनों में स्पष्ट अन्तर है इसलिये Pedaliin का नया स्वरूप बतलाया गया है।

एन. आर. कृष्णस्वामी, टी. आर. शेषाद्रि एवं पी. जे. ताहिर, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ११, १९६८, ६७६-६७७।

303. Nigella sativa Linn. **हिं०-मंगरैल**

४७०. इसके बीजों के सुगन्धि तैल की जीवाणुनाशक क्रिया का अध्ययन किया गया है। पिप्पली आदि के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी है।

ए. के. भार्गव एवं सी. एस. चौहान, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, ६, १९६८, १५०-१५१।

४७१. यह चूहों में काफी दुग्धवृद्धि करता है तथा साथ में स्तन ऊतक की भी वृद्धि (Proliferation) होती है जब कि जीरे से केवल ऊतक वृद्धि ही पाई गई।

आइ. पी. अग्रवाल, एम. वी. एस. अचर, आर. वी. बोरकर एवं एन. राय, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५६, ६, १९६८, ८४१-८४४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

304. Nomocharis oxypetala Royle. सं०-काकोली

४७२. हिमालय में पाये जानेवाले उपर्युक्त पौधे के कंद अष्टवर्गोक्त काकोली हो सकते हैं। यह पीवरी सदृश होते हैं।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., २०, ३, १९६७, १९०।

305. Nothosaerva brachiata Wt.

४७३. दक्षिण में शास्त्रीय पाषाण भेद नाम से इसका भी प्रयोग करते हैं। इसके स्थूल स्वरूप का भी वर्णन है।

देखें–३२।

306. Nyctanthes arbor-tristis Linn. सं०-पारिजात

४७४. इसके पत्तों के क्लोरोफार्म विलेय सत्व में एक ही अल्कलायड पाया गया। इस क्षाराभ के हाइड्रोक्लोराइड के जलीय घोल का गुणकर्मात्मक अध्ययन किया गया। खरगोश के क्षुद्रांत्र पर इसका शिथिलकर एवं उद्वेष्टन रोधी प्रभाव देखा गया। इसमें रक्त दवाव को कम करने का गुण स्पष्ट देखा गया। मेढक के तन्त्रिका विहीन हृदय पर इससे प्रारम्भ में हृदय संकोच की शक्ति में कमी हुई एवं वाद में गति वढ़ी।

डी. एन. मजुमदार एवं ए. के. अग्रवाल, १८ हवीं फार्मा. कांग्रे., १९६६, इंडि. जर. फार्मे., २८, १२, १९६६-३४०।

307. Ocimum species सं०-तुलसी प्रजाति

(i) Ocimum americanum Linn.
(ii) O. gratissimum Linn.
(iii) O. kilimandscharicum Guerke
(iv) O. sanctum Linn. var. sanctum.

४७५. इस अध्ययन में उपर्युक्त तुलसी भेदों के पत्तों का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है। इनके चूर्ण को भी पहिचाननें की दृष्टि से उनके विभेदक लक्षणों को बतलाया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्रीमती एस. गुप्ता, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १६६७, ३५-४७।

308. Ocimum basilicum Linn.

गु०-बावची; हिं०-बबुई तुलसी, सबजा

४७६. यद्यपि बावची यह Psoralea corylifola के फल हैं तथापि मध्य गुजरात के अनेक भागों में उपर्युक्त पौधे (O. basilicum) के बीज बावची नाम से बिकते हैं। इनका स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कु. सत्कोपन एवं कु. एस. आर. रावल, नागा., १०, १२, १६६७, ६४६-६५०।

309. Ocimum gratissimum Linn. **हिं०-रामतुलसी**

४७७. वानस्पतिक पदार्थों में राजयक्ष्मा दण्डाणु रोधी क्रिया के सम्बन्ध में अनेक द्रव्यों का अध्ययन राजयक्ष्मा दण्डाणु सम्वर्ध पर किया गया हैं जिनमें से Ocimum gratissimum के सुगन्धि तैल एवं Eucalyptus citriodora के गोंद में निरोधक गुण पर्याप्त पाया गया।

ए. एस. रामस्वामी एवं एम. सिरसी, इंडि. जर. फार्मेसी, २६, ५, १६६७, १५७-१५६।

310. Ocimum sanctum Linn. **सं०-तुलसी**

४७८. चूहों पर प्रयोग में इसके पत्रों के जलीय सत्व में गर्भरोपण विरोधी क्रिया पायी गई। साथ में अन्य द्रव्यों के सत्वों का भी अध्ययन किया गया है। इन अध्ययनों में ऐसी विधि अपनाई गई है कि जिससे किसी भी प्रकार की गर्भ हानिकर या विरोधक क्रिया का पता लग सके।

एस. वी. बोहरा, एस. के. गर्ग एवं आर. आर. चौधरी, सार., २० वीं इंडि. फार्मे. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १६६८, २८७-२८८।

311. Ochrocarpus longifolius B. & H. **हिं०-नागकेशर**

४७६. नागकेशर नाम से गुजरात में बिकनेवाले द्रव्यों में से उपर्युक्त वृक्ष

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

की कलिकाओं का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन तथा उनके चूर्ण का अध्ययन प्रस्तुत है।

कु. एस. सत्कोपन एवं पी. जे. थॉमस, नागा., ११, २, १९६७, ६७-७२।

312. Oldenlandia umbellata Linn. ता०-इम्बूरल (Imbural)

४८०. श्वास, कास, रक्तष्ठीवन आदि के लिए दक्षिण में प्रसिद्ध औषध इंब्यूरल का वानस्पतिक स्रोत उपर्युक्त पौधा है। इसमें कभी-कभी O. shuteria की मिलावट रहती है। उपर्युक्त पौधे के रासायनिक विश्लेषण से सात anthraquimone derivative प्राप्त किये गये जिनमें से कुछ ग्लाइकोसाइड हैं। इनमें से एक में कुछ राजयक्ष्मा दण्डाणु रोधी क्रिया पाई गई। रोगियों में भी इनका अध्ययन चालू है।

वी. नारायण स्वामी, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २९७।

313. Oleandra neriifolia.

४८१. इस फर्न के रासायनिक विश्लेषण से neriifoliol नामक एक नया triterpene alcohol पृथक् किया गया है।

जी. एन. पाण्डे एवं सी. आर. मित्रा, टेट्रा. लेट., १५, १९६७, १३५३-१३५७।

314. Oleandra wallichii (Hook.) Pr.

४८२. इसके रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त triterpene hydrocarbons का विवेचन किया गया है।

जी. एन. पाण्डे एवं सी. आर. मित्रा, टेट्रा. लेट., ४७, १९६७, ४६८३-४६८८।

315. Onosma bracteatum Wall. हि०-गुले गाँवजवां

४८३. यद्यपि अनेक पुस्तकों में गुले गांवजवां का उपर्युक्त वानस्पतिक स्रोत लिखा मिलता है तथापि प्रत्यक्ष परीक्षण से यह बात सिद्ध नहीं हुई।

देखें—६०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

316. Opuntia elatior.

४८४. इसके फूलों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसमें के ग्लाइकोसाइड की पहचान की गई जो Narcissin है।

मो. शब्बीर एवं आ. जमन, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, १, १९६८, ८१।

317. Orchis latifolia Linn. हिं० सालब

४८५. इसकी उपज, संग्रह तथा विक्रय सम्बन्धी अध्ययन किया गया है। साथ में पौधे का चित्र भी है।

रा. गुप्त, इंडि. फारे., ९२, ११, १९६६, ७०१-७०३।

318. Ougeinia dalbergioides Benth. सं०-तिनिश

४८६. इसके काष्ठसार का रासायनिक विश्लेषण किया गया है जिसमें flavonoids तथा isoflavonoids का अध्ययन है।

वी. के. आहलूवालिया, जी. पी. सचदेव एवं टी. आर. शेषाद्रि, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ५, १९६६, २५०-२५१।

319. Paederia foetida Linn. सं०-गंधप्रसारणी

४८७. प्राणियों में फार्मेल्डिहाइड द्वारा उत्पन्न किये गये कृत्रिम संधिशोध में इसके विभिन्न निःस्सारों का अध्ययन किया गया। इनमें से सुरासारीय निःस्सार के जलविलेय अंश में अच्छे परिणाम मिले।

जी. एन. चतुर्वेदी एवं आर. एच. सिंग, ह्यूमेटिस्म, १, ३, १९६६, १२५-१३३।

४८८. बला के समान ही सन्धिशोथ में इससे लाभ देखा गया। देखें-६१०।

४८९. प्राणियों में कृत्रिम रूप से उत्पन्न किये गये सन्धिशोथ में इसके सुरासारीय निस्सार के जल विलेय अंश में शोथहर गुण देखा गया। रोगियों के परीक्षण में इससे कोई स्पष्ट परिणाम नहीं कहे जा सकते क्योंकि बहुत ही थोड़े रोगियों में इसका परीक्षण अभी तक किया जा सका है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आर. एच. सिंग, ह्यू मेटिस्म, २, ४, १९६७, २७२-२७५ ।

320. **Paeonia emodi Wall.** हिं०-उदसलीब

४६०. इसके कंदों के क्वाथ में गर्भाशय बलकारक (uterotonic) क्रिया है। साथ में अन्य द्रव्य शरीफा (तना, पत्र), जोंखामारी तना (Anagallis arvensis Linn.), पृष्णिपर्णी (काण्ड, पत्र), सेमल बीज (Bombax malabaricum) एवं उलट कंबल (काण्ड) का भी अध्ययन है, जिनमें यह गुण कम है।

एम. बी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एस. मिश्रा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५९-६० ।

४६१. इनका स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं विभिन्न रसायनों के संपर्क में आने पर होनेवाले परिणामों का उल्लेख है। इसके चूर्ण का भी अध्ययन प्रस्तुत है।

ए. पी. शर्मा, नागा., १०, ५, १९६७, २११-२१६ ।

४६२. इसके मूल के जलीय सत्व का प्राणियों में गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है। प्रारम्भिक अध्ययन में इसके जलीय सत्व में क्षाराभ, स्टेरॉल, शर्करा तथा स्टार्च नहीं पाये गये किन्तु टैनिन पाया गया। शीतजल सत्व में कोई क्रिया नहीं थी, किन्तु उष्ण जल सत्व (क्वाथ) क्रियाशील है। सुरासारीय सत्व में कोई क्रिया पूर्व वैज्ञानिकों (बी. एन. धवन आदि, इंडि. जर. मेडि. रिस. ४६, ८०८, १९५८) द्वारा नहीं पाई गई थी। इसमें सभी प्राणियों में कम या अधिक गर्भाशय संकोचक गुण पाया गया। मेढक के हृदय पर अवसादक एवं गिनीपिग तथा खरगोश के आंत्र पर संकोचक क्रिया देखी गई। कुत्ते के श्वसन, रक्तदवाव, मेढक की उदरपेशी, खरगोश की आँख तथा साधारण मानसिक क्रियाओं पर कोई परिणाम नहीं पाया गया।

एम. बी. मिश्रा, वी. बी. दीक्षित, एस. एस. मिश्रा एवं आर. के. मिश्रा, इंडि. जर. मेडि. साइ., २२, ७, १९६८, ४६३-४६५ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

321. Pancratium longiflorum Roxb.

४९३. इस वर्ग की अन्य वनस्पतियों का रासायनिक विश्लेषण हो चुका है किन्तु इसका अध्ययन नहीं हुआ था। प्रस्तुत विश्लेषण से इसके कंदों से एक नया क्षाराभ पृथक् किया गया है जिसका नामकरण Nor-neronine किया गया है।

एस. रंग स्वामी एवं आर. वी. कृष्ण राव, टेट्रा. लेट., ३७, १९६६, ४४८१-४४८४।

322. Parkinsonia aculeata.

४९४. अमेरीका के इस आदिवासी पौधे की पत्तियों के विश्लेषण से तीन C–glycoside—Epi-orientin, Parkinsonin–A&B प्राप्त किये गये।

वी. के. भाटिया, एस. आर. गुप्ता एवं टी. आर. शेषाद्रि, टेट्रा., २२, १९६६, ११४७-११५२।

323. Paspalum scrobiculatum Linn. हिं०-कोदो

४९५. इस धान्य की भूसी में एक सौमनस्यकारक द्रव्य (Tranquillizer) रहता है जिससे कभी-कभी विषैला परिणाम होता है। इसलिये कुत्ते के द्वारा इस द्रव्य की जैविकीय मात्रा निर्धारण की आसान पद्धति का उल्लेख इस अध्ययन में किया गया है, जिससे किसी भी नमूने में के विषैले परिणाम को पहले से जाना जा सके।

एस. के. मेहता, इन्द्रगुप्त, एवं एन. के. भिडे, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, ६, १९६८, १४२-१४६।

324. Pedalium murex Linn. हिं०-बड़ा गोखरू

४९६. पुनर्नवा की तुलना में इसमें मूत्रल गुण नहीं पाया गया।

देखें–१२२।

325. Peristrophe bicalyculata Nees हिं०-मसी, काकजंघा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४९७. चूँकि इसे भी पित्तपापडा कहा गया है इसलिये Fumaria indica के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

देखें–३३६।

326. Peucedanum grande C. B. Clarke. यू०-दुकू

४९८. दुकू उपर्युक्त पौधे के फल हैं जो दक्षिण में पश्चिमी घाट से संग्रह किये जाते हैं तथा बंबई के बजार में वाफली नाम से बिकते हैं तथा वहीं से सभी स्थानों पर भेजे जाते हैं। अन्य यूनानी मतों का खण्डन किया गया है।

रा. सु. सिंह, नागा., १०, १०१, १९६७, ५१८-५१९।

327. Phoenix sylvestris Linn. हि०-खजूर

४९९. इसके पत्तों का अन्तःपात्र (in vitro) में संवर्ध करके उनकी सूक्ष्म रचना में क्या परिवर्तन होता है इसका अध्ययन किया गया है।

डी. पद्मनाभन, इंडि. जर. एक्स्पे. बायो., ५, ३, १९६७, १७१-१७२।

328. Picrorhiza kurrooa Royle ex Benth. सं०-कटुका

५००. कामला के विभिन्न प्रकार के रोगियों में कुटकी या उसके योगों का उपयोग किया गया। इनमें पर्याप्त लाभ हुआ। औपसर्गिक यकृतशोथ में अधिक लाभ हुआ। कुटकी संभवतः बिलिरूबीन के उत्सर्ग को बढ़ाकर एवं यकृत कोशाओं का पुनर्जनन करके लाभ पहुँचाती है।

गो. ना. चतुर्वेदी, रा. ह. सिंह, जर. मेडि. साइ. ५, २, जुलाई १९६४; जर. रिस. इंडि. मेडि., १, १, १९६६।

५०१. कुटकी के ९०% मद्यसारीय सत्व के जलविलेय अंश का प्राणियों में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें कुछ अवयवों पर उद्वेष्टन निरोधी तथा शैथिल्यकारी प्रभाव देखा गया। कुत्ते में शिरा द्वारा प्रयोग से दीर्घकालिक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पित्तसारक प्रभाव एवं श्वेत चूहों में मुख द्वारा प्रयोग से सारक प्रभाव देखा गया।

पी. के. दास एवं एम. के. रैना; जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६७, २१३-२२२।

५०२. कार्बन टेट्रा क्लोर से खरगोशों में उत्पन्न की गई यकृत् विकृति में इसके सुरासारीय सत्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। यह देखा गया कि इसमें कार्बन टेट्राक्लोर से उत्पन्न यकृत् विकृति को रोकने का गुण है जिससे यकृत् सिरोसिस में कुटकी के लाभप्रद होने का अनुमान किया जा सकता है।

वि. न. पाण्डे एवं गो. ना. चतुर्वेदी, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, २५-३५।

329. Pinus longifolia Roxb. सं०-सरल

५०३. इसके सुगन्धि तैल से एक नया Sesquiterpene–Longicyclene पृथक् किया गया है तथा उसकी संरचना का निर्धारण भी किया गया है।

यू. आर. नायक एवं सुखदेव, टेट्रा., २४, १९६८, ४०९९-४१०४।

330. Piper aurantiacum Wall. सं०-रेणुक

५०४. इसके फलों के सुरासारीय सत्व में गर्भाशय संकोचक गुण देखा गया। इसमें क्षाराभ की उपस्थिति पाई गई। इसकी यह क्रिया मस्केरीन जैसी है।

एस. पी. बनर्जी, पी. सी. डंडिया एवं वाइ. एम. चोप्रा, इंडि. जर. फार्मेसी, २८, १२, १९६६, ३४५; एस. पी. बनर्जी एवं अन्य, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., ११, ४, १९६७, १३९-१४६।

331. Piper betle Linn. सं०-ताम्बूल

५०५. इसके पत्तों एवं तैल की जीवाणु विरोधी क्रिया का अध्ययन क्रिया गया है। सागर बंगला पान से प्राप्त तैल में सबसे अधिक यह गुण पाया गया। पत्तों की इस क्रिया का आगे अध्ययन आवश्यक है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जी. पी. वांगड़, आर. ई. राव, के. सी. वर्मा, इण्डि. जर. फार्मं., २८, १२, १९६६, ३२७-३२८।

५०६. प्राणियों के हृदय पर इसके पत्र की क्रिया का अध्ययन किया गया है। इसके सुरासारीय सत्व के जलविलेय अंश में सबसे अधिक क्रिया पाई गई एवं मुख द्वारा इसका शीघ्र तथा स्थिर प्रभाव होता है। यह हृदय की अनियमितता को दूर करके एवं गति कम करके उसकी शक्ति को बढ़ाता है। इसके कार्यों को आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के आधार पर भी सिद्ध किया गया है।

प्रि. व्र. शर्मा एवं च. चतुर्वेदी, सचि. आयु., २०, ४, १९६७, २१५-२१८।

५०७. प्राणियों पर प्रयोग से देखा गया कि हृदय पर इसके सुरानिस्सार का जलविलेय अंश क्विनीडीन की तरह प्रभाव करता है। इसका कार्यकर अंश जल में विलेय है और यह उष्णता से नष्ट होता है। इसके अन्य निस्सार जैसे जलीय, सुराजन्य, पेट्रोलियम ईथर जन्य में क्रमशः कम प्रभाव देखा गया।

प्रि. व्र. शर्मा, च. चतुर्वेदी; नागार्जुन, फरवरी, १०, ६, १९६७, २५७-२६२।

५०८. प्राणियों में इसके प्रयोग से देखा गया कि यह हृदय की गति को कम करता है तथा प्रसारकाल एवं विश्रान्तिकाल को बढ़ाकर गति को नियमित करता है। मुखद्वारा प्रयोग से भी इसका तत्काल प्रभाव होने लगता है तथा वह बना रहता है।

प्रि. व्र. शर्मा, च. चतुर्वेदी, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६७, १७९-१८९।

५०९. इसके सुगन्धि तैल का प्राणियों में गुणकर्मीय अध्ययन किया गया। इससे रक्त दबाव, हृदय की गति तथा संकोच में कमी होती है। गर्भाशय तथा अन्य अनैच्छिक मांसपेशी पर इसका शिथिलकर प्रभाव पड़ता हैं। केंचुवे के लिए यह चिनोपोडियम के तेल के समान हानिकर है।

एस. एम. अली एवं आर. के. मेहता, सार, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

332. Piper cubeba Linn. f. हि०-कबाबचीनी

५१०. इसके तेल के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त दो Sesquiterpene hydrocarbon—α–cubebene एवं β–cubebene का विवेचन उनकी संरचना की दृष्टि से किया गया है।

वाई. ओ., टी. एस. एवं वाई. एच., टेट्रा. लेट., ५१, १९६६, ६३६५-६३७०।

333. Piper hookeri Linn.

५११. इसके पत्तों के रासायनिक संगठन का विवेचन किया गया है।

ज. सिंग एवं सी. के. अटल, सार, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८१।

334. Piper longum Linn. सं०-पिप्पली

५१२. इसके रासायनिक विश्लेषण से Sesamin प्राप्त हुआ जो कि तिल में मिलता है। तिल तथा पिप्पली इनके वानस्पतिक वर्गों में कोई सम्बन्ध न होते हुए भी इसका पिप्पली में पाया जाना उल्लेखनीय।

सी. के. अटल, आर. एन. गिरोट्रा एवं के. एल. धर, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ५, १९६६, २५२।

५१३. इससे पृथक् किये गये क्षाराभ Piperlonguminine की संरचना का विवेचन किया गया है।

ए. चटर्जी एवं सी. पी. दत्ता, टेट्रा. लेट., १६, १९६६, १७९७-१८००।

५१४. प्राणियों में पिप्पली रसायन का वर्धमान क्रम से प्रयोग किया गया। यह देखा गया कि इससे रक्तरस के संपूर्ण प्रोटीन तथा बीटा ग्लोब्युलीन की वृद्धि तथा गामा ग्लोब्युलीन का ह्रास एवं अल्फा ग्लोब्यूलीन की अल्प वृद्धि होती है।

अ. तिवारी, एस. पी. सेन, एल. वी. गुरु, इंडि. मेडि. गजेट, दिसम्बर, ६, ८, १९६६, २२-२९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५१५. इसकी जड़ से दो नये क्षाराभ Piperlongumine एवं Piperlonguminine पृथक् किये गये। इनकी संरचना तथा संश्लेषण सम्बन्धी अध्ययन किया गया है।

ए. चटर्जी एवं सी. पी. दत्ता, टेट्रा., २३, १९६७, १७६९-१७८१।

५१६. इसके रासायनिक विश्लेषण से Pellitorine की तरह का isobutylamide इसमें पाया गया। यह द्रव्य इसके पूर्व केवल Compositae एवं Rutaceae वर्ग में होने की बात ज्ञात थी।

के. एल. धर एवं सी. के. अटल, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, ११, १९६७, ५८८-५८९।

५१७. पेट्रोलियम ईथर द्वारा निकाले इसके सत्व एवं इसके दो अमाइड, पाइपर लांगुमीन (Piper Longumine) एवं पाइपरीन (Piperine) का अध्ययन प्राणियों में किया गया। प्रारम्भिक अध्ययन से मालूम हुआ कि तीनों ही अंश अवसादक प्रभाव करनेवाले हैं। खरगोश एवं गिनीपिग के आंत्र, चूहे तथा गिनीपिग के गर्भाशय, मेढक के हृदय तथा रेक्टस मांसपेशी एवं खरगोश की आंख आदि पृथक्कृत अवयवों पर इनका प्रभाव प्रस्तुत किया गया है। कुत्ते के रक्त दबाव तथा श्वसन पर भी अध्ययन किया गया है। सत्व में उद्वेष्ठन निरोधी गुण देखा गया किन्तु गर्भाशय पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। सत्व से रक्त दबाव में अल्पकालिक ह्रास देखा गया।

वीरेन्द्र प्रसाद, एन. चौधरी, बी., जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, २, १९६७, २०३-२१२।

५१८. इसमें के सुगन्धि तैल की जीवाणुनाशक क्रिया का अध्ययन किया गया है। Alpinia galanga (मूल), Vateria indica (निर्यास), Saccopetalum tomentosum (पत्र) एवं Nigella sativa (बीज) के सुगन्धि तेलों का भी अध्ययन साथ में है। इनमें से पिप्पली में सबसे अधिक तथा S. tomentosum में सबसे कम यह गुण पाया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ए. के. भार्गव एवं सी. एस. चौहान, इंडि. जर. फार्मे., ३०, ६, १९६८, १५०-१५१।

५१९. पिप्पली रसायन के इस प्रयोग में उपर्युक्त (४१५) प्रयोग के समान ही, प्रोटीन तथा शरीर भार पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसमें उपर्युक्त परीक्षण के परिणाम ही देखे गये किन्तु अल्फा$_2$ ग्लोब्यूलिन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। साथ ही साथ दो मास के पश्चात् भार में वृद्धि हुई।

अ. तिवारी, एस. पी. सेन, एल. वी. गुरु, नागार्जुन, ११, ९, मई १९६८, ४६२-४६५।

५२०. इसके काण्डत्वक् तथा मूल से पृथक् किये गये क्षाराभ Piplartine की संरचना का विवेचन किया गया है।

वी. एस. जोशी, वी. एन. कामत एवं ए. के. सक्सेना, टेट्रा. लेट., २०, १९६८, २३९५-२४००।

335. Piper nigrum Linn. सं०-मरिच

५२१. इसके फलों के जलीय, ईथरीय एवं सुरासारीय सत्वों के कृमिघ्न गुण का अध्ययन किया गया। इनमें से सुरासारीय सत्व में स्फीतकृमि (Cestode) नाशक गुण सबसे अधिक तथा जलीय में सबसे कम रहता है। Trematode एवं Nematode पर कोई प्रभाव नहीं है।

एम. सी. श्रीवास्तव, एस. डब्लू. सिंग, जे. पी. तिवारी, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, ३, १९६८, ६५-६६।

336. Piper peepuloides Royle सं०-पिप्पली

५२२. इसके रासायनिक विश्लेषण से Pellitorine की तरह का isobutylamide इसमें पाया गया जो द्रव्य इसके पूर्व केवल Compositae एवं Rutaceae वर्ग में होने की बात ज्ञात थी।

के. एल. धर एवं सी. के. अटल, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, ११, १९६७, ५८८-५८९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५२३. आसाम से संग्रहीत इसके भेद (आसामी–सावली पीपल) के फलों का प्रारम्भिक गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है। चूँकि बेंज़ीन की अपेक्षा पेट्रोलियमईथरीय सत्व में अधिक क्रियाशीलता मिली इसलिये इसी का अध्ययन आगे किया गया। प्राणियों में इससे आक्षेप उत्पन्न होते हैं। स्ट्रीकनीन आदि के आक्षेपक गुण को यह बढ़ाता (Synergistic) है। यह पेन्टोबार्बिटोन के निद्राजनक गुण को बढ़ाता है तथा ॲम्फेटामाइन की विषाक्तता को भी बढ़ाता है। खरगोश की रक्तशर्करा पर इसका कोई परिणाम नहीं हुआ।

श्रीमती एन. चान्दोके एवं बी. जे. राय घटक, इण्डि. जर. एक्सपेरि. बायो., ६, १, १९६८, ३३-३५।

५२४. इसके रासायनिक पृथक्करण से प्राप्त द्रव्य Peepuloidin की संरचना का अध्ययन किया गया है।

सी. के. अटल, पी. एल. मोभा एवं ए. पेल्टर, टेट्रा. लेट., ११, १९६८, १३९७-१४००।

337. Pisum sativum Linn. हिं०-मटर

५२५. Gibberellic acid के इस पौधे पर छिड़काव से होनेवाले परिणामों का अध्ययन किया गया है। यह देखा गया ४ सप्ताह पुराने पौधों (पुष्पोद्गमपूर्व) पर इस हारमोन के छिड़काव से अधिक फलियाँ प्राप्त होती हैं जब कि ८ सप्ताह के पौधों (पुष्पकालिक) पर छिड़काव से कम।

एम. एस. मनोहर, एम. के. माथुर, एवं एच. एस. डौले, एक्सपेरिएन्शिया, २३, १, १९६७, ४५-४६।

338. Pithecolobium dulce (Roxb.) Benth. हिं०-दक्खनी बबूल

५२६. इस तीसरे लेख में इसके तने की छाल का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके पूर्व फल एवं इसके तेल का अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. के. निगम एवं सी. आर. मिश्रा, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ८, १९६७, ३६५।

५२७. इसके पुष्प तथा काष्ठसार एवं मूलत्वक् के रासायनिक घटकों का अध्ययन है।

एस. के. निगम, सी. आर. मित्रा, प्लॅन्टामेडिका, १६, ३, १९६८, ३३५-३३७।

339. Plantago ovata Forsk. हिं०-इसबगोल

५२८. इसके स्थूलपरिचय के साथ इसका कृषि सम्बन्धी विस्तृत विवेचन है।

वी. चन्द्रा, इण्डि. ड्रग्स, ५, ४, १९६८, २१-२५।

५२९. इसका कृषि सम्बन्धी अध्ययन किया गया है। विभिन्न खाद का क्या परिणाम होता है इसका विवेचन है। यह देखा गया कि अमोनियम सल्फेट २८० किलो एवं सुपर फास्फेट ४९८ किलो प्रति हेक्टर की मात्रा में देने से अधिकतम बीज प्राप्त हुए। बिना खाद की अपेक्षा खाद से ३८-३९% वृद्धि हुई।

प्र. जोशी, के. सी. तिवारी एवं बी. वी. एल. यादव, इंडि. फारेस्टर, ९४, ५, १९६८, ३८९-३९६।

340. Plectranthus incanus Link. (Fam. Labiatae)

५३०. विभिन्न रोगों में इस पौधे के प्रचलन को देखते हुये इसके पत्र तथा पुष्पित अग्र का वाष्प द्वारा आस्रुत सुगन्धि तैल, उसके गुणकर्म के अध्ययन के लिए प्रयुक्त किया गया। प्राणियों में यह हृदयावसादक, श्वसनोत्तेजक, वाहिका संकीर्णक एवं मांसपेशी शिथिलकर कार्य करता है। इन कार्यों से यह अनुमान होता है कि इसमें एक से अधिक कार्यकारी तत्व हैं जो प्रायः इस वर्ग के सुगन्धि तैलों में हुवा करते हैं।

आर. के. शर्मा एवं एस. एम. अली, इण्डी. जर. फार्मेसी, २८, २, १९६६, ३१-३३।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

341. Plectronia parviflora Bedd. म०-कोनी

२३१. अतिसार आदि में लाभदायक इस पौधे के पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से D–mannitol पृथक् किया गया।

एच. के. दत्ता, एस. एन. गांगूली एवं ए. के. भट्टाचार्य, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४३, ५, १९६६, ३८०।

342. Pluchea lanceolata Linn. सं०-रास्ना

५३२. चूहों में कृत्रिम् शोथ उत्पन्न करके इसके शुष्क काण्ड के ९०% सुरासारीय सत्व के जलविलेय अंश का अध्ययन इसके शोथहर गुण के लिए किया गया। तुलना के लिये आधुनिक औषध बिटामिथेसोन का उपयोग किया गया। इसी तरह एलीसेटीन (रसोन योग), अंकोट पत्र सत्व, वातचिन्तामणी (श्री वैद्यनाथ आ० भवन लि०) का भी अध्ययन किया गया। इनमें से रास्ना में सबसे अधिक शोथहर (anti-inflammatory) प्रभाव देखा गया। रसोन में यह कुछ हद तक रहा। वातचिन्तामणी में शोथहर प्रभाव नहीं देखा गया। अंकोट में प्रारम्भ में शोथ वृद्धि हुई किन्तु वाद में ह्रास हुवा किन्तु इसमें विषाक्तता अधिक थी। सभी द्रव्यों से आहार तथा मल में कमी हुई किन्तु मूत्र-त्याग में कोई खास परिवर्तन नहीं हुवा। बिटामिथेसोन की तुलना में रास्ना से आमाशयिक व्रण या रक्तश्राव जो कि संधिशोथहर द्रव्यों से सम्भावित है, कम हुआ। रसोन या वातचिन्तामणि से यह दुष्परिणाम नहीं हुआ। सन्धि शोथहर गुण बिटामिथेसोन में अधिक था किन्तु विषाक्तता भी अधिक थी।

डी. एन. प्रसाद, एस. के. भट्टाचार्य, पी. के. दास, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५४, ६, १९६६, ५८२-५८९।

५३३. वला की तुलना में इसमें कम सन्धिशोथहर गुण पाया गया।

देखें–६१०।

५३४. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक नया Quaternary Base–

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Pluchine पृथक् किया गया है। इसके गुणकर्मीय अध्ययनों का भी विवेचन है।

बी. दास गुप्त, एक्सपेरिएन्शिया, २३, १२, १९६७, ९८९-९९१।

५३५. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

सी. पी. बहल, ए. बनर्जी एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३७, १, १९६८, २।

५३६. इस द्वितीय लेख में इसके सम्पूर्ण पौधे से पृथक् किये गये Pluchine नामक द्रव्य की पहचान Betaine hydrochloride के रूप में की गई है।

बी. दासगुप्ता, के. बसु एवं एस. दासगुप्ता, एक्सपेरिएन्शिया, २४, ९, १९६८, ८८२।

343. Plumbago zeylanica Linn. सं०-चित्रक

५३७. चित्रकमूल स्वरस का गर्भाशय पेशी पर प्रत्यक्ष उत्तेजक प्रभाव है। तुलनात्मक दृष्टि से कार्पासमूलत्वक् स्वरस एवं वंशपत्र स्वरस क्रमशः कम प्रभावशाली हैं।

पी. वी. तिवारी, डी. एन. प्रसाद, पी. के. दास, जर. रिसर्च. इण्डि. मेडि., १, १, १९६६, ६८-७७।

५३८. इसके मूल के विभिन्न सत्वों में चूहों की प्रारम्भिक गर्भावस्था पर कोई विशेष प्रभाव नहीं देखा गया।

देखें–४७८।

344. Polygonatum verticillatum Allioni.

345. Polygonatum cirricifolium Royle सं०-मेदा, महामेदा

५३९. इनके कंद सम्भवतः शास्त्रीय अष्टवर्गोक्त मेदा तथा महामेदा हो सकते हैं। इनका सालममिश्री के नाम से भी संग्रह किया जाता है।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ९, १९६६, ७; २०, १०-११, १९६८, ७९९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

346. Polygonum hydropiper Linn. बं०-पाचकुरमूल

५४०. चूहों पर प्रयोग में इसके मूल के सुरासारीय सत्व में गर्भरोपण विरोधी क्रिया पाई गई ।

देखें–४७८ ।

347. Portulaca oleracea Linn. हि०-कुल्फा

५४१. चूहों के आहार में इसकी पत्ती का चूर्ण मिलाने पर कोई लाभ नहीं होता बल्कि हानि होती है ।

पी० पी० सिंग एवं डी. सी० शर्मा, इण्डि. मेडि. गजे., ७, १२, १९६८, २८-३३ ।

348. Prunus triflora Roxb.

५४२. इस पौधे के रासायनिक विश्लेषण से अनेक रवेदार द्रव्य प्राप्त किये गये हैं जिनमें से β–sitosterol तथा myricyl alcohol पहचाने जा सके हैं ।

डी. चक्रवर्ती एवं ए. चक्रवर्ती, जर० इण्डि. केमि. सोसा०, ४३, १, १९६६, ६५ ।

349. Psidium guajava Linn. हि०-अमरूद

५४३. इसके तने की छाल का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन तथा इसके चूर्ण का भी सूक्ष्म अध्ययन किया गया है ।

राय एच० एन. चौधरी, बुले० बोटॅनि. सर्वे० इंडि., १०, १, १९६८, १७-१९ ।

350. Psoralea corylifolia Linn. सं०-बाकुची

५४४. इसके बीजों में पाये जानेवाले श्वित्रनाशक प्रमुख तत्व सोरॅलेन एवं आइसोसोरॅलेन को बड़े पैमाने पर अलग करने की विधि बतलाई गई है ।

एस. जे. दासगुप्ता, १८ हवीं फार्मे. कांग्रे., इण्डि. जर. फार्मे., २८, १२, १९६६, ३४८ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५४५. वाकुची बीजों के जलीय, ईथरीय तथा सुरासारीय सत्व के कृमिघ्न गुण का अध्ययन किया गया। सेस्टोड, ट्रेमाटोड तथा नेमाटोड आदि स्फीत कृमियों पर सुरासारीय सत्व अधिक प्रभावशाली है।

एम. सी. श्रीवास्तव, एस. डब्लू. सिंग, जे. वी. तिवारी एवं वी. कान्त, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ११-१५।

५४६. वास्तविक वाकुची के स्थान पर Ocimum basilicum के वीज मध्य गुजरात में बिकते हैं।

देखें–४७६।

५४७. इसके फल तथा अपरिष्कृत सत्व आदि का श्वित्र एवं अन्य चर्म रोगों में उपयोग लाभप्रद सिद्ध हो चुका है। प्रस्तुत अध्ययन में इसके सत्व Psoralen को शुद्ध रूप (isopsoralen से विरहित) में प्राप्त किया गया है जो कि इसमें का मुख्य उपयोगी अंश माना जाता है। विभिन्न प्राणियों में इस द्रव्य की विषाक्तता के परीक्षण से ज्ञात हुवा कि इसमें विषाक्तता एवं अपरूपजनक (Teratogenic) कार्य अधिक मात्रा देने पर भी बहुत कम हैं।

एस. के. बोस, एस. एन. सान्याल, आर. के. बसु एवं डी. चक्रवर्ती, सार, २० वीं फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८८।

५४८. इसके बीजों से पृथक् किये गये Flavonoids में से ५-Bavachinin, Bavachin, Bavachalkone, Isobavachin एवं Isobavachalknone की संरचना का निर्धारण किया गया है।

वी. के. भल्ला, यू. आर. नायक एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., २०, १९६८, २४०१-२४०६।

351. Pterocarpus marsupium Roxb. सं०-बीजक

५४९. इसके काष्ठसार का सुरासारीय सत्व रक्तगत शर्करा को कम करता है। यह प्रभाव ३ रे तथा ५ वें घंटे पर स्पष्ट दिखलाई देता है। जलीय

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सत्व में ५ वें घंटे पर यह अधिक होता है। इससे कोई दुष्परिणाम नहीं देखा गया।

डी. एस. शाह, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५५, २, १९६७, १६६-१६८।

५५०. इसके काष्ठसार के सुरासारीय सत्व में जीवाणुनाशक गुण नहीं है। केवल शि० शिगाजन्य प्रवाहिका में इससे लाभ हो सकता है।

जे. जे. त्रिवेदी, नागा., ११, १०, १९६८, ५०३-५०६।

५५१. इसके काष्ठसार के सुरासारीय सत्व का भेड में अध्ययन किया गया। इसके सूचिकाभरण से १ से २ घंटे के बीच रक्तगत शर्करा कम होती है।

जे. जे. त्रिवेदी, नागा., ११, ५, १९६८, २२६-२२९।

५५२. इसमें इसके सुरासारीय सत्व एवं एथिलएसिटेट से निकाले सत्व का मेढक के पृथक् कृत हृदय पर अध्ययन प्रस्तुत है। इसका हृदय की गति तथा शक्ति पर निरोधक प्रभाव है। गति कम होने के साथ इससे गति में अनियमितता भी आती है जो सुरासारीय सत्व द्वारा अधिक अचानक होती है।

पी. वी. ठाकर, जे. जे. त्रिवेदी एवं एम. एल. भवसार, नागा., १२, ३, १९६८, ७-१०।

352. Putranjiva roxburghii Wall. सं०-जीवपुत्रक

५५३. इसके बीजावरण का रासायनिक संगठन प्रस्तुत किया गया है। इसमें एक रवेदार सॅपोनिन Putranjivoside एवं अन्य द्रव्य पाये गये।

एच. एस. गर्ग एवं सी. आर. मित्रा, प्लॅन्टामेडिका, १६, १, १९६८, १७-१९।

५५४. इसके पंचांग के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त एक नये Triterpene–Putranjivadione की संरचना का निर्धारण किया गया है।

पी. सेनगुप्ता एवं ए. के. चक्रवर्ती, टेट्रा., २४, १९६८, १२०५-१२१३।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५५५. इसकी छाल के रासायनिक विश्लेषण से दो मुख्य Triterpenoid Friedelin एवं Putranjivadione एवं दो गौण Triterpenoid - Roxburgholone (नया) एवं Friedelanol पृथक् किये गये।

पी. सेनगुप्त एवं जे. मुखर्जी, टेट्रा., २४, २०, १९६८, ६२५९-६२६४।

५५६. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसके बेंझीन सत्व से अनेक ट्राइटर्पिनाइड एवं स्टेरॉल अलग किये गये जिनमेंसे ४ नये हैं।

जी. आर. चोप्रा, ए. सी. जैन एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेण्ट साइन्स, ३७, ११, १९६८, ३०१-३०४।

353. Randia dumetorum Lam. **सं०-मदनफल**

५५७. पहले इसके फलों के सैपोनिन का अध्ययन हो चुका है। प्रस्तुत अध्ययन इसकी छाल के सैपोनिन के संबंध में है। इसमें Randialic acid A तथा Randialic acid B नामक दो Triterpene acid प्राप्त किये गये।

जे. एस. टण्डन, के. पी. अग्रवाल एवं एम. एम. धर, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ११, १९६६, ४८३-४८७।

354. Ranunculus sceleratus Linn. **हि०देवकांडर, जलधनियाँ**

५५८. इसके मिश्र में उत्पन्न पौधों के रासायनिक संगठन का अध्ययन किया गया है।

ए. एच. एस., जी. एच. एम. एवं टी. ई. ए., प्लॅन्टा मेडि., १६, २, १९६८, २३१-२३८।

355. Rauvolfia canescens Linn. **सं०-सर्पगन्धाभेद**

५५९. इसकी खेती करने के विषय में विस्तृत अध्ययन किया गया है।

एस. राजखोवा, इण्डि. फारेस्टर, ९३, ३, १९६७, १४९-१६१।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

356. Rauvolfia serpentina Benth. ex Kurz हिं०-सर्पगन्धा

५६०. इसकी खेती के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है।

डब्लू. एल. कोयरबर एवं जे. एच. रीनहार्ट, लायडिया, २९, ३, १९६६, २६०-२६९।

५६१. इसके सम्बन्ध में विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत है। इसमें आयुर्वेदीय ग्रंथों के उल्लेखों के साथ आधुनिक विषयों का भी संकलन है।

ध. पा. वर्मा, नागा., १०, ११, १९६७, ६०७-६२०।

५६२. आसाम तथा केरल से संग्रहीत इसकी विभिन्न आयु के मूलों में के सम्पूर्ण क्षाराभ तथा Reserpine की मात्रा का अध्ययन इसमें किया गया है। यह देखा गया कि इनमें पर्याप्त भिन्नता रहती है। हिमालय के निचले प्रदेशों से प्राप्त नमूनों में दक्षिण की अपेक्षा Reserpine अधिक रहता है किन्तु सम्पूर्ण क्षाराभ की मात्रा इसके विपरीत है। पौधा जैसे-जैसे पुराना होता जाता है इनकी मात्रा कम होती जाती है।

पी. डी. वरदराजन, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८३।

357. Ravenia spectabilis Engl.

५६३. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से पहले γ–fagarine एवं arborinine प्राप्त किये गये थे। इस लेख में दो नये quinolone क्षाराभों -ravenine एवं ravenoline तथा अन्य क्षाराभ atanine का अध्ययन है।

वी. डी. पाल एवं पी. के. बोस, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ६, १९६८, ५५२-५५३।

358. Rhamnus purshiana DC.

५६४. इसकी छाल में के ॲन्थ्रॅसीन द्रव्यों के मापन की विधियों पर अध्ययन है।

आर. किंगेट, लायडिया, ३१, १, १९६८, १७-२२।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

359. Rheum emodi Wall. हिं०-रेवन्दचीनी

५६५. इसका स्थूल तथा सूक्ष्म स्वरूप, चूर्ण का स्वरूप एवं कुछ अनुभूत प्रयोगों आदि का विवेचन है।

मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ४, १९६५, ३०६-३०९।

360. Rhododendron falconeri Hook. f. नेपा०-कुरलिगा

५६६. इस प्रजाति के पत्तों में प्राणियों तथा मछली के लिये विषैले पदार्थ होते हैं। इसकी अनेक जातियों का विवेचन पूर्व किया जा चुका है। प्रस्तुत शोधपत्र में उपर्युक्त जाति के पत्तों का रासायनिक विश्लेषण है।

के. साम्बमूर्ति, एल. नागेश्वर राव एवं एम. राजेन्द्रबाबू, सार, २० इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८२।

361. Rhus succedanea Linn. हिं०-काकरासिंगी भेद

५६७. यह देखा गया कि मानस पर कार्य करनेवाली औषधियों में हिस्टामीनरोधी गुण भी रहता है। इसके श्वास आदि में लाभदायक गुण देखते हुवे इसके सुरासारीय सत्व का मानस गुणकर्मीय अध्ययन किया गया। यद्यपि यह भी लाभदायक औषध है तथापि इसके देने से मस्तिष्क में पाये जाने वाले द्रव्य serotonin में कमी नहीं हुई जो कि जटामांसी में हुई।

एस. एस. गुप्त, सी. वी. सेठ, ह्वी. एस. माथुर, श्रीमती सी. घूई एवं आर. के. वर्मा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, १, १९६६, ५-१४।

362. Ricinus communis Linn. सं०-एरण्ड

५६८. इसके बीज मज्जा कल्प का प्रयोग ५० गृध्रसी के रोगियों में किया गया जिनमें परिणाम उत्साह वर्धक रहे।

अ. वि. ला. अग्निहोत्री, जी. एल. शर्मा एवं वी. ए. शास्त्री, ह्यू मेटिस्म, २, १, १९६६, २८-३३।

५६९. इसके बीजों के Phospholipids के रासायनिक स्वरूप के सम्बन्ध

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

में अध्ययन किया गया है।

एम. एम. पालोस, एस. वी. राव एवं के. टी. अच्छया, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, १२, १९६६, ५२६-५३२।

५७०. इसके मूलत्वक् का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

सी. पी. बहल, ए. बनर्जी एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३७, १, १९६८, १-२।

५७१. इसके मूलत्वक् के विभिन्न सत्वों का प्राणियों में गुणकर्मीय अध्ययन प्रस्तुत है। अन्य सत्वों की अपेक्षा इसके जलीय सत्व में रक्तदबाव अधिक काल तक कम करने का गुण है। खरगोश के आंत्र तथा रक्तदबाव पर इसकी क्रिया एसिटिलकोलीन सदृश है। पेट्रोलियमईथर एवं एसिटोन से निकाले सत्व में निद्रावर्धक गुण है किन्तु और मानसिक क्रियाओं पर इनका कोई प्रभाव नहीं है। सम्भव है इसमें एसिटिलकोलीन तथा उसके विरोधी, दोनों प्रकार के द्रव्य हों।

वि. सिंग, एस. प्रभू एवं वी. एन. शर्मा, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ६२-६९।

363. Roscoea alpina Royle

364. R. procera Wall. **सं०-काकोली, क्षीरकाकोली**

५७२. इनके कंदों का भी संग्रह Lilium polyphyllum D. Don. के स्थान पर काकोली एवं क्षीरकाकोली नामों से किया जाता देखा गया है।

मा. उनियाल एवं आर. के. इस्सर, नागा., ९, ८, १९६६, २७६-२८४; मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, ९, १९६६, ६।

365. Rotula aquatica Lour. **सं०-पाषाण भेद**

५७३. मंगलोर (मैसूर प्रांत) के आस-पास के वैद्य इसका उपयोग पाषाण-भेद नाम से करते हैं। यद्यपि इसका मूल अधिक उपयोगी समझा जाता है

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तथापि प्रायः पंचांग का व्यवहार करते हैं। इसका स्थूल परिचय भी दिया गया है।

देखें–३१।

366. Ruta graveolens Linn. हि०-सुदाब

५७४. इसकी जड़ के रासायनिक विश्लेषण से एक नया Coumarine derivative–Gravelliferon प्राप्त किया गया है जिसके स्वरूप का निर्धारण किया गया है।

जे. आर०, के. एस., ई. एम. एवं आई. एन., एक्सपेरिएन्शिया, २४, १०, १९६८, ९९२।

५७५. इसके पंचांग के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन-रोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–५९।

367. Saccopetalum tomentosum Hook. f. & Th.

५७६. इसके पत्तों के सुगन्धि तैल की जीवाणुनाशक क्रिया के अध्ययन से देखा गया कि अन्य द्रव्य पिप्पली आदि की तुलना में इसमें सबसे कम गुण है जब कि पिप्पली में सबसे अधिक।

ए. के. भार्गव एवं सी. एस. चौहान, इंडि० जर० फार्मे., ३०, ६, १९६८, १५०-१५१।

368. Salacia chinensis Linn. हि०-सप्तरंगी

५७७. इसके मूल जो कि वास्तविक सप्तरंगी हैं, में होनेवाले proanthocyanidin के सम्बन्ध में रासायनिक अध्ययन किया गया है।

वी. कृष्णन एवं एस. रंगस्वामी, टेट्रा. लेट०, २६, १९६७, २४४१-२४४६।

वक्तव्य—चूँकि गलती से सप्तरंगी का लेटिन नाम Casearia esculenta Roxb. माना जाता था इसलिये सप्तरंगी के सम्बन्ध में अन्य लेख C.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

esculenta के अन्तर्गत भी देखें।

देखें–१५९-१६३।

५७८. इसके काण्ड एवं पत्र का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इनमें gutta तथा proanthocyanidins वर्ग के द्रव्य पाये गये।

वी० कृष्णन् एवं एस. रंगस्वामी, करेंट साइन्स, ३६, २२, १९६७, ५९६-५९७।

369. Salvadora oleoides Linn. सं०-वृहत्पीलु

५७९. इसके बीज तैल के स्नेह विरहित अंश का अध्ययन इसलिये किया गया कि घानी से निकाले तेल में जो दुर्गन्ध एवं रंग रहता है वह ईथर द्वारा निकाले तेल में नहीं रहता। इन्हीं अंशों का अध्ययन प्रस्तुत है और सम्भवतः इन्हीं के कारण यह खाने के अयोग्य है।

जी. आर० चोप्रा, ए. सी. जैन एवं टी० आर. शेषाद्रि, करेंट साइन्स, ३७, ५, १९६८, १२१-१२३।

370. Salvadora persica सं०-पीलु

५८०. इस वृक्ष में एक कीटगृह बनते हैं जो वृक्ष को नुकसान पहुँचाते हैं। इन कीटगृहों की उत्पत्ति, विकास तथा वृद्धि के निरोध की दृष्टि से अध्ययन किया गया है।

यू. कान्त एवं एच. सी. आर्य, इंडि. जर. एक्सपेरि. बायो., ५, ३, १९६७, १३१-१३४।

371. Salvia glutinosa Linn.

५८१. इसके गोंद जैसे स्राव के रासायनिक विश्लेषण से Friedelin, β–amyrin एवं α–hydroxy β–amyrin एवं epialnusenol पृथक् किये गये।

डी. ए. एच. टेलर, जर. केमि. सोसा. इङ्गलै., सी, ६, १९६७, ४९०।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

372. Sapindus emarginatus Vahl. सं०-अरिष्टक

५८२. इसके फलों के जलीय सत्व से एक नया Saponin–Emarginatoside पृथक् किया गया है।

एल. आर. राव एवं कु. सी. रुक्मिणी, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, ३, १९६६, १४९-१५०।

373. Sapindus laurifolius Vahl.

५८३. इसके फल भित्ती का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें Saponin पाये जाते हैं। इससे तीन वर्णहीन यौगिक A, B, C पृथक् किये गये जिनका विवेचन है। इनमें से दो Triterpene हैं।

पी. सी. मैती, एस. राय एवं ए. राय, एक्सपेरिए., २४, ११, १९६८, १०९१।

374. Sapindus mukorossi Gaertn. स०-अरिष्टक

५८४. इसकी फलभित्ति से एक सॅपोनिन Mukorosside प्राप्त किया गया है।

एल. रामचन्द्र राव एवं कु. सी. रुक्मिणी, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ४, १, १९६६, ३६-३८।

375. Sarcococca pruniformis Lindl.

५८५. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त द्रव्यों का और आगे अध्ययन किया गया है जिसमें इनके स्वरूप को बतलाया गया है।

श्रीमती ए. चटर्जी, के. एस. मुखर्जी एवं सी. पी. दत्ता, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४३, ४, १९६६, २८३-२८६।

५८६. इसमें के क्षाराभों का पृथक्करण करके दो नये steroidal alkaloid (A&B) पाये गये जिनकी संरचना का विवेचन है।

जे. एम. कोहली, ए. झमन एवं ए. आर. किदवई, टेट्रा., २३, १९६७, ३८२९-३८३५।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

376. Saussurea lappa C. B. Clarke **सं०-कुष्ठ**

५८७. इसके मूल के तेल में रहनेवाले lactone तथा उससे विरहित तेल का गुणकर्मीय अध्ययन किया गया है। इसके lactone के कुछ अंश एवं उससे विरहित तैल में रक्त दबाव ह्रासक, संकोच निवारक एवं श्वसनिका विस्फारक गुण पाये गये। रक्त दबाव ह्रासक कार्य प्रत्यक्ष वाहिनी विस्फार एवं हृदया-वसाद से होता होगा एवं उद्वेष्ठन निरोधी कार्य पेपेव्हेरीन जैसा होता है। इसमें कोई कफनि.सारक गुण नहीं देखा गया किन्तु कुछ मूत्रल गुण पाया गया।

ओ. पी. गुप्ता एवं बी. जे. राय घटक, इंडि. जर. मेडि. रिस. ५५, १०, १९६७, १०७८-१०८३।

५८८. इसके मूल के सुगन्धि तैल में पाये गये Costol का पुनः परीक्षण किया गया है।

ए. एस. बावडेकर, जी. आर. केलकर एवं एस. सी. भट्टाचार्या, टेट्रा., २३, १९६७, १९९३-१९९६।

377. Scilla indica Baker **सं०-वनपलाण्डु**

५८९. आयुर्वेद में वर्णित गृंजनक यह वनपलाण्डु या पलाण्डु का एक भेद हो सकता है। इस दृष्टि से उपर्युक्त वनस्पति को गृंजनक माना है।

रा. आ. भटनागर, आयु. विकास, ५, ९, १९६६, २६-३१।

५९०. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक नया हृद् ग्लाइकोसाइड—Scillarenin bis-L- hamnoside पाया गया।

आर. वी. कृष्णराव एवं एस. रंगस्वामी, टेट्रा. लेट., ४६, १९६७, ४५६३-४५६५।

378. Selaginella rupestris Spring. **सं०-संजीवनी**

५९१. इस प्रारम्भिक अध्ययन में इसके सम्पूर्ण शुष्क पौधे में स्टेरॉल, ग्लाइकोसाइड तथा मन्द समाक्षार (Weak base) पाये गये। प्राणियों में इसके

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुरासारीय निःस्सार के जलविलेय अंश का आंत्र पर शिथिलकर एवं अल्प उद्वेष्ठन रोधी तथा गर्भाशय पर संकोचक प्रभाव होता है। इसमें शामक, वेदनाहर, आक्षेप रोधी (अपस्मारहर) तथा मूत्रल प्रभाव नहीं है न इसमें विषैला प्रभाव ही मालूम हुआ। प्रसूतिज्वर में जो इसका प्रचलन है वह सम्भवतः इसके गर्भाशय संकोचक प्रभाव के कारण होगा।

वी. नाथ, क. द. गोडे, प्र. कु. दास, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, १, १९६६, ११३-११६।

379. Selinum vaginatum Clarke

५९२. इसके मूल के रासायनिक विश्लेषण से एक नया Flavanone–Selinone पृथक् किया गया जिसके संगठन का अध्ययन प्रस्तुत है।

टी. आर. शेषाद्रि एवं एम. एस. सूद, टेट्रा. लेट., ९, १९६७, ८५३-८५५।

५९३. इसके मूल धूपन के लिये व्यवहार में आते हैं तथा इसका व्यामिश्रण जटामांसी में रहता है। इससे पांच Coumarin–Angelicin, Oroselol, Lomatin, Selinidin एवं Vaginidin पृथक् किये गये जिनमें से अन्तिम दो की संरचना का निर्धारण किया गया है।

टी. आर. शेषाद्रि, एम. एस. सूद, के. एल. हण्डा एवं विश्वपाल, टेट्रा., २३, १९६७, १८८३-१८९१।

380. Semecarpus anacardium Linn. f. सं०-भल्लातक

५९४. भल्लातक के कृमिघ्न प्रभाव के अध्ययन के लिये प्रयोगशाला में केंचुओं पर प्रयोग किये गये। इसमें देखा गया कि इसका तैल कार्बन टेट्राक्लोराइड की तुलना में अधिक अच्छा किन्तु हेक्सिल रिसोर्सिनॉल तथा चिनोपोडियम तैल की तुलना में कम कृमिघ्न है।

प्रि. व्र. शर्मा, क. चतुर्वेदी, जर. मेडि. साइ., १, १९६४, ५८।

५९५. प्राणियों के ऊपर प्रयोग करने के आधार पर यह कहा जा सकता है

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कि इससे पूर्ण लाभ के लिये इसके तैल की मात्रा ३०० मि. ग्रा. से लेकर ९ ग्राम तक दी जा सकती है जिसमें कोई विषाक्त प्रभाव नहीं होता है। इससे अधिक मात्रा से अतिसार, छर्दि, सार्वदैहिक शोथ तथा त्वचा पर व्रण एवं विस्फोट होने की सम्भावना रहती है। इसका गर्मी में कम मात्रा में एवं सावधानी से प्रयोग करना चाहिये।

प्रि. व्र. शर्मा, च. चतुर्वेदी, नि. गो. वंद्योपाध्याय; जर. रिस. इंडि. मेडि., १, १, ६६, १३०-१४३।

५९६. चूहों में कृत्रिम संधिशोथ उत्पन्न करके तथा आमवाताभ सन्धि-शोथ (Rheumatoid arthritis) के रोगियों में अमृत-भल्लातक का प्रयोग किया गया जिसमें उत्साहवर्धक परिणाम पाये गये। नवीन रोगियों में अधिक लाभ हुआ।

पी. किशोर एवं एस. एन. त्रिपाठी, ह्यूमेटिस्म, १, ४, १९६६, १८८-१९६।

५९७. रासायनिक परीक्षण में इसमें फेनॉलीय द्रव्य तथा अत्यल्प रेजिन पाये गये। प्राणियों में परीक्षण करने पर यह देखा गया कि पृथक्कृत हृदय तथा खरगोश के आंत्र पर इसका अवसादक प्रभाव पड़ता है एवं यह कार्बेकोल, हिस्टामीन, बेरियम क्लोराइड एवं पिटोसिन के संकोचक प्रभाव का विरोधी है। 'ट्रिपटानब्लू परीक्षा' से इसका हिस्टॅमीन उन्मुक्त करने का प्रभाव देखा गया। अन्य परीक्षणों से यही अनुमान होता है कि इसका यह प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से होता है।

बी. सी. बोस, वी. एस. माथुर एवं आर. विजय वर्गीय, इंडि. जर. मेडि. रिस., ५५, २, १९६७, १५५-१६०।

५९८. गलित् कुष्ठ में भल्लातक तैल के स्वतन्त्र प्रयोग से कोई लाभ नहीं देखा गया किन्तु रोगी की साधारण दशा में अवश्य सुधार हुआ। आधुनिक औषध डीडीएस के साथ जब इसका प्रयोग किया गया तो केवल डीडीएस की अपेक्षा अधिक लाभ देखा गया। यह लाभ सम्भवतः इसके रसायन तथा कृमिघ्न गुण के आधार पर होगा ऐसा निष्कर्ष निकाला गया।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दि. ओझा एवं गु. मो. सिंग, लेप्रसी इन इंडिया, ४, अक्तू., १९६७, १-९ ।

५९९. भल्लातकके प्रमेहघ्न गुण की दृष्टि से उसके तैल का प्राणियों में एवं रोगियों पर परीक्षण किया गया तथा मूत्र की मात्रा पर उसका प्रभाव देखा गया। यद्यपि सांख्यिक दृष्टि से कोई विशेष अन्तर नहीं मिला तथापि यह पाया गया कि इसकी प्रवृत्ति मूत्र-संग्रहण की ओर है। साथ में आयुर्वेदीय विभिन्न ग्रन्थों में निर्दिष्ट इसके गुण, कर्म तथा प्रयोग की तालिका तथा प्रमेहघ्न योगों की तालिका भी है।

प्रि. व्र. शर्मा, च. चतुर्वेदी एवं नि. गो. वंद्योपाध्याय, सचि. आयु. १९, ७, १९६७, १२८-१२९ ।

६००. इसके फलों का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं भौतिक स्थिरांकों का निर्धारण प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है। फलों की मध्य भित्ति की कोशाओं के विघटन से बने विवरों में दाहक तैल रहता है। शुष्क फलों से पेट्रोलियम ईथर द्वारा तेल की मात्रा ३१% प्राप्त होती है जिसमें साबुनीभवन के अयोग्य भाग ५.१४%, स्नेहीय अम्ल ३६.६५% तथा फेनॉल सदृश अंश ४२.६९% रहता है। इनका उपयोग इसके मानकीकरण की दृष्टि से किया जा सकता है। चूँकि कुछ काल रखने से इस तेल में विकृति होती है इसलिये आगे इस दृष्टि से भी अध्ययन किया जा रहा है कि फलों को रखने से इसके तेल तथा उसके घटकों में काल के अनुसार क्या-क्या परिवर्तन होता है।

सं. प्रमाद, रो. मित्रा, मो. सा. अन्सारी, जर. रिस. इंडि. मेडि. २, २, १९६८, २२२-२२९ ।

६०१. इसमें आयुर्वेदीय पाताल-यंत्र पद्धति से फलों के तैल को निकालकर उसके औसत मानो को निर्धारित किया गया है। अच्छे पके एवं जल से भारी फलों का ही उपयोग किया गया। इसमें तैल की मात्रा १६-२२%, जल की मात्रा ०.८-५% एवं अवशिष्ट भाग २५-३०% रहता है। तैल निकालने के लिये प्रति किलो फलों के लिये १८-२२ किलो गोहठे (उपलें) की उष्णता अनुकूलतम होती है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

र्यं. ना. शर्मा एवं दा. जोशी, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, २३९-२४३।

६०२. प्राणियों पर प्रयोग से यह देखा गया कि इसके फलों को दुग्धपाक करके मुख द्वारा देने से यह नूतन (acute) शोथ को रोकता हैं किन्तु अनुतीव्र एवं चिरकारी शोथ पर इसका कोई प्रभाव नहीं है।

जी. वी. सत्यवती, डी. एन. प्रसाद, पी. के. दास एवं एच. डी. सिंग, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, २, १९६८, सार, ३४।

381. Sesamum indicum Linn. सं०-तिल

६०३. इसके दो भेद, श्वेत तथा भूरे के तैल का रासायनिक अध्ययन प्रस्तुत है।

ए. आर. एस. कर्था, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ११, १९६७, ५८९-५९०।

382. Sesbania grandiflora (L.) Poir. सं०-अगस्त्य

६०४. इसकी छाल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके चूर्ण के स्वरूप का भी वर्णन है। इसके साथ ही जयन्ती की छाल का भी अध्ययन किया गया है जिससे दोंनों की पहचान हो सके।

राय एच. एन. चौधरी, बुले. बोटेनि. सर्वे. इंडि., ८, ३-४, २१६-२२०, ११६६।

383. Sesbania sesban (L.) Merr. सं०-जयन्ती

६०५. इसकी छाल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं चूर्ण का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अगस्त्य की छाल का भी साथ में अध्ययन होने से दोनों के पृथक्करण में इस अध्ययन का उपयोग होगा।

राय एच. एन. चौधरी, बुले. बोटेनि. सर्वे. इंडि., ८, ३-४, २१६-२२०, १९६६।

६०६. चूहों में कृत्रिम सन्धि शोथ उत्पन्न करके इसके पत्तों के उष्ण कल्क का वाह्य प्रयोग किया गया जिसमें कुछ लाभ देखा गया।

आर. सी. चौधरी एवं एवं एस. डी. राय, ह्यूमेटिस्म, ३, ३, १९६८, ११२-११६।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

384. Seseli indicum Wight & Arnold हि०-वनग्रजवाईन

६०७. इसके बीजों के सुगन्धि तैल के रासायनिक विश्लेषरण से एक monoterpene aldehyde–β–cyclolavandulal पृथक् किया गया है जिसकी संरचना का विवेचन है।

राम. के लोगानी, आई. पी. वार्ष्णेय, आर. सी. पाण्डे एवं सुखदेव, टेट्रा. लेट., २८, १९६७, २६४५-२६४८।

385. Seseli sibiricum Benth

६०८. इसके रासायनिक विश्लेषरण से Osthol, imperatoin, bergapten एवं एक नया Coumarin–Sibiricin पृथक् किये गये। इस काउमेरिन की संरचना तथा संश्लेषरण का अध्ययन किया गया है।

पी. डब्लू. ऑस्टिन, टी. आर. शेषाद्रि, एम. एस. सूद एवं विश्वपाल, टेट्रा., २४, १९६८, ३२४७-३२५३।

386. Sida caprinifolia Linn. सं०-बलाभेद

६०९. इसके पंचांग का प्रारम्भिक रासायनिक तथा गुणकर्मात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें ग्लाइकोसाइड तथा क्षाराभ (अल्केलायड) नहीं पाया गया। पेट्रीलियम ईथर तथा ईथर द्वारा निकाले सत्व में स्टेरोल पाये गये। सुरासारीय सत्व के जलविलेय अंश में एसिटिल कोलीन सदृश (अनैच्छिक मांस-पेशी संकोचक आदि) क्रिया पाई गई।

डी. एन. प्रसाद एवं जी. अचरी, इंडि. जर. फार्मे. २८, ९, १९६६, २४१-२४४।

387. Sida humilis Cav. सं०-बलाभेद

६१०. प्राणियों में फारमेल्डिहाइड द्वारा उत्पन्न किये गये सन्धिशोथ में इसके जलीय निःस्सार से पर्याप्त लाभ देखा गया।

रा. ह. सिंह, गो. ना. चतुर्वेदी, इंडि. जर. मेडि. रिसर्च, ५४, २ फरवरी १९६६, १८८-१९५।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

388. Sisymbrium irio Linn. **हिं०-खूबकलां, खाकसी**

६११. इसके बीजों में के फ्लेवोनायड के सम्बन्ध में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. वाइ. खान, करेंट साइन्स, ३६, ८, १९६७, २०६।

389. Smilax aspera Linn. **हिं०-देशी सार्सापरिलाभेद**

६१२. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक विशेष प्रकार का द्रव्य Aspe agein प्राप्त किया गया।

के. एन. एन. अयगार एवं एस. रंगस्वामी, करेंट साइन्स, ३६, २४, १९६७, ६५३-६५५।

६१३ इसके मूल के विश्लेषण से प्राप्त 31–norcycloartanol की संरचना का विवेचन है।

के. एन. एन. अयंगार एवं एस. रंगस्वामी, टेट्रा. लेट., ३७, १९६७, ३५६७-३५७०।

६१४. इसके मूल के रासायनिक संगठन का अध्ययन किया गया है। इसके सैपोनिन अंश तथा सैपोनिन विरहित अंशों का विश्लेषण है। इसके सैपोनिन अंश में प्रधान रूप से Sarsasapogenin रहता है।

एस. रंगस्वामी एवं के. एन एन. अयंगार, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, १-८।

390. Solanum aviculare Forst.

६१५. Solanum प्रजाति से प्राप्त होनेवाले द्रव्य Solasidine का उपयोग steroid hormone बनाने के लिये किया जाता हैं। इस दृष्टि से उपर्युक्त भेद के उपज के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया हैं। साथ में S. khasianum का भी अध्ययन हैं।

वी. चन्द्रा, इंडि. ड्रग्स, ५, १२, १९६८, ५७-६७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

391. Solanum indicum Linn. सं०-बृहती

६१६. प्राणियों में इसके पेट्रोल-ईथरीय सत्व का मानसिक प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन किया गया है। यह शामक, निद्रावर्धक एवं मेट्राभोल के मारक प्रभाव के काल को बढ़ाता है किन्तु स्ट्रीकनीन के कार्य पर इसका कोई प्रभाव नहीं है। सेमीकार्बाभाइड के आक्षेपजनन कार्य को यह यद्यपि शीघ्र प्रारम्भ करता है तथापि मारक प्रभाव विलम्ब से होता है। इसका स्वाभाविक कण्डू प्रत्यावर्त पर कोई प्रभाव नहीं है।

पी. के. दे. एवं वी के. चटर्जी, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, ९-१८।

392. Solanum khasianum Clarke

६१७. इसके फलों के रासायनिक विश्लेषण से एक क्षाराभीय सॅपोनिन Solakhasianin एवं एक क्षाराभ Solasodine पृथक् किये गये।

पी. सी. मैती एवं कु. एस. मुखर्जी; इंडि. जर. केमिस्ट्री, ६, ९, १९६८, ५४७।

६१८. Steroid hormone के पुरोवर्ती Solasidine की प्राप्ति के लिये इस जाति के सम्वर्ध का अध्ययन किया गया है।

वी. चन्द्रा, इंडि. ड्रग., ५, १२, ६८, ५७-६७।

393. Solanum melongena Linn. हिं० बैंगन

६१९. बिहार में होनेवाले बैंगन के चार प्रमुख भेदों तथा उसके संकर (F-hybrids) का प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण उसमें के ठोस अंश, शर्करा तथा विटामिन सी की मात्रा की दृष्टि से किया गया है।

जी. एम. मिश्र, साइन्स, ३२, ११, १९६६, ५४५-५४६।

394. Solanum nigrum Linn. सं०-काकमाची

६२०. इसके विभिन्न भेदों, प्रभेदों (टेट्राप्लायड रूप) का विवेचन किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. एल. टण्डन एवं जी. आर. राव, करेंट साइन्स, ३५, २०, १९६६, ५२४-५२५।

395. Solanum torvum Sw. सं०-बृहती भेद

६२१. इसके फलों के रासायनिक संगठन का अध्ययन किया गया है।

एम. बी. ई. फयेज एवं ए. ए. सालेह, प्लॅन्टामेडिका, १५, ४, १९६७, ४३०-४३३।

396. Solanum xanthocarpum Schrad & Wendl. सं०-कंटकारी

६२२. प्राणियों के हृदय पर इसके सुरासारीय सत्व एवं ग्लूको-एल्कालॉयड सॅपोनिन अंश का अध्ययन किया गया है। सुरासारीय सत्व से हृदय संकोच में लाभ होता है तथा रक्तदबाव में भी सुधार होता है। सॅपोनिन अंश बहुत कम मात्रा में संकोच बढ़ाता है। इस अंश में हृद्वल्य गुण हैं जिसका परीक्षण रोगियों में करना आवश्यक है।

एस. एस. गुप्त, एस. एल. सी. वर्मा, सी. सिंग एवं श्रीमती पी. खण्डेलवाल, इंडि. जर. मेडि. साइ., २०, ८, १९६६, ५५४-५५९।

६२३. कंटकारी अवलेह जिसमें प्रमुख द्रव्य कंटकारी है, उसका परीक्षण वातिक कास नाशक गुण की दृष्टि से किया गया। इस परीक्षण में पॅराल्डिहाइड द्वारा कृत्रिम कास उत्पन्न कर इस औषध का तथा आधुनिक औषध कोडीनफास सिरप का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि कंटकारी अवलेह भी कोडीन फास की भांति प्रभावशाली तथा विश्वसनीय औषधि है और साथ ही यह मार्फीन ग्रुप (अहिफेनसम) के दोषों से मुक्त होने के कारण निरापद औषधि है।

रा. सु. सिंह, रा. कृ. गुप्ता., भा. ओझा, एच. एस. वाजपेयी एवं जे. पी. गुप्त, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६७, १६७-१७८।

६२४. पिलानी के पास सिंधाना (जि. झुंझुनू) से संग्रहीत इसके फलों से सोलेसोडीन (Solasodine 1·16%) नामक तत्व प्राप्त किया गया जिससे अनेक स्टेरायड (Steroids) औषधियाँ बनाई जा सकती हैं।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एम. पी. गुप्ता एवं डी. के. सान्तरा, जर. रिस. इंडि. मेडि., १, २, १९६७, २३९-२४१।

६२५. इसके पंचांग के रासायनिक संगठन एवं गुणकर्मों का अध्ययन किया गया है। इसमें ग्लूको अल्कालायड, स्टेरॉल तथा पोटॅशियम नाइट्रेट के प्राप्ति की पुष्टि की गई तथा एक स्नेहाम्ल, राल तथा फेनॉलीय नये द्रव्यों की प्राप्ति हुई। गुणकर्मीय अध्ययन में देखा गया कि अपरिष्कृत सत्व में कोई ऐसा द्रव्य है जो हिस्टॅमीन को मुक्त करके रक्तदबाव को कम करता है तथा श्वसनिका संकोच करता है। इसमें का कोई भी अंश हिस्टॅमीन या एसिटिल कोलीन के प्रभाव को नहीं रोकता किन्तु ग्लूको अल्कालायड का सॅपोनिन अंश हिस्टॅमीन (४८।८०) के रक्तदबाव ह्रासक गुण को रोकने में समर्थ है। इसके अन्य अंशों का भी अध्ययन किया गया है। इसके विभिन्न अंशों के प्रभाव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तमक श्वास में इससे जो लाभ होता है वह फुफ्फुस तथा श्वसनिकाओं में हिस्टॅमीन की कमी हो जाने के कारण एवं अंशतः उसमें के अकार्बनिक नाइट्रेट के कफनिःसारक गुण के कारण है।

एस. एस. गुप्ता, एस. एल. सी. वर्मा, सी. सिंग, श्रीमती पी. खण्डेलवाल एवं एन. के. गुप्त, इंडि. जर. मेडि. रिसर्च, ५५, ७, १९६७, ७२३-७३२।

६२६. इसका सुरासारीय सत्व हिस्टॅमीन की कमी करके उससे होनेवाले दुष्परिणाम जैसे रक्तदबाव का कम होना, श्वसनिकाओं का संकोच होना आदि को कम करता है।

एन. के. गुप्त, एस. एस. गुप्त एवं महेश राय, इण्डि. जर. फीजियोला., सार, ११, २, १९६७, ५५; गुप्त एवं अन्य, इण्डि. जर. मेडि. साइ., २१, १२, १९६७, ७९५-७९९।

397. Soymida febrifuga A. Juss. **सं०-मांसरोहिणी**

६२७. इसके तने का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं प्रारम्भिक रासायनिक विश्लेषण किया गया है।

एस. एस. जॉली, इण्डि. फारे., ९२, ७, १९६६, ४६९-४७१।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

६२८. इसमें जीवाणुरोधी कोई क्रिया नहीं पाई गई।

श्रीनिवास, आइ. संजीवाराव, पी. जे. देशपाण्डे, दी मेडिसिन ऍन्ड सर्जरी, जुलाई ६६, १३-१७।

६२९. प्राणियों के चर्मगतक्षत पर इसकी छाल के क्वाथ के प्रारम्भिक अध्ययन में व्रणरोपण के प्रकार में परिवर्तन देखा गया। चर्मव्रण की संकोच की गति ३ से ६ दिन के बीच विलम्बित हुई जो व्रणरोपण-काल को विलम्बित करने की सूचक है। इसकी पुष्टि जीव-रासायनिक परीक्षण तथा सूक्ष्म रचना अध्ययन से भी हुई।

इन परिणामों के विपरीत, मांसगत क्षत के अध्ययन में इससे बने घृत के बाह्य प्रयोग से मांसव्रण रोपण क्रिया में लाभ देखा गया। इस प्रयोग में प्राणियों की ऐच्छिक मांसपेशी, अनैच्छिक मांसपेशी तथा हृदय की मांसपेशी पर अध्ययन किया गया। प्रथम दो प्रकार की पेशी में उत्साहवर्धक परिणाम पाये गये किन्तु तीसरी पेशी पर परिणामों के निष्कर्ष के लिये अधिक आगे प्रयोग करने की आवश्यकता बतलाई गई क्योंकि प्रारम्भिक अध्ययन में विशेष परिवर्तन नहीं देखे गये।

इ. संजीवाराव एवं प्र. ज. देशपाण्डे, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, २, १९६८, १६५-१८८।

398. Stephania glabra (Roxb.) Miers. सं०-पाठाभेद

६३०. इसके कंदों के क्वाटर्नरी अल्कालायड का अध्ययन प्रस्तुत है। इसमें ६ अल्कालयड पाये गये। इनमें चार की संरचना का निर्धारण किया गया। शेष दो का अध्ययन किया जा रहा है।

मॉग तिन वा, जैक एल. बील, रेमॉण्ड डब्लू. डोस्कोच, लायड्या, ३०, ३, १९६७, २४५-२४९।

६३१. इसके कंद से पृथक् किये गये तीन क्षाराभ Gindarine, Gindarinine एवं Gindaricine का गुणकर्मीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

है। ये तीनों परिसरीय रक्तवाहिनी विस्फार करके रक्तदवाव कम करते हैं। यह हृदयावसादक एवं उद्वेष्टन रोधी हैं। इनमें आक्षेपरोधी या निद्राजनन गुण नहीं पाया गया। चूहों पर प्रयोग में इसमें शोथहर या मूत्रल गुण नहीं देखा गया।

एच. आर. देस्सरी एवं वी. वी. मेहता, सार, २० वीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८७।

399. Stephania hernandifolia (Wild.) Walp. **सं०-पाठाभेद**

६३२. इसके रासायनिक विश्लेषण से देखा गया कि इसमें एल्कालायड तथा स्टेरायड हैं। इनमें के एल्कालायड का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बी. के. मोझा एवं दि. कु. वसु, १८ हवीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, १९६६, इण्डि. जर. फार्म. २८, १२, १९६६, ३३८।

६३३. इसके मूल से एक नया क्षाराभ Aknadine पृथक् किया गया है।

बी. के. मोझा, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ६, १९६७, २८१-२८२।

६३४. इसके जल विलेय क्षाराभ Stephonine एवं एक समाक्षार (base) में प्रजननरोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–५९।

६३५. इसके अन्वेषण के इस १० वें लेख में इसके मूल में पाये गये दो क्षाराभ Aknadinine एवं Aknadicine की संरचना का निर्धारण किया गया है।

बी. के. मोझा एवं बी. भादुरी, सार, २० वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८१।

६३६. इससे पृथक् किये गये जल विलेय क्षाराभ Steponine का प्रारम्भिक गुणकर्मीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। Reserpine की तुलना में इसकी रक्त दबाव ह्रासक क्रिया कुछ अंशों में अधिक अच्छी पाई गई किन्तु सौमनस्यकारक गुण कुछ अंश में कम पाया गया।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पी. के. चौधरी, वी. के. मोझा एवं ए. एन. बोस, सार, २०वी इण्डि. फार्मे. कांग्रेस, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १२, १९६८, २८७।

400. Stereospermum suaveolens DC. सं०पाटला

६३७. इसके तने तथा मूल की छाल का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. प्रसाद एवं अ. प्रकाश, जर. साइ. रिस., बी. एच. यू., १७ (१) १९६६-६७, १०१-१११।

401. Strebulus asper Lour. सं०-शाखोटक

६३८. इसकी छाल का क्वाथ गोमूत्र के साथ श्लीपद के रोगियों को पिलाया गया। ६० रोगियों के अनुभव से यह कहा जा सकता है कि इससे बहुत लाभ होता है। शोथ एवं लक्षण ठीक हुवे एवं पुनरावर्तन भी नहीं देखा गया।

कै. प. पाण्डे, नागा., ११, २, १९६७, ९१-९३।

६३९. इसके पूर्व अन्य विद्वानों ने इसके जड़ की छाल के विश्लेषण से हृदय पर कार्य करनेवाले ग्लाइकोसाइड प्राप्त किये हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसकी काण्ड त्वचा के रासायनिक विश्लेषण के सम्बन्ध में है।

ए. के. वरुआ, एस. के. पाल एवं के. के. वसु, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४५, १, १९६८, ८७।

402. Strychnos nux-vomica Linn. हिं०-कुचला

६४०. इसके पत्तों के प्रधान क्षाराभ Vomicine के सम्बन्ध में अध्ययन प्रस्तुत है।

श्रीमती ए. चटर्जी एवं एस. सी. वासा, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४४, ८, १९६७, ६६३-६६७।

६४१. गृध्रसी के रोगियों में शोधित कुपीलु चूर्ण दिया गया। यह देखा गया कि केवल फेनिल ब्यूटॅझोन की अपेक्षा उसके साथ कुपीलु के प्रयोग से अधिक लाभ होता है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आर. के. छप्परवाल, जी. एल. शर्मा एवं जी. पी. शर्मा, ह्यू मेटिस्म, ३, ४, १६६८, १६४-१६७।

403. Symplocos paniculata Wall. **सं०-लोध्रभेद**

६४२. प्राणियों में इसके विभिन्न सत्वों का अध्ययन गर्भपात-निरोधक गुण के अध्ययन के लिये किया गया। जलीय सत्व में यह प्रभाव देखा गया। इसके अन्य गुणधर्मों का अध्ययन भी किया गया है।

पी. सी. डण्डिया, वाई. एम. चोप्रा एवं एस. पी. बनर्जी, १८ हवीं इण्डि. फार्मा. कांग्रेस, इण्डि. जर. फार्मं, २८, १२, १६६६, ३४४।

६४३. प्रस्तुत लेख में आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से लोध्र के सम्बन्ध में चर्चा की गई है तथा शावरक (श्वेत) लोध्र का वानस्पतिक स्रोत S. paniculata Wall. एवं पट्टिका लोध्र का S. racemosa Roxb. बतलाया गया है। इनके स्थूल स्वरूप एवं गुण प्रयोग आदि का भी विवेचन किया गया है।

मा. उनियाल, सचि. आयु., १८, २, १६६५, १२७-१३२।

4 4. Symplocos racemosa Roxb. **सं०-पट्टिका लोध्र**

६४४. उपर्युक्त पेड़ को आयुर्वेदीय पट्टिका लोध्र का स्रोत बतलाया गया है।

देखें–६४३।

405. Tabernaemontana heyneana Wall. **म०-नागकुडा**

६४५. इसके बीजों से एक Coronaridine नामक क्षाराभ पृथक् किया गया है।

एन. रामैया एवं जे. मोहनदास, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, २, ११६६, ६६-१००।

६४६. इसमें के क्षाराभ Coronaridine का रासायनिक अध्ययन इसमें प्रस्तुत है।

इ. टी. वी., पी. पी. पिल्ले, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ७, १६६६, ३३२-३३४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

406. Tabernaemontana sphaerocarpa Bl.

६४७. चूँकि जावा में होनेवाला यह वृक्ष अपने यहाँ बगीचों में लगाया मिलता है इसलिये इसके काण्ड तथा पत्रों का रासायनिक विश्लेषण किया गया। इसमें दो क्षाराभ Tabernaemontanine एवं Dregamine पाये गये उनका विवेचन हैं।

श्रीमती ए. चटर्जी, ए. बनर्जी एवं पी. एल. मजूमदार, इंडि॰ जर. केमिस्ट्री, ६, ९, १९६८, ५४५-५४६।

407. Tamarindus indica Linn. सं०-अम्लिका

६४८. चूँकि इसके पत्तों का रस आँखों की बिमारियों में प० बंगाल में व्यवहार किया जाता है इसलिये इसके जीवाणुनाशक गुण का अध्ययन किया गया। प्रयोगों से देखा गया कि इसके स्वरस में अनेक प्रकार के जीवाणुओं के लिए विरोधी गुण हैं।

पी. चौधुरी एवं एम॰ सेनगुप्त, जर. इंडि. मेडि. असो., ४९, १०, १९६७, ४६५-४६६।

408. Tamarix dioica Roxb. सं०-झावुक

६४९. इसके पत्तों का रासायनिक विश्लेषण किया गया है। इसमें Kaempferide, Tamarixetin, Quercetin तथा D–mannitol पाये गये।

सी. पी. बहल, एम॰ आर. पार्थसारथी एवं टी. आर. शेषाद्रि; इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, ४, १९६७, १७१-१७२।

409. Taxus buccata Linn. सं०-तालीशपत्र

६५०. इसके पत्र चूर्ण एवं गैरिक (red ochre) चूर्ण का अध्ययन चूहों में गर्भनिरोधक गुण की दृष्टि से किया गया। प्रारम्भिक अध्ययन में आशादायक परिणाम देखे गये।

कु. प्रे. व. तिवारी एवं चं. चतुर्वेदी, जर. रिस. इंडि. मेडि., ३, १, १९६८, ४९-५४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

410. Tecomella undulata (G. Don) Seem. **सं०-रोहितक**

६५१. इसकी छाल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, भौतिक स्थिरांकों का निर्धारण, प्रतिदीप्ति विश्लेषण, विभिन्न रसायनों के साथ इसके चूर्ण की प्रतिक्रियायें तथा इसी नाम से लिये जानेवाले अन्य वृक्ष Amoora rohituka W. & A. की छाल एवं उत्तर प्रदेश के बाजार में इसके स्थान पर बिकने वाली पारिभद्र (Erythrina indica) की छाल के विभेदक लक्षणों को प्रस्तुत किया गया है। इससे तीनों द्रव्यों की पहचान स्थूल रूप में तथा चूर्ण रूप में भी आसानी से की जा सकती है।

सं॰ प्रसाद, वि. कु. जैन, कु. रो. मित्रा, जर. रिस. इंडि॰ मेडि., २, १, १९६७, २५-३४।

411. Tephrosia purpurea (Linn.) Pers. **सं०-शरपुंखा**

६५२. यकृतोदर के रोगियों में इसका प्रयोग किया गया। यह यकृत के कार्य को ठीक करने में सहायक सिद्ध हुई है।

य. न. उपाध्याय, के. पी. शुक्ला, पी॰ एस. शंकरन्, सु. ना. पाठक, जर. मेडि॰ साइ., ५, १, जाने. १९६४, ९७-१०२।

412. Terminalia belerica Roxb. **सं०-बिभीतक**

६५३. इसके फलों के रासायनिक विश्लेषण से एक नया हृदय पर कार्य करनेवाला ग्लाइकोसाइड पृथक् किया गया है।

कु॰ ले. अवस्थी एवं भो. नाथ, जर॰ इण्डि. केमि. सोसा., ४५, १०, १९६८, ९१३-९१७।

413. Terminalia chebula Retz. **सं०-हरीतकी**

६५४. इसमें का कार्यकारी विरेचक तत्व, सेन्नोसाइड ए (Sennoside A) या उसी तरह का है।

के. एन. गौंड एवं टी. एस. सैनी, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, १०, १९६८, २३३-२३४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

414. Terminalia paniculata Roth.

६५५. इसके काष्ठसार के रासायनिक विश्लेषण से 3, 4, 3–O–Trimethyl Flavellagic acid पृथक किया गया है ।

एल. आर. राव, आर. आर. राजू, टेट्रा., २३, १९६७, ८७९-८८४ ।

415. Thespesia populnea Soland. ex Correa

हिं०-पारस पीपल

६५६. चूंकि खुजली तथा चर्मरोगों में इसके फल, पत्र तथा मूल को लाभदायक बतलाया जाता है इसलिये इसकी जीवाणुरोधी क्रिया का अध्ययन किया गया । यह देखा गया कि इसके कच्चे फलों के गूदे का पेट्रोलियमईथर (४०°–६०°) से निकाला सत्व ०.०३% संकेन्द्रण में स्टॅफिलो कोकस जीवाणु (पूयजनक) की वृद्धि को रोकता है एवं यह एक फ्लेवोनाइड यौगिक (flavonoid compound) है ।

के. एन. गैंड एवं एस. सी, बापना, इंडि. जर. फार्मेसी २९, १, १९६७, ८-९ ।

६५७. इसके फूलों के रासायनिक विश्लेषण से Gossypol नामक तत्व निकाला गया जो कपास के अतिरिक्त और किसी से निकाला हुवा ज्ञात नहीं था ।

एस. सी. दत्ता, वी. वी. एस. मूर्ति एवं टी. आर. शेषाद्रि, करेंट साइंस, ३७, ५, १९६८, १३५ ।

६५८. इसकी छाल तथा पुष्पों के रासायनिक विश्लेषण से प्रकाशीय सक्रिय Gossypol पृथक् किया गया है ।

टी. जे. किंग, एल. वी. डी. सिल्वा, टेट्रा. लेट., ३, १९६८, २६१-२६३ ।

416. Thevetia neriifolia Juss. **हिं०-पीला कनेर**

६५९. इससे प्राप्त एक ग्लाइकोसाइड–Peruvoside का अध्ययन किया गया है । यह बिल्ली की पॅपिलरी मांसपेशी के संकोचों को बढ़ाता है । कुत्ते में हृद्बल्य क्रिया पाई गई । इसकी क्रिया Quabain के सदृश है । यह शीघ्र

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कार्य करता है। इसका प्रचूषण मुखद्वारा सेवन से होता है तथा इसमें संचायी विष प्रभाव अल्प हैं। प्रारम्भिक अध्ययन से, रक्त संकुल हृद्पात (congestive heart failure) के लिये यह अच्छी औषधि सिद्ध हो सकती है।

आर. वी. अरोरा, जे. एन॰ शर्मा एवं एम. एल. भाटिया, इंडि. जर. एक्सपेरि॰ बायो., ५, १, १९६७, ३१-३६।

६६०. इसके बीजों में के तथा इससे विषाक्त मानव के मलादि उत्सर्गों में, इसके glycoside को वर्ण लेखीय विश्लेषण पद्धति द्वारा पहिचाननें की विधि का वर्णन किया गया है।

पी. एस. राजू, जर. इण्डि. एकेडे. फोरेन्सिक साइ., ७, २, १९६८, ७६-८३।

417. Tinospora cordifolia (Willd.) Miers. **सं०-गुडूची**

६६१. बाईस चूहों में यशद के टुकड़ों को उनके मूत्राशय में प्रस्थापित करके अश्मरी उत्पन्न की गई। इन पर, गुडूची के क्वाथ को मुखद्वारा पिलाकर अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि इससे यशद के टुकड़ों के ऊपर अश्मरी बनने में बाधा होती है। रासायनिक दृष्टि से यह अश्मरी फॉस्फेट की पाई गई।

महेश राय एवं एस. एस. गुप्त, जर. रिस. इंडि. मेडि. २, १, १९६७, ११३-११६।

६६२. इसके जलीय एवं अन्य सत्वों (सुरासारीय, ईथरीय आदि) का अध्ययन इसके मधुमेह में उपयोग की दृष्टि से किया गया। इसके विभिन्न परिणामों के आधार पर इसके कार्य करने के तरीके पर प्रकाश डाला गया। इसका यह कार्य, इसके आंतरिक इन्सुलिन उत्सर्ग, ग्लूकोस का उपयोग एवं परिसरीय ग्लूकोस विमुक्ति के विरोध से होता है।

एस. एस. गुप्ता, एस. एल. सी. वर्मा, वी. पी. गर्ग एवं महेश राय, इंडि. जर. मेडि. रिस. ५५, ७, १९६७, ७३३-७४५।

६६३. प्राणियों में गुडूची से प्राप्त एक तिक्त द्रव्य का आमाशयिक अम्ल तथा आन्त्र की गति पर अध्ययन किया गया। इससे आमाशयिक अम्ल

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रारम्भ में बढ़कर फिर क्रमशः कम हो जाता है। यह कार्य हिस्टामीन के ह्रास से होता है। यह ग्रामाशयिक पुरस्सरण को भी कम करता है। आंत्र एवं गर्भाशय की गति भी इससे कम होती है।

दि. चन्द्र, म. राय एवं एस. एस. गुप्त, इण्डि. जर. फीजियोला. फार्माकोला., सार, ११, २, १९६७, ५७-५८।

६६४. इससे प्राप्त तिक्त द्रव्य से यकृत् द्वारा ग्लाइकोजन-लयन (Glycogenolysis) में विरोध होता है।

एस. एस. गुप्त, जे. आर. ई. वल्डेयर्स, बी. पी. गर्ग तथा म. राय, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., सार, ११, २, १९६७, ५६।

६६५. इसके मधुमेह नाशक गुणों का और आगे अध्ययन किया गया है।

एस. एस. गुप्त, इंडि. जर. फीजियो. फार्माको., सार, १२, २, १९६८, १०।

६६६. खरगोशों को इसका क्वाथ पिलाया गया। तत्पश्चात् ग्लूकोस दिया गया। यह देखा गया है कि जिन्हें ग्लूकोस के पूर्व क्वाथ दिया गया था उनमें अन्यों की अपेक्षा रक्तगत शर्करा कम रही।

के. रघुनाथन् एवं प्रि. व्र. शर्मा, नागा., १२, ३, १९६८, ५१-५४।

418. Toddalia aculeata Pers. **सं०-कंचन**

६६७. इसके रासायनिक विश्लेषण का अध्ययन इसमें किया गया है।

पी. डी. देसाई, टी. आर. गोविन्दचारी, के. नागराजन एवं एन. विश्वनाथन, इंडि. जर. केमिस्ट्री, ५, १, १९६७, ४१-४२।

६६८. इसके मूल की छाल से दो नये क्षाराभ पृथक् किये गये।

टी. आर. गोविन्दाचारी एवं एन. विश्वनाथन, इण्डि. जर. केमिस्ट्री, ५, ६, १९६७, २८०।

419. Trachyspermum ammi Linn. **सं०-यवानी**

६६९. इसके तीन प्रकार के फल बजार में बिकते हैं। १. देसी अजवाइन (बड़ी), २. नादियाड अजवाइन एवं ३. देसी अजवाइन (छोटी)। इसमें एक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अन्य फल मकरा की मिलावट होती है। इसलिये प्रस्तुत शोधपत्र में तीनों भेदों का सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन तथा उनके तैलीय अंश का अध्ययन किया गया है।

एस. एम. जे. एस. कादरी एवं सी. के. अटल, प्लॅन्टामेडिका, १५, १, १९६७, ५२-५७।

420. Tribulus terrestris Linn. सं०-गोक्षुरु; हिं०-छोटा गोखरू

६७०. पुनर्नवा की तुलना में इसमें मूत्रल क्रिया नहीं पाई गई।

देखें–१२२।

६७१. चूहों में प्रयोग से इसके फलों में मूत्रल गुण पाया गया। इसके क्वाथ तथा इसकी राख के जलीय सत्व का उपयोग किया गया था। चूँकि राख में अधिक गुण था एवं इसके सुरासारीय सत्व (हरित तैलीय अंश) में मूत्रल गुण नहीं पाया गया इसलिये इसका मूत्रल कार्य संभवतः इसमें के पोटॅशियम के कारण है।

जी. शान्ता कुमारी एवं जी. वाइ. एन. ऐय्यर, इंडि, जर. मेडि. रिस., ५५, ७, १९६७, ७१४-७१६।

६७२. इसका स्वपारिस्थितिकीय (autecological) अध्ययन किया गया हैं।

एम. सी. जोशी, एस. कहाटे एवं एस. बिशनोई, जर. इण्डि. बोटे. सोसा., ४६, २-३, १९६७, १६९-१८३।

६७३. कुछ रोगियों में अनुभव से कहा जा सकता है कि यह निरापद मूत्रल है जिसका उपयोग वृक्क विकार में कर सकते हैं। अन्यों की अपेक्षा Primary nephritis में यह अधिक लाभकर है। चूँकि इसके कार्यों में अन्तर देखा गया इसलिये इसका द्रव्यविनिश्चयात्मक अध्ययन आवश्यक है।

एस. एन. बोस, ॲन्टिसेप्टिक, ६५, ६, १९६८, ४०३-४०८।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

421. Trichosanthes cucumerina Linn. सं०-पटोल;
हि०-जंगली चिचोडा

६७४. इस अध्ययन में इसके काण्ड, पत्र, फल एवं बीज का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं भस्म तथा सत्व स्थिरांक (Ash and Extractive constants) एवं प्रतिदीप्ति विश्लेषण (Fluorescence analysis) प्रस्तुत किया गया है।

सी. एस. शाह एवं नीला एस. शाह, जर. रिस. इण्डि. मेडि., १, २, १९६७, २३०-२३५।

422. Trigonella corniculata Del.

६७५. इसके बीजों में तीन steroidal sapogenins पाये गये हैं जिनमें से सबसे अधिक (७०%), Yuceagenin है, दूसरा Diosgenin है तथा तीसरा अत्यल्प होता है।

पी. वार्ष्णेय एवं ए. आर. सूद, जर. इण्डि. केमि. सोसा., सार, ६ ठवाँ वार्षिक सम्मेलन अहमदाबाद, ४५, १९६८, ३५।

423. Trigonella foenum graecum Linn. सं०-मेथिका

६७६. इसके मूलों के श्वसन कार्य के लिये लोहा, मैगनेशियम तथा खटिक की आवश्यकता सिद्ध की गई।

डी. लीला एवं सी. एच. पाठक, इण्डि. जर. एक्स्पे. बायो., ६, २, १९६८, १२७-१२८।

424. Tylophora indica (Burm. f.) Merr. सं०-अन्त्रमूल

६७७. दमा तथा अलर्जी के कारण होनेवाले जुकाम के रोगियों में इसके पत्तों का प्रयोग किया गया। प्रारम्भिक अध्ययन में देखा गया कि ३ से ६ पत्तों की मात्रा से ही ५५% रोगियों में लाक्षणिक लाभ बहुत हुआ किन्तु साथ में कुछ विपरीत प्रभाव जैसे वमन, स्वाद का नाश, मुँह में छाले आदि देखे गये। आगे संशोधन चल रहा है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

डी. एन. शिवपुरी, एम. पी. एस. मेनन एवं धर्म प्रकाश, जर. एसोसि. फीजिशि. इण्डि., १६, १, १६६८, ६-१५।

425. Uraria lagopoides DC. सं०-पृश्निपर्णी भेद

६७८. प्राणियों के परीक्षण में इसके काण्ड एवं पत्तों के क्वाथ में गर्भाशय के लिये बलदायक (uterotonic) क्रिया पाई गई। कुत्ते के गर्भाशय पर यह प्रभाव नहीं पाया गया।

एम. वी. मिश्रा, जे. पी. तिवारी एवं एस. एन. मिश्रा, इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १०, २, १९६६, ५६-६०।

६७९. इसके काण्ड तथा पत्र के उष्ण जलीय सत्व में चूहों के सगर्भ तथा अगर्भ गर्भाशय पर संकोचक गुण पाया गया। गिनीपिग, खरगोश तथा मानव पृथक्कृत गर्भाशय पेशी पर इसी प्रकार की क्रिया देखी गई जो एट्रोपीन से रोकी जा सकती है। कुत्ते के गर्भाशय पर अधिक मात्रा से तान (tone) में वृद्धि देखी गई। मेढक के हृदय पर इसका अवसादक प्रभाव हुआ। गिनीपिग के आंत्र (ईलियम) पर उद्वेष्ठनकारी (spasmogenic) प्रभाव हुआ। कुत्ते के रक्त दवाव या श्वसन पर कोई क्रिया दृष्टिगोचर नहीं हुई।

एम. वी. मिश्रा एवं राजकुमारी मिश्र, इण्डि. जर. फार्मेसी, २९, ५, १९६७, १५६-१५७।

426. Uraria picta Desv. सं०-पृश्निपर्णी

६८०. चूहों के अस्थि भंग में इसके संपूर्ण सत्व का उपयोग किया गया। स्ट्रॉन्शियम आइसोटोप एवं तनाव सहन करने की क्षमता के आधार पर परीक्षा की गई जिसमें देखा गया कि इससे अल्पावधि में अधिक तनाव सहन करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

गु. प्रसाद, पी. एस. शंकरन् एवं प्र. ज. देशपाण्डे, जर. एक्सपे. मेडि. साइ., ८, १, २, जून, सितम्बर १९६४, ४३।

६८१. इसमें रेडियोसक्रिय गंधक ३५ का उपयोग किया गया। जिनमें पृश्निपर्णी का उपयोग किया गया उनमें इस विशिष्ट गंधक का संचय प्रारम्भ

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

में अधिक होकर बाद में शीघ्र ह्रास हुवा तथा म्यूकोपॉलिसॅकेराइड भी भग्न स्थान में नहीं रहा । इससे यह अनुमान होता है कि पृश्निपर्णी से भग्न में शीघ्र खनिजन (mineralisation) होता है ।

पी. एस. शंकरन, गु. च. प्रसाद एवं प्र. ज. देशपाण्डे, ॲनल्स आइ. ए. एम. एस., २, १, १९६६ ।

६८२. इसमें जीवाणुरोधी कोई क्रिया नहीं पाई गई ।

देखें–६२८ ।

६८३. इसका स्वपारिस्थितिकी (autecology) संबंधी अध्ययन किया गया है जिसमें परिस्थिति के अनुसार इस पौधे में पाये जानेवाले परिवर्तनों का उल्लेख है ।

कु. आ. भारद्वाज, जर. साइ. रिस. बी. एच. यू. १६ (१), ६५-६६, २३-३१ ।

६८४. इसके मूल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, शालपर्णी के मूल के साथ विभेदक लक्षण, रासायनिक संगठन तथा प्रतिदीप्ति विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें क्षाराभ, अपचायक शर्कराएँ, स्टेरॉल, टॅनिन, राल एवं दोनों प्रकार के तैल पाये जाते हैं ।

सं. प्रसाद, मो. सा. अन्सारी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., २, १, १९६७, १६-२४ ।

427. Valeriana officinalis Linn. हिं०-तगरभेद

६८५. इसके प्रधान क्षाराभ की संरचना का निर्धारण किया गया हैं ।

के. टी. एवं के. डब्लू., टेट्रा. लेट., ४, १९६६, ४४५-४४८ ।

428. Valeriana wallichii DC. हिं०-तगर

६८६. इसके रासायनिक पृथक्करण से प्राप्त द्रव्यों (Valepotriate) की संरचना का अध्ययन है ।

पी. डब्लू. टी., टेट्रा., २४, १९६८, ३१३-३४७ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

६८७. इसके मूल के उड़नशील तैल से प्राप्त Maaliol नामक tricyclic sesquiterpene alcohol के अन्य विद्वानों ने किये गुण-कर्मीय अध्ययनों का विवेचन किया गया है। इससे बिल्ली में रक्त दबाव एकाएक कम होकर हृदय में अनियमितता आती हैं एवं श्वसन अवसादित होता है। यह बहुत क्रियाशील तत्व नहीं है।

वी. के. सूद, इण्डि. फारेस्टर, ९४, ५, १९६८, ४०५।

429. Vallaris solanacea Kuntze. सं०-आस्फोता ? वं०-हाफरमाली

६८८. इसके काण्ड से β–sitosterol तथा ग्लाइकोसाइड का मिश्रण प्राप्त किया गया है।

एन. के. राय, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४३, २, १९६६, १३९।

६८९. इसमें के एक ग्लाइकोसाइड (O–acetyl-solanoside) में हृत्बल्य (cardiotonic) क्रिया पाई गई।

एम. एम. वोहरा, जी. के. पटनायक, आर. एस. कपिल एवं एम. आनन्द, जर. फार्मा. साइन्स, ५५, १९६६, १४२५।

430. Vanda roxburghii R. Br. सं०-रास्ना (वंगीय)

६९०. प्राणियों में इसके ग्लाइकोसाइड के सन्धि शोथहर गुण का अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि इससे फार्मेल्डिहाइड द्वारा उत्पन्न संधिशोथ की प्रारम्भिक प्रतिक्रिया में कोई परिणाम नहीं होता किन्तु द्वितीयक प्रचुरोद्भवन परिणामों (proliferative changes) को रोकने में यह समर्थ है।

डी. एन. प्रसाद एवं जी. अचारी, जर. इंडि. मेडि. असो., ४६, ५, १९६६, २३४-२३७।

६९१. इसके पंचांग के रासायनिक विश्लेषण से β–sitosterol, γ–sitosterol एवं दो स्नेहीय द्रव्य पृथक् किये गये।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एस. दास, श्रीमती ए. भट्टाचार्य एवं ए. के. भट्टाचार्य, जर. इण्डि. केमि. सोसा., ४४, ६, १९६७, ८०४-८०५ ।

६९२. रास्ना नाम से लिये जानेवाले द्रव्यों में से उपर्युक्त द्रव्य के मूल, काण्ड एवं पत्र का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन, संपूर्ण पौधे का प्रतिदीप्ति विश्लेषण (Fluorescence) एवं इसके मानकीकरण की दृष्टि से भौतिक स्थिरांकों (Physical constants) का निर्धारण किया गया है। इसके सुरासारीय निस्सार में ग्लाइकोसाइड पाया जाता है जो ०·२४३२% रहता है।

सं. प्रसाद, रो. मित्रा, मो. सा. अन्सारी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., २, २, १९६८, २०८-२२१ ।

431. Vateria indica Linn. हिं०-बड़ासाल; म०-चन्द्रुस

६९३. इसके बींजों के तेल का रासायनिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें ठोस स्नेह, Bergenin नामक ग्लूकोसाइड, शर्करा आदि होते हैं किन्तु विभिन्न विलेयकों या देहाती पद्धति से निकाले तेल में पॉलीफेनॉल नहीं रहते ।

एस. सी. आरा एवं टी. आर. शेषाद्रि, ३५, १९, १९६६, ४८६-४८७ ।

६९४. इसके निर्यास के सुगन्धि तैल की जीवाणुनाशक क्रिया का अध्ययन प्रस्तुत है। पिप्पली आदि अन्य द्रव्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

ए. के. भार्गव एवं सी. एस. चौहान, इंडि. जर. फार्मेसी, ३०, ६, १९६८, १५०-१५१ ।

432. Vepris bilocularis Engler. मल०-देवदारं

६९५. इससे प्राप्त विभिन्न क्षाराभों का रासायनिक विवेचन है।

ए. के. जी., टी. आर. जी., ए. एम. एवं पी. ए. एम., इंडि. जर. केमिस्ट्री, ४, ७, १९६६, ३३४-३३५ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

433. Vernonia cinerea Less. सं०-सहदेवी

६९६. व्रणरोपण गुण के अध्ययन के लिये इसके स्वरस का प्रयोग प्राणियों में कृत्रिम व्रण उत्पन्न करके किया गया। परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसमें व्रणरोपक गुण हैं।

एस. एन. पाठक, पी. एस. शंकरन् एवं पी. जे. देशपाण्डे, सर्जिकल जरनल, दिल्ली, १, ३, मई, १९६५।

434. Vetiveria zizanioides Linn. हि०-खस

६९७. इसके सुगन्धि तैल से एक terpenoid-Khusinoloside पृथक् किया गया जिसके रासायनिक स्वरूप का विवेचन है।

आर. शेषाद्रि, पी. एस. कालस्मी, के. के. चक्रवर्ती एवं एस. सी. भट्टाचार्या, टेट्रा., २३, १९६७, १२६७-१२७१।

६९८. जापान में उत्पन्न इसके सुगन्धि तैल के रासायनिक विश्लेषण से पृथक् किये गये एक sesquiterpene carboxylic acid–Zizanoic acid की संरचना का विवेचन किया गया है।

एफ. के., एच. यू. एवं ए. वाई, टेट्रा. लेट., २९, १९६७, २८१५-२८२०।

435. Vinca major Linn.

६९९. पहले से ज्ञात ५ अल्कलायड के अतिरिक्त चार नये अल्कलायड पृथक् किये गये। इनका विवेचन किया गया हैं।

जे. एल. कौल एवं जे. ट्रोजानेक, लायडिया, २९, १, १९६६, २६-३३।

436. Vinca rosea Linn. हि०-सदाबहार

७००. इसके विभिन्न लैटिन नामों का विवेचन किया गया है तथा शुद्ध नाम Catharanthus roseus (L.) G. Don. निश्चित किया गया है।

वि. टी. स्टीयर्न, लायडिया, २९, ३, १९६६, १९६-२००।

७०१. इससे प्राप्त तीन नये क्षाराभ Sitsirikine, Dihydrositsirikine

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एवं Isositsirikine की संरचना का निर्धारण किया गया है। यह Corynantheine वर्ग के हैं।

जे. पी. कुटने एवं आर. पी. ब्राउन, टेट्रा., २२, १९६६, ३२१-३३६।

७०२. इसके क्षाराभों में से Leurosidine की संरचना का अध्ययन किया गया है।

एन. एन., एल. एल. एच., एन. जे. सी., टेट्रा. लेट., ९, १९६७, ८११-८१६।

७०३. इसके पत्तों के संपूर्ण क्षाराभों के अन्तःपर्युदर्या (intraperitoneal) सूचिकाभरण से चूहों के वृषणों के शुक्राणु उत्पादक ऊतक पर व्यपजनक (degenerative) प्रभाव देखा गया। वृषण भी हलके तथा ढीले हो गये।

एम. एस. जोशी एवं आर. वाइ. अंबाये, इण्डि. जर. एक्सपे. बायोला., ६, ४, १९६८, २५६-२५७।

437. Vitex negundo Linn. सं०-निर्गुण्डी

७०४. फार्मेल्डिहाइड द्वारा प्राणियों में कृत्रिम संधिशोथ उत्पन्न कर इसके जलीय निःस्सार का आन्तरिक प्रयोग एवं इसके क्वाथ से बाह्य सेंक किया गया। इससे साधारण लाभ देखा गया। रोगियों के परीक्षण में आन्तरिक प्रयोग में कोई लाभ नहीं हुवा किन्तु बाह्य स्वेद से लाभ हुवा।

जी. एन. चतुर्वेदी एवं आर. एच. सिंग, ह्यूमेटिस्म, १, ३, १९६६, १२५-१३३।

७०५. बला की तुलना में इसमें सन्धिशोथहर गुण कम पाया गया।

देखें–६१०

७०६. दस सन्धिशोथ के रोगियों में तथा चूहों में कृत्रिम शोथ उत्पन्न कर इसके पत्तों के क्वाथ का आंतरिक प्रयोग तथा बाह्य स्वेदन किया गया। आंतरिक प्रयोग में सफलता नहीं मिली। बाह्य प्रयोग में कुछ लाभ देखा गया जो सम्भवतः केवल सेंकने से भी हो सकता है।

आर. एच. सिंग एवं जी. एन. चतुर्वेदी, करेन्ट मेडि. प्रॅक्टि., ११, ७, १९६७, ४०६-४१४।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

438. Webera corymbosa Willd.

७०७. इसके पत्तों के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त एक Flavone–Corymbosin की संरचना तथा संश्लेषण का अध्ययन किया गया है।

बी. एस. जोशी एवं डी. एफ. राणे, टेट्रा. लेट., ४६, १९६७, ४५७९-४५८१।

439. Wedelia calendulacea Less. सं०-भृंगराज (पीत)

७०८. देखें–२८५।

७०९. चूँकि भृंगराज नाम से इसका भी व्यवहार किया जाता है इसलिये Eclipta alba के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन इनके स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक स्वरूप के ज्ञान के लिए किया गया है। अन्य विद्वानों ने इसमें Wedelolactone पाया है जो E. alba में भी पाया गया है एवं सम्भवतः इसी कारण दोनों में गुण साम्य है। इसका प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन भी किया गया है।

देखें–२८७।

440. Withania somnifera Dunal. सं०-अश्वगन्धा

७१०. चूँकि इसके अपरिष्कृत सत्व के समान ही इसके संपूर्ण क्षाराभ की क्रिया होती है इसलिये प्रस्तुत लेख में अश्वगंधा मूल के संपूर्ण क्षाराभ की मात्रा के परिमापन की सरल विधि का उल्लेख किया गया है। इस विधि द्वारा देखा गया कि बजार के नागौरी असगंध में सबसे अधिक संपूर्ण क्षाराभ (१·०९%) की मात्रा रहती है एवं इनमें भी ६ मि. मी. मोटे टुकड़ों में यह अधिकतम रहती है जबकि चण्डीगढ़ के वन्य पौधों के मूल में यह ०.८८% एवं जम्मू में कृषित पौधों के मूल में यह ०.६८% पाई गई।

पी. एन. मोजा एवं जसवन्त सिंह, जर. रिस. इंडि. मेडि., २, १, १९६७, ७७-७८।

७११. इसके बीजोद्गम, पर्व तथा पुष्प का रचनात्मक अध्ययन किया गया है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बी. डी. देशपांडे एवं अवतार सिंग, जर. इण्डि बोटे. सोसा., ४६, १, १९६७, ७६-८१।

७१२. सन्धि शोथ, आमवात एवं कटिशूल आदि के विभिन्न रोगियों में इसके मूल का चूर्ण ४-९ ग्राम की मात्रा में कैंपसूल में भरकर खिलाया गया। इसमें कोई विषैला परिणाम नहीं मालूम हुआ। नवीन आमवाताभ सन्धि शोथ (rheumatoid arthritis) के प्रथम आक्रमण में तथा कुछ जीर्ण रोगियों के तीव्र प्रकोपन में इससे लाभ हुवा। आमवात के कुछ रोगियों में भी इससे लाभ हुवा। अभी आगे कार्य चालू है।

एन. पी. बेक्टर, ए. एस. पुरी एवं डी. शर्मा, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५६, १०, १९६८, १५८१-१५८३।

७१३. आमवात के ८४ रोगियों पर इसके मूल का उपयोग ६-९ ग्राम प्रति दिन की मात्रा में किया गया। नये रोगियों में इससे लाभ हुवा। पुराने रोगियों में कुछ लाक्षणिक लाभ देखा गया।

की. शर्मा, ए. एस. पुरी एवं बी. एन. सण्ड, नागा., ११, १२, १९६८, ६२५-६२७।

७१४. प्राणियों में इसके सुरासारीय सत्व का मानसिक प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत है। यह शामक, निद्रावर्धक है किन्तु स्ट्रिकनीन एवं मेट्राझोल की आक्षेप जनक तथा मारक क्रियाओं को रोकने में समर्थ नहीं है। इससे सेमी-कार्बाझाइड का आक्षेप जनन कार्य विलम्ब से प्रारम्भ होता है किन्तु उसके मारक प्रभाव को यह रोक नहीं पाता। यह मेस्कालीन के कण्डूजनन प्रभाव को कुछ कम करता है।

पी. के. दे. एवं बी. के. चटर्जी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ९-१८।

७१५. इसके पंचांग के पेट्रोलईथर, सुरासार एवं जलीय सारों में प्रजनन-रोधी क्रिया नहीं पाई गई।

देखें—५९।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

441. Wrightia tinctoria R. Br. **सं०-कुटज श्वेत**

७१६. इसके पत्र तथा फली में पाये जानेवाले ट्राइटर्पिनाइड (Triter-penoid) अंशों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

एम. एन. राव, ई. वी. राव, वी. एस. राव, करेंट साइंस, ३५, २०, १९६६, ५१८-५१९।

442. Xanthium strumarium Linn. **सं०-ब्रह्मदण्डी**

७१७. इसके पारिस्थितिकीय अध्ययन (Ecology) के सम्बन्ध में यह ६ ठा लेख है।

वी. कौल, जर. इण्डि. बोटॅ. सोसा., ४६, ४, १९६७, ३८९-३९५।

443. Zanthoxylum rhetsa DC. **हिं०-बदरंग**

७१८. इसके फलों के तैल से एक Oxidodiol पृथक् किया गया है।

आर. के. माथुर, एस. के. रामस्वामी, ए. एस. राव एवं एस. सी. भट्टाचार्य, टेट्रा., २३, १९६७, २४९५-२४९८।

444. Zingiber zerumbet Smith **हिं०-महाभरीबच**

७१९. इसके कंदों के सुगन्धि तैल का रासायनिक विश्लेषण किया गया है एवं अनेक नये Sesquiterpenoids के पृथक्करण का विवेचन है।

७२०. इनमें से दो Humulene epoxide I & II तथा Humu-lenols की संरचना का भी निर्धारण है।

एन. पी. दामोदरन एवं सुखदेव, टेट्रा., २४, १९६८, ४११३-४१२२; ४१२३-४१३२; ४१३३-४१४२।

● ●

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

परिशिष्ट १.

शोध-पत्रों के पूरक सारांश

Andrographis serpyllifolia Wt.

७२१. मद्रास से संग्रहीत इस पौधे के रासायनिक विश्लेषण से एक नया Flavone–Serpyllin प्राप्त किया गया तथा इसकी संरचना का भी निर्धारण किया गया है।

टी. आर. गोविन्दचारी, पी. सी. पार्थ सारथी, वी. आर. पाइ एवं पी. एस. कल्याण रमन, टेट्रा., २४ २४, १९६८, ७०२७-७०३१।

Calophyllum apetalum Willd.

७२२. इसकी फलमज्जा से एक नया lactone–Apetalolide, β–sitosterol एवं β–D–glucoside प्राप्त किये गये।

एस. के. निगम एवं सी. आर. मित्रा, प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ४५०-४५७। देखें–१३९-१४१।

Calophyllum tomentosum T. Anders.

७२३. इसकी फलमज्जा से दो नये रवेदार lactone–Tomentolide A&B, प्राप्त किये गये।

एस. के. निगम एवं सी. आर. मित्रा, प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ४५०-४५७। देखें–१४६, १४७।

Cassia fistula Linn. सं०-आरग्वध

७२४. इसके काण्ड त्वक् से Lupeol, β–sitosterol एवं Hexacosanol पृथक् किये गये।

ए. वी. सेन एवं वाइ. एन. शुक्ल, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ८, १९६८, ७४४। देखें–१६६, १६७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Crotalaria laburnifolia Linn.

७२५. इसके बीजों में से इसके रवेदार घटकों (Crotalaburnine) को पृथक करने की परिष्कृत विधि का उल्लेख किया गया है। इसके पुष्पों में केवल Flavonoid glycoside–Hyperoside पाया गया एवं इसमें हृदय पर कार्यशील ग्लाइकोसाइड नहीं होता जो बीजों में होता है।

एस. एस. सुब्रमनियन एवं एस. नागराजन, प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ४३२-४३५। देखें–२३६, २३७।

Desmodium gangeticum DC. सं०-शालपर्णी

७२६. इसके मूल का स्थूल तथा सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन एवं मूल चूर्ण का प्रतिदीप्ति विश्लेषण (Fluorescence analysis) प्रस्तुत किया गया है।

एस. प्रसाद एवं एम. एस. अन्सारी, जर. साइ. रिस., बी. एच. यू., १७ (१) १९६६-६७, १३०-१३५। देखें–२७४।

Echinops echinatus Roxb. सं०-उत्कण्टक; हिं०-ऊँटकटेरा

७२७. इस पौधे से β–amyrin, lupeol, hentriacontane एवं hentricontanol पृथक् किये गये।

ए. वी. सेन, एम. एम. धर एवं वाइ. एन. शुक्ल, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ८, १९६८, ६९७-६९८।

Erythroxylon monogynum Roxb. दक्षिण-देवदारु

७२८. इसके काष्ठ के रासायनिक विश्लेषण से प्राप्त द्रव्यों (+)-hibaene (2), erythroxylol A (3), erythroxylol B (8) एवं erythroxylol A (II) के संगठन एवं विन्यास रसायन का अध्ययन है।

आर. एम. सी., ए. एम. एवं आर. डी. एच. एम., जर. केमि. सोसा., सी, इंग्लैण्ड, १८, १९६८, २३४९-२३५४। देखें–३०९।

Hylocerus undatus.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

७२९. इस पौधे के रासायनिक विश्लेषण से Hentriacontane एवं β–sitosterol पाये गये।

ए. वी. सेन एवं वाइ. एन. शुक्ल, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ८, १९६८, ७४५।

Mallotus philipinensis Muell.–Arg. सं०-कम्पिल्लक

७३०. कंपिल्लक से दो नये गौण अंश पृथक् किये गये जिनकी संरचना के विषय में यह अध्ययन है।

एल. सी., सी. एल. जी., वी. टी. एवं डी. ए. डब्लू., जर. केमि. सोसा., सी. इंग्लैण्ड, २१, १९६८, २६२५-२६३०। देखें–४१०।

Malus sylvestris Mill. हि०सेव

७३१. इसके छिलके में Ursolic acid के अतिरिक्त दो नये Triterpenoid अम्ल पाये गये जो 20 β–hydroxyursolic acid एवं 2 ξ, 20 β–dihydroxyursonic acid हैं।

डब्लू. एल., जे. एम. एल. एवं एम. ई. जी. वाइ., जर. केमि. सोसा., सी, इंग्लैण्ड, ९, १९६७, ८५१-८५४।

Mytragyna parvifolia Korth. हि०-करम, कैंमा

७३२. इसके पत्तों से Loganin नामक अंश पृथक् किया गया। यह सिद्ध करता है कि Loganin यह indole alkaloids के संश्लेषण में भाग लेता है। Rubiaceae वर्ग के इस वृक्ष में इसकी उपस्थिति सर्वप्रथम बतलाई गई है। यह इस बात का भी द्योतक है कि इस वर्ग का Loganiaceae वर्ग के साथ निकट संबंध है।

डी. एस. भाकुनी एवं आर. एस. कपिल, एक्सपेरिए., २४, १२, १९६८, ११८५।

७३३. कोचीन एवं पूना से संग्रहीत इसके पत्तों के क्षाराभों में भिन्नता पाई गई थी। प्रस्तुत शोधपत्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, प. बंगाल, लखनऊ एवं

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

देहरादून से प्राप्त नमूनों के अध्ययन के सम्बन्ध में है। इनके क्षाराभों में भी भिन्नता देखी गई।

ई. जे. एस., जे. डी. पी. एवं डी. गुप्ता, प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ४३६-४४५।

Piper cubeba Linn. **हि०-कबाबचीनी**

७३४. इसके फलों से Cubebin नामक प्राकृतिक Lignan द्रव्य पृथक् किया गया एवं इसके वर्णक्रमीय गुणों का विवेचन है।

श्रीमती ए. चटर्जी, एस. सी. वासा एवं ए. वी. रे, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ८, १९६८, ७२३-७२५। देखें–५१०।

Plantago sp. **हि०-इसबगोल**

७३५. मिस्र में होनेवाली इसकी विभिन्न जातियों (Sp.) के स्थिर तैल का अध्ययन किया गया है। इनके स्नेहाम्लों में कुछ विभिन्नता पाई गई तथा इनमें β–sitosterol, stigmasterol तथा campesterol ये द्रव्य भी पाये गये।

जेड. एफ. अहमद, एफ. एम. एच., ए. एम. आर. एवं जी. एम. डब्लू., प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ४०४-४१०। देखें–५२८, ५२९।

Prunus amygdalus Batsch. **हि०-बदाम**

७३६. बदाम के कवच से प्राप्त एक प्रतिसूक्ष्म जीवी द्रव्य का प्रारम्भिक परीक्षण किया गया है। यह तीव्र जीवाणुरोधी है। इसी प्रकार अखरोट एवं जर्दालू (P. armeniaca Linn.) के कवचों में भी यह गुण पाया गया। **शीशम** की लकड़ी में यह गुण नहीं मिला। व्रण चिकित्सा में, विशेषकर दग्ध व्रण के लिये यह बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

वाइ. सचदेव, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला., १२, ४, १९६८, २०७-२१२।

Ruta graveolens Linn. **हि०सुद्दाब**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

७३७. इसके रासायनिक विश्लेषण के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है।

जे. आर., आई. एन., के. एस. एवं इ. एम. प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ३७२-३७६। देखें–५७४, ५७५।

Solanum ferox Linn.

७३८. इसके बीजों के रासायनिक विश्लेषण से इसमें के तेल में Solanocarpone (0·036%) एवं Carpesterol (0·073%) पाये गये।

डी. आर. गुप्त एवं एस. के. गर्ग, जर. इंडि. केमि. सोसा., ४५, ८, १९६८, ७३९-७४०।

South Indian Vetiver oil.

७३९. इसके रासायनिक विश्लेषण से एक नया sesquiterpene alcohol पृथक् किया गया है जिसका नामकरण Khusinol किया गया है। इसके स्वरूप का भी विवेचन है।

डी. सी. उपरानी, के. जी. गोरे एवं के. के. चक्रवर्ती, टेट्रा. लेट., १२, १९६६, १२५५-१२६१।

Stereospermum suaveolens DC. सं०-पाटला

७४०. इसके तने तथा मूल की छाल का स्थूल एवं सूक्ष्म रचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

एस. प्रसाद एवं अ. प्रकाश, जर. साइ. रिस., बी. एच. यू., १७ (१), १९६६-६७, १०१-१११। देखें–६३७।

Valeriana wallichii DC. स०-तगर

७४१. इसके मूल से पृथक् किये गये Linarin–isovalerianate के सम्बन्ध में अध्ययन है।

पी. डब्लु. थीज, प्लॅन्टा मेडिका, १६, ४, १९६८, ३६१-३७१। देखें–६८६, ६८७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Withania ashwagandha Kaul सं-अश्वगन्धा

७४२. केन्द्रीय तन्त्रिका संस्थान पर इसके एसिटोन, सुरासार एवं जल-विलेय क्षाराभीय अंशों के प्रभाव का अध्ययन इस ६ठें लेख में प्रस्तुत किया गया है। एसिटोन विलेय अंश कुत्तों एवं चूहों के लिये अल्प अवसादक है। चूहों में इससे शारीरिक ताप कम होता है। इसमें वेदनाहर प्रभाव नहीं है यद्यपि यह निद्राजनक औषधों के प्रभाव को बढ़ाता है। सुरासारीय तथा जलीय अंशों में इस प्रकार का कोई गुण नहीं देखा गया।

एस• प्रसाद एवं सी. एल. मल्होत्रा, इंडि. जर. फीजियो. फार्माकोला•, १२, ४, १६६८, १७५-१८१।

Xanthium strumarium Linn. सं०-ब्रह्मदण्डी; हि०-करोनी

७४३. इसके श्वित्र में लाभदायक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। परिपक्व फल की अवस्था में संपूर्ण पौधों को संग्रह कर उसका प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन किया गया। इथेनॉल सत्व में ग्लाइकोसाइड की उपस्थिति पाई गई किन्तु क्षाराभ नहीं मिले। बेंझीन द्वारा निकाले सत्व को ३ मास रेफ्रिजरेटर में रखने पर उसमें चमकीली श्वेत सूइयाँ दिखलाई दीं। इस सत्व के विश्लेषण से ३ घटक प्राप्त हुवे। इनका बाह्य प्रयोग श्वित्र में किया गया। एक मास तक परीक्षा के बाद भी कोई लाभ नहीं देखा गया। इसके रवेदार घटक में मेढक के पृथक्कृत हृदय पर अल्प अवसादक क्रिया देखी गई। संपूर्ण सत्व तथा विशिष्ट घटकों में से किसी में भी श्वित्र (leucoderma) के लिए लाभदायक गुण नहीं मिला।

स्नेहरानी जैन, प्लॅन्टामेडिका, १६, ४, १६६८, ४६७-४६८। देखें–७१७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

परिशिष्ट २.

कुछ अन्य महत्वपूर्ण लेख

७४४. पिट्सबर्ग में पाये जाने वाले ४०० पौधों का प्रारम्भिक जैविकीय परीक्षण (Biological evalutition)।

एन. आर. एफ., एल. के. एच., जी. एच. एस., आर. एन. वी., एम. जे. वाइ. एवं के. एल. ई., लायडिया, २६, २, १९६६, १०१-१२२; ३१, ३, १९६८, २३७-२४८।

७४५. २८५ भारतीय पौधों का प्रारम्भिक जैविकीय परीक्षण भाग १।

एम. एल. धर, एम. एम. धर, बी. एन. धवन, बी. एन. मेहरोत्रा एवं सी. राय, इंडि. जर. एक्स्पे. बायो., ६, ४, १९६८, २३२-२४७।

७४६. मेक्सिको में पाये जाने वाले ९४ पौधों का प्रारम्भिक गुणकर्मीय अध्ययन (Pharmacological assay)।

जे. जिन, लायडिया, २६, ३, १९६६, २५०-२५९।

७४७. कैन्सर में प्रयुक्त वनस्पतियों का सर्वेक्षण।

कैन्सर में प्रयुक्त वनस्पतियों का वानस्पतिक वर्ग क्रम से विशद विवेचन किया गया है। इस सम्बन्ध में प्राप्त साहित्य का उल्लेख है।

जे. एल. हार्टवेल, लायडिया, ३०, ४, १९६७, ३७९-४३६; ३१, २, १९६८, ७१-१७०।

७४८. कैन्सररोधी भारतीय वनस्पतियों की खोज-समीक्षा।

एस. के. चक्रवर्ती एवं बी. मुकर्जी, जर. रिस. इण्डि. मेडि., ३, १, १९६८, ७०-१२२।

७४९. कैन्सररोधी भारतीय वनस्पतियों की खोज।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्राणियों में कृत्रिम कैन्सर उत्पन्न करके कुछ वानस्पतिक द्रव्यों का उस पर अध्ययन किया गया। इनमें से पीला भांगरा (पंचांग), भिण्डी (फल), सदाबहार (पत्र), कनेर (पत्र) एवं हस्ति शुण्डी (पत्र) में कुछ आशादायक परिणाम देखे गये। अन्य द्रव्य जैसे करौंदा (पत्र, छाल), गुंजा (बीज), मुरई (बीज), हरकुच (पंचांग), अयापान (पत्र), घियातरोई (बीज), सरपोंखा (पंचांग), तरोई (बीज), उवुण्टी (पत्र) एवं परवल (मूल) में कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

एस. पाल, एस. के. चक्रवर्ती, ए. बनर्जी एवं बी. मुकर्जी, इण्डि. जर. मेडि. रिस., ५६, ४, १९६८, ४४५-४५५।

७५०. कतिपय भेषजीय पौधों की प्रजननरोधी (Antifertility) क्रिया का अध्ययन।

गुंजा (बीज़), घृतकुमारी (पत्र), अनानास (कंद) एवं जयन्ती (पुष्प) में कुछ गुण पाया गया। गुंजा (पत्र), वासा (पत्र), डिजिटेलिस (हृत्पत्री), कंपिल्लक (बीज), शिग्रु (छाल), पान (पत्र, मूल), पिप्पली (पत्र, मूल) एवं जयन्ती (पत्र) में यह गुण नहीं पाया गया। राजपाठा (भौमिक तना) के सुरासारीय सत्व में प्रजननरोधी किन्तु पेट्रोलियम ईथरीय सत्व में प्रजनन सहायक गुण देखा गया।

बी. भादुरी, सी. आर. घोष, ए. एन. बोस, बी. के. मोझा एवं यू पी. बसु, इंडि. जर. एक्स्पे. बायो., ६, ४, १९६८, २५२-२५३।

७५१. रक्तगत शर्करा को कम करनेवाली भारतीय वनस्पतियाँ।

५६ वनस्पतियों का अध्ययन खरगोशों पर किया गया जिनमें इनके संपूर्ण सत्वों का मुख द्वारा उपयोग किया गया। इनमें से प्याज, हंसराज (Adiantum capillus-veneris Linn.), गूलर (छाल), गुडमार, करेला (कच्चे फल), केला (फूल), कुमुद (मूल), चीड (मूलत्वक्) एवं जामुन (फल, बीज) में आशादायक परिणाम पाये गये।

एस. आर. जैन एवं एस. एन. शर्मा, प्लॅन्टामेडिका, १५, ४, १९६७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

७५२. नई प्राकृतिक विभ्रमजनक औषधियाँ (hallucinogens)।

आर. इ. एस., लायडिया, २९, ४, १९६६, २९३-३०८।

७५३. व्यसन उत्पन्न करनेवाले कुछ पौधों के गुणधर्म तथा उनका रासायनिक संगठन।

ह्वी. ई. टी. जे., लायडिया, २९, ४, १९६६, २७५-२९२।

७५४. लाक्षा का अस्थिभग्न में उपयोग।

प्र. ज. देशपाण्डे, सर्जि. जर., मई १९६६, ८१-८८।

७५५. भारतीय वनस्पतियों के लैटिन नामों में कुछ परिवर्तन I, II, III।

एम. बी. रायजादा, इंडि. फारे., अगस्त १९५८, मई १९६६, जून १९६८।

७५६. प्रो. आर. डी. मिश्रा की परम्परा में जिन वनस्पतियों (करीब १००) का पारिस्थितिकीय (Ecological) अध्ययन हुवा है उनकी सूची।

जर. इंडि. बोटॅ. सोसा., ४६, ४, १९६७, २९५-२९८।

७५७. सोम-होम के नाम से प्रयुक्त कुछ पौधों का विवेचन।

इसमें Sarcostemma, Rheum, Ephedra आदि प्रजाति के पौधों का उल्लेख किया गया है तथा उनके औचित्य के विषय में विवेचन किया गया है।

ह्वी. ई. टी. जे., लायडिया, २९, ४, १९६६, २८४-२८५।

७५८. त्रिफला-वानस्पतिक अध्ययन।

के. एच. कृष्णमूर्ति, सार, २०वीं इंडि. फार्मा. कांग्रे., इण्डि. जर. फार्म., ३०, १२, १९६८, २९७।

७५९. Asclepiadaceae वर्ग की कुछ वनस्पतियों के पत्तों की बाह्यत्वचा की रचना का अध्ययन।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

के. एच. कृष्णमूर्ति एवं आर. सुन्दरम्, जर. इण्डि. बोटॅ. सोसा., ४६, २-३, १९६७, १६०-१६८।

७६०. वनस्पति हारमोन एवं उनके प्रसिद्ध उपयोग।

ए. एस. सिह्वा एवं के. सी. वर्मा, इंडि. ड्रग्स, ५, ३ मार्च १९६८, ६।

७६१. कुमाऊँ में भेषजीय पौधों की खेती।

एन. सी. शाह एवं वी. बी. एल. यादव, इण्डि. ड्रग्स, नवं., १९६७।

७६२. कुछ भारतीय पौधों के गोंद—इनके वानस्पतिक स्त्रोत, रासायनिक संगठन तथा उपयोग।

इसमें धव, सहेजन, जिगन, कुल्लू, सेमल, नीम, शिरीष, महोगनी, बबूल आदि अनेक गोंदों को पहिचानने की परीक्षाएँ दी गई हैं। वास्तविक कतीरा के नाम से बिकनेवाले अन्य गोंदों का उल्लेख है। कुन्दुरु, गुग्गुल, लोहबान आदि के वानस्पतिक स्रोतों का भी विवेचन है।

एम. आइ. एच. फारुकी एवं एल. डी. कपूर, इंडि. फारे., ९४, ९, १९६८, ६६२-६६६।

७६३. स्टेरायड सॅपोजेनिन (Steroid sapogenin) के स्रोत-भारतीय पौधे।

इसमें उन पौधों का विवेचन किया गया है जिनसे स्टेरायड सॅपोजेनिन प्राप्त किया जा सकता है। इस दृष्टि से Dioscorea, Solanum, Agave की प्रजाति (genus) के पौधे तथा Paris polyphylla (बालबच) महत्व के हैं।

आई. सी. कपूर एवं एल. डी. कपूर, इडिं. फारे., ९४, ८, १९६८, ६२०-६३०।

७६४. २०२ भारतीय पौधों का प्रारम्भिक रासायनिक अध्ययन।

पी. सी. मैती, बुले. बोटॅ. सर्वे. इंडि., १०, २, १९६८, १११-१२२।

७६५. कुछ अप्रसिद्ध खाद्य पौधों के पोषक तत्वों का अध्ययन भाग १।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इसमें हेलंच, मंडूकपर्णी, शिग्रु पुष्प, जलकुम्भी पुष्प, कुमुद काण्ड, पनस बीज एवं ताड बीज (अंकुरित) के पोषक तत्वों की मात्राओं का उल्लेख है।

एस. आर. सेनगुप्त एवं बी. पाल, साइन्स, कल्चर, ३४, ८, १९६८, ३७५-३७६।

७६६. धतूरा के विभिन्न ९ भेदों के विभिन्न अंगों में संपूर्ण क्षाराभों की उपस्थिति का अध्ययन।

वी. एस. गुप्त एवं आर. के. खन्ना, करेंट साइन्स, ३५, १२, १९६६, ३११-३१२।

७६७. आयुर्वेदीय क्षारों का रासायनिक अध्ययन।

ए. जे. बक्षी एवं एस. आर. बसवडा, सार, २०वीं इंडि. फार्मा. कांग्रेस, इंडि, जर. फार्मे., ३०, १२, १९६८, २९७।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

परिशिष्ट ३.

गुणकर्मादि के अनुसार वर्गीकृत सारांश

कोलीन धर्मी (Cholinergics) ४०, ८७, २१०, २२९, २६६, ३०१, ३२१, ३६८, ५०४, ५७१ ।

कोलीन धर्मविरोधी (Anticholinergics) २०३, ४५७ ।

आक्षेपरोधी (Anticonvulsant) ७२ ।

आक्षेपकारी (Convulsant) ५२३ ।

उद्दीपक (Stimulants) १८१, ३१८, ३३३, ४५९ ।

विभ्रमजनक (Hallucinogen) ७५२ ।

सौमनस्यजनन (Tranquillisers) ७२, ७३, ९७, ९८, १८१, ४९५, ६३६ ।

शामक (Sedatives) ७३, ९९, ३२६, ३५२, ४५९, ६१६, ७१४, ७४२ ।

निद्रा जनन (Hypnotics) ५७१, ६१६, ७१४, ७४२ ।

व्यसनोत्पादक (Addictive) ७५३ ।

मानस भेषज गुण विज्ञान (Psychopharmacology) १९, ९९, ३१८, ३२६, ३५२, ४१८, ४५७, ५६७, ६१६, ७१४ ।

अनैच्छिक पेशी शिथिलकर (Smooth muscle relaxants) १३, ६१, २१०, २३५, २३६, २६६, २६९, ३३४, ३६८, ४४६, ४७४, ५०१, ५०९, ५१७, ५३०, ५८७, ५९१, ५९७, ६३१, ६६३ ।

अनैच्छिक पेशी संकोचक (Smooth muscle contractors) ८४, १५८, ३०१, ३२१, ४०७, ४९२, ६७९ ।

स्थानिक वेदनाहर (Local anaesthetic) २३६ ।

श्वसन उद्दीपक (Respiratory Stimulants) १३, ६१, ५३० ।

श्वसन अवसादक (R. depressant) ६८७ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्वसनी विस्फारक (Bronchial dilators) ३६१, ५८७, ६२६ ।

श्वसनी संकोचक (Bronchial contractor) ६२५ ।

हृदय (Heart) १३, ३०, ८४, १२४, १५४, १५५, १८८, २०२, २०३, २२५, ३५२, ३६१, ३७०, ४४६, ४५३, ४६३, ४७४, ४९२, ५०६, ५०७, ५०८, ५३०, ५५२, ५९०, ५९७, ६२२, ६३१, ६३९, ६५३, ६५९, ६७९, ६८७, ६८९, ७२५, ७४३ ।

रक्तदाब ह्रासक (Hypotensives) १५८, २०२, २१०, २२५, २३५, ३०१, ३३४, ३५२, ३६१, ३६८, ३७०, ४४६, ४५३, ४५८, ४७४, ५०९, ५१७, ५७१, ५८७, ६२५, ६३१, ६३६, ६८७ ।

रक्तदाब वर्धक (Hypertensives) १३, ६१, ८४, ३२१ ।

रक्तवाहिका (Blood vessel) संकोचक ५३० ।

रक्तवाहिका विस्फारक ६३१ ।

स्कन्दक (Coagulants) ६, २१, ५० ।

स्कन्दन रोधी (Anticoagulant) २२४ ।

गर्भाशय बलदायक (Uterotonics) १, ५८, ६६, ८८, १२३, ४९०, ६७८ ।

गर्भाशय उद्वेष्ट रोधी (Uterine antispasmodics) १३, ७७, ८७, २०३, ४४६, ५०९, ६४२, ६६३ ।

गर्भाशय संकोचक (Uterine contractors) ८४, १२४, २१०, २२९, ४९२, ५०४, ५३७, ५९१, ६७९ ।

प्रजननरोधी (Antifertility) ५, ७९, १२९, १३४, १४९, १८६, ३२७, ३२८, ४७८, ५४०, ६५०, ७४५ ।

स्तन्यजन्य (Galactagogues) ८६, ८७, ८८, २४४, ४७१ ।

मूत्र संग्रहणीय (Anti diuretics) १३, ५९९ ।

मूत्र विरेचनीय (Diuretics) ११३, १२२, २२०, २८१, ३७६, ५८७, ६७१, ६७३ ।

अश्मरीघ्न (Antilithic) ६६१ ।

वृष्य (Aphrodisiac) ३३५ ।

शुक्रह्रासक (Anti-spermatogenetics) ४, ७०३ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मधुमेह रोधी (Antidiabetics) २३, ६३, ११५, १५६, १६०, १६१, १६२, १६३, २१२, २८३, ३१२, ३२६, ३३३, ३४७, ४२१, ४४३, ४४४, ४४५, ४५१, ४५३, ५४६, ५५१, ५६६, ६६२, ६६५, ७५१।

ईस्ट्रोजन विरोधी (Antioestrogenics) १३०, ३२७।

कोलेस्ट्रॉल रोधी (Anticholesteremics) १५२, १६४, २२३, २२४, २८३, ३४७, ४५१।

प्रारंभिक जैविकीय परीक्षण (Biological evaluation) ७४४-७४६।

प्रतिसूक्ष्मजीवी (Antimicrobials) ३, ३५, ५१, ६१, ७८, ६५, १७०, २१८, २२६, ३४२, ३७७, ४२६, ४७०, ५०५, ५१८, ५७६, ६४८, ६५६, ६६४, ७३६।

कवकरोधी (Antiungals) ३, ३५, ७८, ३७३, ३७७।

विषाणुरोधी (Antiviral) ३५७।

प्रोटोजुआरोधी (Antiprotozoals) ३३७, ३७१, ३७२।

कृमिघ्न (Anthelmintics) ४४, १३१, १३२, २४३, २६१, २६२, ४१०, ५०६, ५२१, ५४५, ५६४, ५६८।

मत्स्यविनाशी (Piscicidals) १४५, ५६६।

रसायन (Alteratives) १८३, २६६, ३५५, ५१४, ५१६, ५६८।

बृहंणीय (Roborant) २६।

विरेचक (Purgatives) २०३, ३४३, ५०१, ६५४।

यकृत् (Liver) २८६, ४०४, ५००, ५०२, ६५२।

शोथहर (Antiinflammatory) ३६, ११८, १३७, २५६, ४८७, ४८८, ४८६, ५३२, ५३३, ६०२, ६६०।

हिस्टामीनरोधी (Antihistaminics) २०३, २१४, ३६१, ४०७, ४५७, ५६७, ६२६, ६६३, ६७७।

पोषक तत्व (Nutritional substances) ७६५।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विषालुता (Toxicity) २६८, ३४०, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३ ३९४, ३९५, ४९५, ५९५, ६६० ।

कॅन्सर (Cancer) ७, ६७, ७०, ११०, २४२, ७४७-७४९ ।

कुष्ठ (Leprosy) ८, १२, १४, ४६, ५९८ ।

श्वित्र (Leucoderma) ५४४, ५४७, ७४३ ।

राजयक्ष्मा (Tuberculosis) २५, १३८, ३१०, ४७७, ४८० ।

कास (Cough) ६२३ ।

श्वास (Asthma) ६७७ ।

अतिसार (Diarrhoea) १०७, १०९, ५३१, ५५० ।

विसूचिका (Cholera) १०६, १०७ ।

आमवात (Rheumatism) २२२, २५३, ७१२, ७१३ ।

संधिवात (Arthritis) २२२, २५४, २५५, २५६, ५९६, ६०६, ६१०, ६९०, ७०४, ७०५, ७०६, ७१२ ।

गृध्रंसी (Sciatica) ५६८, ६४१ ।

श्लीपद (Filaria) ६३८ ।

चर्मरोग (Skin diseases) १७३, ५४७, ६५६ ।

व्रण (Ulcers) ३९२, ३८१, ६२९, ६९६ ।

अस्थिभग्न (Fractures) २००, ६८०, ६८१, ७३६, ७५४ ।

नेत्ररोग (Eye disease) ७५ ।

चेचक (Small pox) ३००, ४५४।

शस्त्रकर्म पूर्व (Pre-operative) २३१ ।

द्रव्य परिचय (Pharmacognosy) १५, २२, ३१, ३२, ६०, ७५, १११, ११२, १२०, १२१, १२८, १४२, १५६, १६५, १६७, १६९, १७१, १७३, १७४, १७५, १७६, १९५, २१२, २१४, २१६, २२७, २२८, २३०, २४९, २६२, २७१, २७२, २७६, २७७, २८८, ३०५, ३०७, ३१५, ३२२, ३२५, ३३०, ३३२, ३३६, ३४६, ३५९, ३६३, ३६६, ३७८, ३७९, ३८६, ३८७, ३९६, ३९९, ४००, ४१७, ४१९, ४२९, ४३३, ४३४, ४३८, ४७२,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४७३, ४७५, ४७६, ४७९, ४८३, ४९१, ४९७, ४९८, ४९९, ५३९, ५४३, ५४६, ५६५, ५७२, ५७३, ५८९,६००, ६०१, ६०४, ६०५, ६१९, ६२०, ६२७, ६३७, ६४३, ६४४, ६५१, ६६९, ६७४, ६८४, ६९२, ७००, ७०९, ७११, ७२६, ७४०, ७५५, ७५७, ७५८, ७५९, ७६२ ।

पारिस्थितिकी (Ecology) ३४, ७५, ६७२, ६८३, ७१७, ७५६ ।

कृषि (Cultivation) १५०, १५७, २०९, २३२, २४८, २६३, २६४, २६५, २७२, ३५३, ४१३, ४१६, ४८५, ५२५, ५२९, ५५९, ५६०, ६१५, ७६१ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सन्दर्भ पत्रिकाओं की उनके सङ्केतों सहित सूची

अँण्टि.—ॲण्टिसेप्टिक, मद्रास ।

आयु. पत्रि.—आयुर्वेद पत्रिका, नासिक ।

आयु. विका.—आयुर्वेद विकास, कलकत्ता ।

आयुर्वेदा.—आयुर्वेदालोक, जामनगर ।

इण्डि. जर. एक्सपे. बायो.—इण्डियन जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेन्टल बायोलॉजी, दिल्ली ।

इण्डि. जर. केमि.—इण्डियन जर्नल ऑफ केमिस्ट्री, नई दिल्ली ।

इण्डि. जर. फार्मे.—इण्डियन जर्नल ऑफ फार्मेसी, बम्बई ।

इण्डि. जर. फीजियो. फार्माकोला.—इण्डियन जर्नल ऑफ फीजियोलॉजी अँण्ड फार्माकोलाजी, नई दिल्ली ।

इण्डि. जर. बायोके.—इण्डियन जर्नल ऑफ बायोकेमिस्ट्री, नई दिल्ली ।

इण्डि. जर. मेडि. रिस.—दि इण्डियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च, नई दिल्ली ।

इण्डि. जर. मेडि. साइ.—इण्डियन जर्नल ऑफ मेडिकल साइन्सेस्, बम्बई ।

इण्डि. ड्रग्स—इण्डियन ड्रग्स, बम्बई ।

इण्डि. फारे.—इण्डियन फारेस्टर, देहरादून ।

इण्डि. मेडि. गजे.—इण्डियन मेडिकल गजेट, कलकत्ता ।

एक्सपेरि.—एक्सपेरिएन्शिया, स्विट्झरलँण्ड । १९६६ में केवल १, २, १० अंक ।

करें. मेडि. प्रॅक्टि.—करेंट मेडिकल प्रॅक्टिस, बम्बई ।

करें. साइ.—करेंट साइन्स, बंगलोर ।

जर. असो. फिजि.—जर्नल ऑफ असोसिएशन ऑफ फिजिशियन्स ऑफ इण्डिया, बम्बई ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जर. इण्डि. एके. फॉरे. साइ.—जर्नल ऑफ दि इण्डियन एकेडेमी ऑफ फॉरेन्सिक साइन्सेस, कलकत्ता । १९६८ केवल अंक २।

जर. इण्डि. केमि. सोसा.—जर्नल ऑफ दि इंडियन केमिकल सोसाइटी, कलकत्ता ।

जर. इंडि. बोटॅ. सोसा.—जर्नल ऑफ इंडियन बोटॅनिकल सोसाइटी, मद्रास, १९६८, अंक २ तक ।

जर. इंडि. मेडि. एसो.—जर्नल ऑफ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, कलकत्ता ।

जर. केमि. सोसा. इंग्लै.—जर्नल ऑफ केमिकल सोसाइटी (सी) ऑर्गॅनिक, इंग्लैण्ड । १९६६-नहीं, १९६७-केवल १-१२ अंक ।

जर. फार्मास्यू. साइ.—जर्नल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइन्सेस, अमेरिका ।

जर. फार्मे. फार्माको.—जर्नल ऑफ फार्मेसी अॅण्ड फार्माकोलॉजी लंडन ।

जर. रिस. इंडि. मेडि.—जर्नल ऑफ रिसर्च इन इंडियन मेडिसिन, वाराणसी ।

जर. साइ. रिस., बी. एच. यू.—जर्नल ऑफ साइन्टिफ रिसर्च, बी. एच. यू. वाराणसी । भाग XVII, अंक १ तक ।

टेट्रा.—टेट्राहेड्रॉन, ऑक्सफोर्ड । १९६६ में पृ. १-११६७ तक, १९६७ में पृ. १-४८१६ तक ।

टेट्रा. लेट.—टेट्राहेड्रॉन लेटर्स, आक्सफोर्ड । १९६८ में पृ. १-२९०९ तक ।

नागा.—नागार्जुन, कलकत्ता ।

प्रोसि. इंडि. एकेडे. साइ. बी—प्रोसिडिंग्स आफ दि इंडियन एकेडेमी आफ साइन्सेस, बी, बंगलोर । केवल १९६८ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रोसि. नॅश. एकेडे. साइ.—प्रोसिडिंग्स ग्राफ दि नॅशनल एकेडेमी ग्राफ साइन्सेस, बी, ग्रलाहाबाद ।

प्लॅन्टा मेडि.—प्लॅन्टा मेडिका, स्ट्यूटगार्ट । १९६६ नहीं है ।

बुले. बोटॅ. सर्वे—बुलेटिन, बोटॅनिकल सर्वे ग्राफ इंडिया, कलकत्ता । १९६८, अंक २ तक ।

लाय.—लायडिया, ग्रोहियो ।

सचि. ग्रायु.—सचित्र ग्रायुर्वेद, कलकत्ता ।

साइ. कल्च.—साइंस अॅण्ड कल्चर, कलकत्ता ।

ह्यू मॅ.—ह्यू मेटिस्म, दिल्ली ।

संकेत

अं०—अंग्रेजी
गु०—गुजराती
नेपा०—नेपाली
पं०—पंजाबी
बं०—बंगला
बंब०—बंबई
म०—मराठी
मल०—मलयाली
यू०—यूनानी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वर्णानुक्रम से द्रव्यों के भारतीय नाम

अ

अंको (ट) ल–सं. १०, १२२
अंगुलिया थूहर–हिं. ७५
अंजन –म. ८२
अखरोट–हिं. १६७
अगस्त्य–सं. १३८
अगिया–हिं. १४
अग्निमंथलघु–सं. ४९
अजमोदा–सं. १७
अजवाइन–हिं. ३६, १५२
अतिविषा–सं. ५
अनानास–हिं. १४, १७१
अन्त्रमूल–सं. १५४
अपराजिता–सं. ५१
अपामार्ग–सं. ३
अमरूद–हिं. १२४
अम्लिका–सं. १४८
अयापान–हिं. १७१
अरार–हिं. ३
अरि–सं. ३
अरिष्टक–सं. १३३
अर्क–सं. ३४
अर्गट–अं. ४९
अश्वगन्धा–सं. १६१, १६९

आ

आकाशबेल–हिं. ५८
आच्छिक–सं. १०२
आदित्यभक्ता–सं. ९२
आम–हिं. ९४
आमलकी–सं. ६९
आमाभाजी–हिं. ३
आरग्वध–सं. ३९, १६४
आस्फोता–सं. १५७

इ

इन्द्रवारुणी–सं. ४७
इम्ब्यूरल–ता. ११०
इसबगोल–हिं. १२१, १६७

ई

ईश्वरमूल–हिं. १८

उ

उचुएटी–बंबई ९, १७१
उत्कण्टक–सं. १६५
उदसलीव–हिं. ११२
उदुम्बर–सं. ७६, ७७
उलट कंबल–हिं. १, ११२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उस्तुखद्दूस—हिं. ६१

ऊ

ऊँटकटेरा-हिं. १६५

ऋ

ऋद्धि—सं. ८२

ऋषभक—सं. ९९

ए

एरण्ड—सं. १२९

एला सूक्ष्म—सं. ८४

क

कंचन—सं. १५२

कंटकारी—सं. १४२

कंटकी करंज—सं. ३२

कंपिल्लक—सं. ९४, १६६, १७१

कचनार—हिं. २४

कट्टुका—सं. ११४

कतीरा—हिं. १७३

कदम्ब भेद—सं. १००

कदली—सं. १०३

कद्दू—हिं. ५७

कनेर—हिं. १७१

कपिकच्छु—सं. १०३

कबाबचीनी—हिं. ११७, १६७

कमल—सं. १०६

करम—हिं. १००, १६६

करमर्द—सं. ३५

करेला—हिं. ४९, ७३, १०१, १७१

करोनी—हिं. १६९

करौंदा—हिं. १७१

कर्णस्फोटा—सं ३५

कसीड—म. ४०

काकजंघा—हिं. ११३

काकमाची—सं. १४१

काकरासिंगी भेद(ह्रस)—हिं १०५, १२९

काकोली—सं. ९१, १०८, १३०

कारवेल्लक—सं. ४९, ७३, १०१, १७१

कार्पास—सं. १२३

कालमेघ—हिं. १६

कालीयक—सं. ५३

कासमर्द—सं. ४०

कीर्नी—म. १२२

कुंकुम—सं. ५४

कुचला—हिं. १४६

कुटजश्वेत—सं. १६३

कुन्दुरु—हिं. १७३

कुप्पी—सं. ३

कुमुद—सं. १७१, १७४

कुरलिंगा—नेपा. १२९

कुरैया—हिं. ८५

कुलंजन—हिं. १३, ११८

कुलत्थ—सं. ६७

कुल्फा—हिं. १२४

कुल्लू—हिं. १७३

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कुष्ठ–सं. १३४
कुसुम्भ–सं. ३५, ४५
कूष्मांड–सं. ५३
कृष्ण मोक्षक–सं. ६८
केना–हिं. ५१
केला–हिं. १७१
कैमा–हिं. १००, १६६
कोकिलाक्ष–सं. २२, ८६
कोदो–हिं. ११३

ख

खजूर–हिं. ११४
खदिर–सं. २
खर्क–पं. ४२
खस–हिं. १५९
खाकसी–हिं. १४०
खुरासानी अजवायन–हिं. ८७
खूबकलाँ–हिं. १४०
खेसारी–हिं. ८९

ग

गंगेरन–हिं. ८१
गंदी बूटी–हिं. १००
गंध प्रसारणी–सं. १११
गंभारि–सं. ८१
गॅम्बोज–अं. ७९
गांगेरुकी–सं. ८१
गाँजा–हिं. ३४
गाजर–हिं. ६२
गावजवाँ–हिं. ३१, ६७
गिला–हिं. ७१
गुंजा–सं. १, ५३, १७१
गुग्गुलु–सं. ५१, १७३
गुडमार–हिं. ८२, १७१
गुडूची–सं. १५१
गुले गावजवाँ–हिं. १५, ६७, ११०
गूलर–हिं. १७१
गृंजनक–सं. १३४
गोक्षुरु–सं. २९, १५३
गोडार–हिं. ९९.
गौंरख–हिं. ५९

घ

घगोरी–बंव. ८९
घियातरोई–हिं. १७१
घृतकुमारी–सं. १७१

च

चंरुगली–पं. ३०
चक्रमर्द–सं. ३९
चणक–सं. ४५
चन्द्रशूर–सं. ९१
चन्द्रुस–म. १५८
चिचोडा जंगली–हिं. १५४
चित्रक–सं. १२३
चित्रेलम–तामिल ८४

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चिनियाबदाम–हिं. ४५

चिया–हिं. ७१

चीड–हिं. १७१

छ

छोटा गोखरू–हिं. १५३

ज

ज़ंगली चिचडा–हिं. १५४

जटामांसी–सं. ५३, १०४, १२६,१३५

जद्वार–हिं. ६३

जपा–सं. ८४

जम्बू–सं. ७३

जयन्ती–सं. १३८, १७१

जयपाल–सं. ५६

जर्दालू–हिं. १६७

जलकुम्भी–सं. १७४

जलधनियाँ–हिं. १२७

जव–हिं. ८६

जाती–सं. ८८

जातीफल–सं. १०४

जामुन–हिं. १०२, १७१

जिंगन–हिं. १७३

जिमशाक–हिं. १०१

जीरा–हिं. ५७

जीवक–सं. ९९

जीवन्ती–सं. ९१

जीवपुत्रक–सं. १२६

जूही–हिं. ८८

जोंखामारी–हिं. १४, ११२

ज्योतिष्मती–सं. ४२

झ

झरस–म. १०१

झावुक–सं. १४८

ट

टमाटर–हिं. ९३

टेकार–हिं. ४९

ड

डिकामाली–हिं. ७९

डिजिटेलिस–ग्रं. १७१

त

तगर–सं. १५६, १६८

तगर भेद–हिं. १५६

तमाल–सं. ७८

तरोई–हिं. १७१

ताड–सं. १७४

ताम्बूल–सं. ११५

तालीशपत्र-सं. १४८

तितली–हिं. ७४

तिधारा सेहुण्ड–हिं. ७४

तिनिश–सं. १११

तिल–सं. १०७, ११७, १३८

तुख़्मे गाँवजवाँ–हिं. १५

तुलसी–सं. १०९

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तुलसी (प्रजाति)—सं. १०८
तूद—सं. १०३
तून—हिं. ४१
तेन्दू—हिं. ६६

थ

थनैला—हिं. ८०
थूहर भेद—हिं. ७४

द

दक्खनी बबूल—हिं. १२०
दन्ती—सं. ७३
दपोली—बंब. ८२
दमनक—सं. २०
दादमारी—हिं. १४
दारुहरिद्रा—सं. २५, २६
दुकू—यू. ११४
दूर्वा—सं. ५८
देवकांडर—हिं. १२७
देवदारं—मल. १५८
देवदार—हिं. ४१
देवदारु—दक्षिण ७२, १६५
देवदाली—सं. ६२
दौना—पं. २०

ध

धतूरा—हिं ६२, १७४
धव—सं. १७३
धुस्तूर—सं. ६१

न

नकछिकनी—हिं. ४३
नागकुडा—म. १४७
नागकेशर—सं. ४५
नागकेशर—हिं. ६८, १०८
नागकेशर—मलाबारीय ६५
नागकेशरम्—नाट्टु ६५
नागदन्ती—सं. ७३
नागरमोथा—हिं. ५६
नागौरी असगंध—हिं. १६१
नाय—हिं. ७०
नारंगी—हिं. ४८
नारिकेल—सं. ५१
निमुरडी—म. २७
निम्ब—सं. २२, ६७, १७३
निर्गुण्डी—सं. १२, १६०
निर्विषी—सं. ६३
निशोथ—हिं. ८७
नीम—हिं. २२, ६७, १७३
नीलकट्टे—हिं. ८३

प

पटोल—सं. १५४
पट्टिकालोध्र—सं. १४७
पनस—सं. २०, १७४
पमनके—पं. ३०
परवल—हिं. १७१
पलांडु—सं. १३४

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पलाश–सं. ३०
पाचकुरमूल–बं. १२४
पाटला–सं. १४६, १६८
पाठा–सं. ४६
पाठा भेद–सं. १४४, १४५
पान–हिं. १७१
पान लता–बं. ६४
पारस पीपल–हिं. १५०
पारिजात–सं. १०८
पारिभद्र–सं. १४९
पाषाण भेद–सं. ८, ९, १४, २६, २७, १०८, १३०
पित्तपापडा–हिं. ५३, ७८, ११४
पिप्पल–सं. ७७
पिप्पली–सं. १३, ७०, ११७, ११९, १७१
पिसा–बंबई ६
पीतभृंगराज–सं. ६८
पीला कनेर–हिं. १५०
पीला भांगरा–हिं. १७१
पीलु–सं. १३२
पुदीना–हिं. ९७
पुनर्नवा–सं. २८, ४३, ११३, १५३
पृष्णिपर्णी–सं. ११२, १५५
पृष्णिपर्णी भेद–सं. १५५
प्याज–हिं. १७१
प्रतिविषा–सं. ५

फ

फरहद–हिं. ७२
फलवारा–हिं. २४

ब

बकुल–सं. १००
बडागोखरू–हिं. ११३
बडासाल–हिं. १५८
बथुवा–हिं. ४४
बदरंग–हिं. १६३
बदाम–हिं. १६७
बद्रंग बोथा–पं. १०७
बनअजवाईन–हिं. १३९
बनकदली–हिं. ७०
बननींबू–हिं. ८०
बबुई तुलसी–हिं. १०९
बबूल–हिं. १७३
बला–सं. १११, १२२
बलाभेद–सं. १३९
बाकुची–सं. १२४
बादियाण–हिं. ८७
बाफली–बंब. ११४
बाबूना–हिं. ९६
बालबच–हिं. १७३
बावची–गु. १०९
बिभीतक–सं. १४९
बिरंजसिफ–हिं. ३
बिल्ली लोटन–पं. १०७

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बिल्लू–म. ४४
विल्व–सं. ७
बीजक–सं. १२५
वृहती–सं. १४१
वृहती भेद–सं. १४२
वृहत्पीलु–सं. १३२
वेली–हिं. ६२
वैकल–हिं. ८२
वैंगन–हिं. १४१
ब्रमजी–पं. ४२
ब्रह्मदण्डी–सं. १६३, १६६
ब्राह्मी (उ. प्र.)–हिं. ४२
ब्राह्मी वंगीय–सं. २३

भ

भड़भाड़–हिं. १८
भल्लातक–सं. १३५
भाँग–हिं. ३४
भाँट–हिं. ४६, ८०
भारंगी–सं. ४६, ५०, ८०
भारतीय सेनेगा–हिं. १५
भिण्डी–हिं. १७१
भिर्र–हिं. ४४
भिस्सटा–सं. १००
भूर्जपत्र–सं. २७
भृंगराज पीत–सं. १६१
भृङ्गराज–सं. ६७

म

मंगरैल–हिं. ५७, १०७
मंडूकपर्णी–सं. १७४
मकरा– हिं. १५३
मटर–हिं. १२०
मण्डूकपर्णी–सं. ४२
मदनफल–सं. १२७
मदयन्तिका (मदयन्ती)–सं. ८६
मयूरशिखा–हिं. ६
मरिच–सं. ११६
मरुग्रा–हिं. ६४
मरोडफली–हिं. ८३
मसी–हिं. ११३
महानिम्ब–सं. ६६
महाभरीबच–हिं. १६३
महामेदा–सं. १२३
महारुख–हिं. ६
महोगनी–हिं. १७३
मांसरोहिणी–सं. १४३
मामिज्वा–हिं. ७०
मालकांगुनी–हिं. ४२
मीठा तेलिया–हिं. ४
मीठानीम–हिं. १०३
मुक्तवर्चा–सं. ३
मुरई–हिं. १७१
मूर्वभेद–हिं. ६५
मूसाकानी भेद–हिं. ७५

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मेथिका—सं. १५४
मेदा—सं. १२३
मेंहदी—हिं. ८६
मोगरा—हिं. ८६
मोथा—हिं. ५६

य

यवानी—सं. १५२
यष्टीमधु—सं. ८१
यूकॅलिप्टस्—अं. १०६
यूथिका—सं. ८८

र

रतनजोत—हिं. १६
रसोन—सं. ५३, १२२
रागी—हिं. ६८
राजपाठा—सं. १७१
रास्ना—सं. १२२
रास्ना वंगीय—सं. १५७
रेणुक—सं. ११५
रेवन्द चीनी—हिं. १२६
रोजमरी—हिं. ३
रोहडा—हिं. १७
रोहितक—सं. १७, ७२, १४६
रौहिष—सं. ५८

ल

लंजई—हिं. ४६
लजवंती—हिं. १००
लवंगफल—बं. ६३
लाक्षा—सं. १७२
लाखन—हिं. ६५
लिसोडा—हिं. ५३
लोध्रभेद—सं. १४७
लोहबान—हिं. १७३

व

वंश—सं. १२३
वचा—सं. ५
वट—सं. ७६, ७७
वत्सनाभ—सं. ४
वनपलाण्डु—सं. १३४
वरुण—हिं. ५३
वाकेरी—म. ३२
वासा—सं. ६, १७१
विडङ्ग—सं. ६६
विधारा—सं. ८७
विलायती मेंहदी—हिं. १०४
विषतेन्दू—हिं. ६६
वृद्धि—सं. ८२

श

शंखपुष्पी—सं. ५३, १०५
शकरकंद—हिं. ६५
शतावरी—सं. २१
शरपुंखा—सं. १४६
शरीफा—हिं. १६, ११२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शल्लकी–सं. २९
शहतरा–हिं. ५३, ७८
शाखोटक–सं. १४६
शालपर्णी–सं. ६४, १५६, १६५
शाल्मली–सं. २९
शिंशप–सं ६१
शिग्रु–सं. ५४, १७१, १७४
शिरीष–सं. ११, १७३
शिरीष भेद–हिं. ११
शिलाजीत–हिं ७६
शीशम–हिं. १६७

स

संजीवनी–सं. १३४
सकमुनिया–हिं. ८७
सदाबहार–हिं ४१, १५९, १७१
सनाय–हिं. ३८
सन्तरा–हिं. ४८
सप्तपर्ण–सं. १३
सप्तरंगी–हिं. ३७, १३१
सप्तला–सं. ७५
सफेद शिरीष–हिं. १२
सबजा–हिं. १०९
सरपोंखा–हिं. १७१
सरल–सं. ११५
सरसों–हिं. ४५
सर्पगन्धा–हिं १२८
सर्पगन्धाभेद–हिं. १२७
सर्षप–सं. ३०
सहदेवी–सं. १५९
सहेजन–हिं. ५४, १०२, १७३
सातला–हिं. ७५
सार्सापरिला भेद देशी–हिं. १४०
सालब–हिं. १११
सालममिश्री–हिं. १२३
सिरुनगप्पु–तमिल ६५
सुद्दाब–हिं. १३१, १६७
सुनिषण्णक–सं. ९५, ९६
सुरंजान–हिं. ५१
सुरू–हिं ५७
सुलतान चंपा–हिं. ३३
सूक्ष्मएला–सं. ८४
सूर्यमुखी–हिं. ८३
सेमल–हिं. ११२, १७३
सेव–हिं. १६६
सोम–सं. १७२
स्याह जीरा–हिं. ३६
स्वर्णक्षीरी–सं. १८
स्वर्णचम्पक–सं. ९८

ह

हंसराज–हिं. १७१
हड़जोड़–हिं. ४६
हरकुच–हिं. १७१

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हरदी–हिं. ५८
हराचंपा–हिं. १९
हरीतकी–सं. १४९
हस्तिदन्ती–सं. ७३
हस्तिशुण्डी–सं. ८३, १७१
हाफरमाली–बं. १५७
हिंगु–सं. ७६
हिज्जल–हिं. २३
हिलमोचिका–सं. ७०
हृत्पत्री–सं. ६४, १७१
हेलंच–बं. १७४
होम–पारसी १७२

क्ष

क्षार–सं. १७४
क्षीरकाकोली–सं. ७७, ९१, १३०
क्षुद्रएला–सं. ८४

त्र

त्रिफला–सं. १७२
त्रिवृत्–सं. ८७

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.........
Book No......... 002988
Acc No..... ....

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

GLOSSARY OF VEGETABLE DRUGS IN BṚHATTRAYĪ

By

Th. Balwant Singh

This is a unique book written by an eminent botanist who has devoted his whole life in the identification of Ayurvedic vegetable drugs. It includes the references of all the vegetable drugs mentioned in the Bṛhattrayī—i. e. Caraka Saṁhitā, Suśruta Saṁhitā and Aṣṭāṅgahṛdaya Saṁhitā. Appropriate Latin names of undisputed drugs have been incorporated while others have been critically discussed for their correct botanical sources. It will be a boon for research workers in Indian Medicinal Plants and Ayurvedic system of Medicine.

Under Publication.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मौलिक संस्करण !!

नवीन वैज्ञानिक !

भावप्रकाशनिघण्टुः

(Ayurvedic Materia Medica)

विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—डा० कृष्णचन्द्र चुनेकर ए० एम० एस०

सम्पादक—डा० गङ्गासहाय पाण्डेय ए० एम० एस०

आयुर्वेद जगत् के अत्यन्त आग्रह पर यह नवीन संस्करण प्रकाशित किया गया है। प्रस्तुत निघण्टु में अद्यावधि प्रकाशित सभी सामग्री का भली प्रकार अध्ययन कर उपलब्ध वनौषधियों का प्रत्यक्ष परिचय करके, प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करते हुए विस्तृत परिचय दिया गया है। एक हजार से अधिक पृष्ठों का यह नवीन संस्करण—एक प्रकार से निघण्टु विषयक एक स्वतन्त्र मौलिक ग्रन्थ ही बन गया है। इसमें प्रत्येक वनौषधि की सभी उपजातियों एवं विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित तत्सम द्रव्यों का विस्तृत परिचय, उत्पत्तिस्थान, प्रयोज्य अङ्ग, मात्रा, नवीन अनुसंधानों द्वारा आविष्कृत रासायनिक विश्लेषण, गुण धर्म एवं आमयिक प्रयोगों का व्यापक वर्णन किया गया है। वनौषधि का पूर्ण जीवनवृत्त, बीज से लेकर मूल, पत्र, काण्ड, पुष्प, फल, निर्यास आदि का स्पष्ट वर्णन वस्तु को प्रत्यक्ष-सा कर देता है। पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ आयुर्वेदीय संदिग्ध द्रव्यों (Controversial drugs) के अध्ययन के लिये इससे बढ़कर और कोई पुस्तक नहीं है। मूल निघण्टु में जो संस्कृत पर्याय आये हैं उनकी अकारादिक्रम से सूची सर्वप्रथम इस संस्करण में प्रकाशित हुई है। इस सूची से तथा भारतीय नामों एवं लेटिन तथा अंग्रेजी नामों की विस्तृत सूचियों (Indices) से किसी भी वनस्पति को खोजना बहुत ही सरल हो गया है।

आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों को प्रायः निघण्टुभाग की ही विशेष आवश्यकता पड़ती है, इस दृष्टि से कालेजों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर इस निघण्टुभाग की छात्रोपयोगी विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। यह संस्करण छात्रों, अध्यापकों तथा वनस्पति अनुसन्धानकर्ताओं के लिए समान रूप से उपयोगी है।

१२-००

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection